हास्यरसधारा—६ *Read & Laugh*

दुमदार आदमी

एकाङ्कीय प्रहसनोंका संग्रह

लेखक

श्री जी० पी० श्रीवास्तव

बी० ए०, एल्० एल्० बी०

प्रकाशक

हिन्दी पुस्तक एजेन्सी

ज्ञानवापी बनारस।

प्रकाशक

हिन्दी पुस्तक एजेन्सी

शाखाएँ—कलकत्ता, पटना।

छठीं बार

१९५१

मूल्य १)

मुद्रक

कृष्ण गोपाल केडिया,

वणिक प्रेस,

साक्षिविनायक, बनारस।

विषय-सूची

प्रहसन	पृष्ठ

दुमदार आदमी

सन् १९१७ में गोंडेमें कुछ शिक्षित लोगोंने एक नाटक खेलनेका विचार किया। उस मण्डलीमें कुछ नये और नौजवान वकला साहबान भी शरीक हुए। यह देखकर पब्लिक एकदम चौंक उठी और हर तरफसे मण्डलीके एक्टरोंपर फटकारें पड़ने लगीं। उसी समय यह प्रहसन लिखा गया और २९ अक्टूबर सन् १९१७ को गोंडेमें पहिले-पहल खेला गया। दर्शकगण ऐक्टरोंकी केवल हँसी उड़ानेके लिये हज़ारोंकी तादादमें फट पड़े थे, मगर पर्दा उठते ही स्टेजपर इस प्रहसनमें अपना ही तमाशा देखकर चकराये और शर्मसे कट गये। फिर तो 'थू! थू!' के बदले हर मुंहसे 'वाह! वाह!' की ध्वनि गूँज उठी। उसके बाद यह लखनऊ, इलाहाबाद आदि कई शहरोंमें खेला गया और हर जगह इसको बेहिसाब सफलता प्राप्त हुई। यह सन् १९१८ में "कैनिंग-कालिज मेगजीन" और काशीकी "गल्पमाला" में प्रकाशित हुआ था।

प्रहसनके पात्र और पात्री

पात्र—

१—निपोड़शंख	एक वकील
२—मुठभेड़चन्द	एक राही
३—सर्व्वदानन्द	नाटक—मण्डली के ऐक्टरगण
४—अलबेले	
५—रंगीले	
६—घबड़ाहटमल	
७—गुलजारहुसेन	
८—महरा	निपोड़शंखका नौकर

पात्री—

९—नटखट	निपोड़शंखकी स्त्री
१०—महरिन	महराकी स्त्री

दुमदार आदमी

पहला दृश्य

सड़क

[निपोड़शंख—एक बड़ी-सी दुम लगाये हुए जिसके आखिरी हिस्सेमें अङ्गरेजीके मोटे मोटे अक्षरोंमें B. A. B. S.c, LL. B. दोनों तरफ लिखे हुए हैं, एक पैरमें चूड़ीदार पैजामा दूसरेमें ढीली मोहरीका पैजामा पहने, उल्टी अचकन पहने, एक बड़े डण्डेपर सवार; एक हाथमें जूता लिये डण्डेको पीटते हुए प्रवेश करते हैं। दूसरी तरफसे गुडभेड़चन्द आता है।]

दुमदार आदमी

निपोड़शंख—हट जाओ सड़कपरसे अपनी बाईं तरफ रहो। टिख् टिख् टिख्! (मुठभेड़से टकराकर गिर पड़ता है) चिल्लाता चला आता हूं कि बाईं तरफ जाओ। मगर न माना। ख़ामोख़ाह् सामने आ गया।

मुठभेड़०—क्यों जनाब यह किस किस्मकी सवारी है?

निपोड़०—अबे! सवारी नहीं सवारा है। न दाना खाये न घास। और अक्खर हो न पक्खर। न मंगनी जाये और न किसीके काम आये। क्योंकि सवारीपर चढ़नेवाले सभी मिलते हैं। मगर इस सवारीपर चढ़ना खेल नहीं है।

मुठभेड़०—अहा! जब इसपर चढ़ना खेल नहीं है तो आप इसको क्यों इस्तेमाल करते हैं?

निपोड़०—यह तो म्युनिसिपैलिटीवालोंसे पूछिये, जिनकी मिहरबानीकी बदौलत रातको न एक्का मिले और न कोई सवारी।

मुठभेड़०—तो जनाब इससे अच्छा यही होता कि आप पैदल चलते।

निपोड़०—वाह! यहाँका दस्तूर बिगाड़ते। दुमदार आदमी होकर पैदल चलते।

मुठभेड़०—आपका मतलब मेरी समझमें नहीं आया।

निपोड़०—यह आपकी अक़्लकी खूबी और समझकी तारीफ़ है। अरे यार, बक़ौल घिर्राऊ साईसके सबसे बड़ी पूँछका आदमी वह जो चौकड़ीपर चले। उससे घटकर वह जो जोड़ीपर चढ़े और सबसे छुटभइया वह जो टूटरूँटूँ एक घोड़ेकी सवारीपर निकले और इनके अलावा जितने हैं वह बक़ौल घिर्राऊ भाईके आदमी नहीं बेदुमके आदमी हैं। इसीलिये जो कोई पूँछका आदमी बनना चाहता है वह पहले-पहल सवारीसे कम बात नहीं करता। मगर यह न पूछो कि उनकी सवारी किस क़िस्मकी होती है।

मुठभेड़०—आख़िर कैसी होती है ?

निपोड़०—यह तो लोहारसे पूछिये, जिसकी दूकानपर महीनेमें पैंतीस रोज़तक गाड़ी मरम्मतके लिये लगातार खड़ी रहती है और घोड़ोंका हाल महाबाभनोंसे पूछिये जो क़ब्रसे मुर्दोंके घोड़े निकालकर गले मढ़ जाते हैं। रह गया साईस। उसका हाल क्या बताऊँ। कमबख़्त जोरूसे भी ज़्यादा नख़रे करता है। इसीलिये इन झगड़ोंसे घबड़ाकर मैंने इस टट्टू-की सवारी अख़्तियार की है। क्योंकि नामका नाम और कामका काम। चल बे टिख्-टिख्—

मुठभेड़०—ज़रा सुनिये तो, यह आपकी धजा तो अजीब-बेतुकी है।

निपोड़०—इसमें मेरा क्या क़सूर। जैसा देश वैसा भेष, मगर अब मुझे देर हो रही है। मैं नाटक देखने जा रहा हूँ।

मुठभेड़०—जरा ठहरिये हजरत। यह दुम आपकी आखिर किस काममें आती है?

निपोड़०—अरे! यह तो बड़े कामकी चीज है। अगर यह न होती तो हम भी तुम्हारी तरह मामूली आदमी होते। फिर हममें और तुममें फर्क ही क्या होता। जब कभी हम ऐसे बड़े आदमियोंको ओहदा और अख्तियारात मिलते हैं तो इस दुममें बिच्छूकी तरह एक डङ्क निकल आता है, जो सिवाय नुकसानके फायदा पहुँचाना तो जानता ही नहीं।... अच्छा एक बात हमको भी बता दो। वह यह कि नाटक किसे कहते हैं। हमने आज तक जिन्दगीभरमें नाटक कभी नहीं देखा है।

मुठभेड़०—वाह! जनाब वाह! मालूम होता है। कालिजमें आप घास ही खोदते रहे। आपके पीछे तो डिग्रियोंकी इतनी बड़ी दुम लगी हुई है जिसमें बी० ए० भी है, बी० एस-सी० भी है। एल्-एल्० बी० भी है। फिर भी आप पूछते हैं कि नाटक क्या चीज है।

निपोड़०—अरे यार! इस दुमको तो युनिवर्सिटीने

ख़ामोख़ाह मेरे पीछे खोंस दिया है। अच्छा न बताओ। हम नाटक वहीं जाकर देख लेंगे। टिख्‌ टिख्‌ टिख्‌—

(जाता है)

मुठभेड़०—(अकेला) अफ़सोस! पढ़ाई सब गारत हुई। मा-बापका रुपया फ़जूल खराब किया, जो इतना पढ़-कर यह भी नहीं जानता कि नाटक क्या चीज है और जिन्दगीमें पहले-पहल नाटक देखने जाता है।

(जाता है)

दूसरा दृश्य

स्टेज

(सर्व्वदानन्द, अलबेले, घबड़ाहटमल, गुलजारहुसेन, रञ्जीत)

सर्व्वदानन्द—यारो !—

जिन्दगी जिन्दादिलीका है नाम,

मुरदा दिल खाक जिया करते हैं।

अलबेले—बेशक ! इसीलिये तो हम लोगोंने आज नाटक खेलकर अपनी जिन्दादिलीका इजहार किया और यहांकी मुरदनी नहूसियत दूर की।

घबड़ाहटमल—जिन्दादिलीके जोशमें हम लोगोंने नाटक तो जरूर खेला। मगर अब पछता रहे हैं कि कैसे घरकी तरफ पैर उठायें और क्या मुँह लेकर आपने वालदैनके सामने आयँ।

गुलजारहुसेन—भाई, मैं तो औरत बना था, मेरी मिट्टी तो और भी खराब है। घरमें जोरू भाड़ूसे बात करेगी और कहेगी कि मुये जब तूही औरत बनता फिरता है तो मुझे ब्याह क्यों लाया।

रंगीले—अजी यह तो घरकी मुसीबतें हैं। इनकी क्या फ़िकर। मगर असली डर तो बाहरवालोंका है, जो हर गली-कूचोंमें हमलोगोंको थूकेंगे। रास्ता चलना मुश्किल कर देंगे।

(निपोड़शंखका आना)

निपोड़०—(जिधरसे आता है उसी तरफ घूमकर) हाँ, हाँ, हम हर जगह जा सकते हैं। बिना टिकटके जा सकते हैं। हम दुमदार आदमी हैं। हमको कौन रोक सकता है ? बस खबरदार !

घबड़ाहट०—या ईश्वर ! यह बाहरी आदमी हम लोगोंके स्टेजपर क्यों घुस आया ?

निपोड़०—(ऐक्टरोंकी तरफ घूमकर) वाह वाह ! शर्म न आई। रण्डियों और भाड़ों की तरह 'गाये बजाये, नाचे-कूदे स्वांग बनाकर' और कहते क्या हैं कि स्टेजपर Acting की। छि ! छि ! डूब मरो चुल्लूभर पानीमें।

सर्व्वदानन्द—हुजूरत सलामत, आप फजूल खफा होते हैं। जब हम इस स्टेजपर ऐक्ट करनेसे पिछड़ेंगे तो दुनियाके स्टेजपर क्या खाक ऐक्ट कर सकेंगे।

अलबेले—यह वह स्टेज है जहसे दुनियाके स्टेजके ऐक्टरोंको रास्ता बताया जाता है। उनकी गल्तियाँ दुरुस्त की जाती हैं।

निपोड़०—वाह ! वाह ! क्या कहना है ? यहां भला ऐसी कौनसी जरूरत नाटक खेलनेके लिये थी ? वक़ौल शख्ससे खुद तो नाचनेका शौक चर्राया और बहाना इतना बड़ा !

सर्व्वदा०—अजी जनाब यहाँ जिन्दादिली पैदा करनेके लिये हमलोगोंने नाटक खेला । क्योंकि यहाँ न तो किसी क़िस्मकी जिन्दादिली है और न Activity है । न लोग खुद हँसी-खुशीसे जिन्दगी गुजारनेका ढंग जानते हैं और न दूसरोंको ऐसा करते देख सकते हैं ।

निपोड़०—तो बक़ौल आपके यह शहर क्या क़ब्रिस्तान है, जहां सब मुर्दे ही बसते हैं । अजी हजरत आंखें खोल कर देखिये यहाँ तो बड़ी-बड़ी Activities हैं ।

अलबेले०—आखिर किस बातमें ?

निपोड़०—अच्छा, कान फटफटाके सुनिये । अव्वल तो मक्खी मारनेमें, दूसरे झूठ बोलनेमें, तीसरे म्युनिसिपैलिटीकी मेम्बरीमें और चौथे हर बातमें पीछा दिखानेमें । मगर आप लोगोंको देखिये ! अमीरजादे हैं, शरीफ बनते हैं, वकील हैं, रईस हैं, बड़े आदमी कहलाते हैं और दुम कटाके बछड़ोंमें शामिल हुए । हत् तेरीकी ! डूब मरो चुल्लूभर पानीमें, खुद तो जलील हुए तो हुए और अपने साथ हमलोगोंकी भी शान

खराब की। इतने बड़े रईस और बड़े आदमी होकर अठन्नी पर नाचे! लानत है।

रङ्गीले—क्यों जनाब, क्या बड़े आदमियोंके कोई दुम लगी होती है?

निपोड़०—अबे देखता नहीं, छे हाथकी यह क्या लटक रही है?

सच्चिदानन्द—आप चाहे वकील हों या वैरिस्टर—

अलबेले—मादा हो या नर—

रंगीले—घोड़ा हों या खर—

गुलजार०—आदमी हों या बन्दर—

घबराहट०—हकीम हो या डाक्टर—

सच्चिदानन्द—जज हों या कलेक्टर। दुनियाके साथ जैसा सलूक कीजियेगा दुनिया भी वैसा ही सलूक आपके साथ करेगी। अगर आप जानवरोंकी तरह अपना ही पेट पालते रहें और घरपर बैठकर पागुर ही करते रहें तो मरनेके बाद याद रखिये, आपके नामपर उल्लू भी न बोलेगा।

अलबेले—क्या आप अपनी शानको Shakespeare Moliere और कालीदासकी शानसे भी ज्यादा समझते हैं जिन्होंने दुनियाके साथ वह सलूक किया और दुनियाके लिये वह बेशकीमत और नायब रत्न छोड़े कि जिनका मजा

दुनिया मरते दमतक लेती रहेगी और इसके बदलेमें दुनिया भी उनको आदमी क्या देवताओंसे भी बढ़कर पूजती है और हमेशा योंही पूजती रहेगी ? क्या इन लोगोंने स्टेजपर Acting नहीं किया ? क्या आपकी इज्जत बादशाहोंकी इज्जतसे भी ज्यादा हो गई जो अक्सर नाटकोंके Ballot में पार्ट किया करते थे, जैसे फ्रांसका Louis XIV ?

सच्चिदानन्द—यह तो जिन्दादिलीका नमूना है। इससे तो और भी शान दुबाला होती है।

निपोड़शंख—जी हाँ, औरत बनकर नाचनेमें बड़ी शान दुबाला होती है। लानत है तुम लोगोंपर ! जानतो, इतने मर्दोंके सामने लहँगा ओढ़नी पहनकर मटकनेमें शर्म न आई ? थुड़ी है तुम्हारे मर्द कहलानेपर, फटकार है तुम्हारे नामपर। मर्द होकर औरत बने ! शर्म शर्म ! मर्दोंका नाम डुबाने वाले, मर्दोंकी नाक कटानेवाले, चुल्लूभर पानीमें डूब क्यों नहीं मरते हो। छि ! छि !

(गुलजारहुसैन एक छोटी टाइमपीस, जिसमें जगानेकी घंटी (Alarmbell) लगी होती है, Alarm लगाकर उस टाइमपीस-को निपोड़शंखकी दुममें बांध देता है। एक बारगी Alarm की घण्टी बजने लगती है और निपोड़शंख घबड़ाकर भाग जाता है। अगर वैसी घड़ी न मिल सके तो रबड़के गुबारे बाजेको फूँककर

दुममें बांध देनेसे काम चल सकता है। इस बाजेकी रबड़की थैली फूंकते वक्त फ़ुटबालकी तरह फूल जाती है। बादको आपसे आप तुरहरी बजने लगती है। निपोड़शंख एकाएक चौंककर भाग जाता है और डाक्टर तालियां पीटते हैं।]
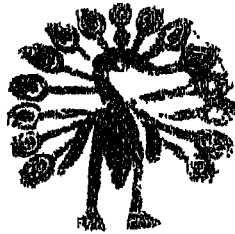
तीसरा दृश्य

निपोड़शंखका मकान

नटखट—आज न जाने वह कहाँ चले गये। अबतक घर नहीं आये। रात इतनी जा चुकी! आखिर रुक कहाँ गये?

(महराका प्रवेश)

नटखट—क्यों महरा, बाबू कहाँ हैं?

महरा—सरकार हम नहीं जानित है, बाबू कहाँ हैं। हम तो महरिनियाँके ढूंढे आएन है। हम जाना रहा कि हीएँ होई।

नटखट—नहीं, वह तो सरे-शाम ही यहांसे चली गई।

महरा—तब कहाँ अटकि रही। रहो आज बिना नाक काटे हम ओका छाड़ब ना।

(महरा जाता है)

नटखट—आज मैं भी उन्हें रातको बाहर घूमनेका मजा चखाऊँगी। आजकल वह बहुत बहक गये हैं।

(महरिनका प्रवेश)

नटखट—क्यों महरिन, तुम कहाँ थी, तुम्हें ढूँढनेके लिये तुम्हारा महरा यहाँ आया था।

महरिन—हम वोका ढूंढित फिरित है। आज न जाने

कहाँ चला गया। जहाँ मिला तहां सात झाड़ू गिनके मारब।
कैहर गवा है ?

नटखट—इस तरफ।   (महरिनका जाना)

नटखट—देखो, जब एक छोटी जातकी औरत अपने मर्दके रातके वक्त बाहर घूमनेपर इस कदर खफा होती है, तो मुझे तो और भी ज्यादा खफा होना चाहिये। आधी रात हो गयी और अबतक गायब हैं अच्छा, आने दो। मैं भी उन्हें ऐसा नाच नचाती हूँ कि वह भी याद करेंगे।

(निगोड़शंखका आना। इस सीनमें दुम न होना चाहिये, क्योंकि स्टेजपर ही साड़ी पहनी है)

नटखट—क्यों कहाँ थे ? कहाँ थे ? अजी हजरत; अभीतक आप कहाँ थे ?

निगोड़०—(अलग) ईश्वर खैर करे। एक सवालको एक बारगी तीन दफे पूछ लिया।

नटखट—क्यों जवाब क्यों नहीं देते ? इतनी राततक कहाँ गायब रहे ? हाँ बताइये। कुछ मुँहसे बोलिये।

निगोड़०—(अलग) बुरा हो नाटकवालोंका। कम्बख्तोंने आज किस मुसीबतमें फँसा दिया। (प्रकट—हाथ जोड़कर) बीबी, माफ करो। हाथ जोड़ता हूँ। पैर पड़ता हूँ, कान पकड़ता हूँ। अब न जाऊँगा कहीं।

दुमदार आदमी

नटखट—तुम गये क्यों ? हमको छोड़कर घरसे निकले क्यों ?

निपोड़०—(अलग) अब नाटकवाले करबख्त कहाँ मर गये ? क्यों नहीं आकर जवाब देते ? (प्रकट) बीबी, बड़ी गलती हुई कसम खाता हूँ अब ऐसी गलती कभी नहीं होगी।

नटखट—अगर इस बीचमें मैं कहीं चली जाती, भाग जाती—

निपोड़०—हाँ बीबी, सही है। यह मोछ तुम्हारे ही हाथ है। चाहे रखो चाहे उखड़वा दो (अलग) लोग मुझसे कहते हैं कि घरसे क्यों नहीं निकलते, किसी दावत, जलसे या किसी खेल-तमाशेमें क्यों नहीं शरीक होते, क्लब क्यों नहीं आते ? अब मैं क्या बताऊँ, क्यों नहीं घरसे निकलता। जिसपर गुजरती है वही जानता है। इसीलिये तो मैं हर कामको बुरा कहता हूँ। (प्रकट) बीबी अब तो माफ कर दो।

नटखट—नहीं, नहीं, नहीं।

निपोड़०—कान पकड़के उठता बैठता हूँ। लो, अब तो मान जाओ।

नटखट—कभी नहीं ?

निपोड़०—बीबी, मेरा कसूर नहीं है। यह नाटकवालों-का कसूर है।

नटखट—नाटकवालोंका कसूर कैसा ?

निपोड़०—नाटक ही देखने तो गया था।

नटखट—तो जल्दी क्यों नहीं चले आये ?

निपोड़०—बीबी ! क्या बताऊँ ? जी नहीं चाहा कि अधूरा तमाशा छोड़के चला आऊँ। नाटक ऐसा अच्छा मालूम होता था कि बीबी, अगर तुम भी देखती तो बिना आखीरतक देखे हुए वहांसे न टलती।

नटखट—क्यों, आखिर उसमें ऐसी कौनसी बात थी ?

निपोड़०-यह न पूछो बीबी यह न पूछो। आहा हा हा !

नटखट—बताओ तो सही।

निपोड़०—बीबी, वहाँ अहा हा हा ! वहाँ बीबी आहा हा हा !

नटखट—अयँ, यह क्या ? बताते क्यों नहीं साफ ?

निपोड़०—(अलग) सारी हँसीपर पानी पड़ गया। (प्रकट) बीबी, वहां मर्द लोग औरत बनकर ऐसा अच्छा मटकते थे कि क्या कहूँ अहा हा हा !

नटखट—सचमुच ?

निपोड़०—हां, अपने सरकी कसम। आहा हा हा !

नटखट—अच्छा, तो मर्द लोग औरत बनकर किस तरहसे मटकते थे ? मुझे भी तो दिखाओ ।

निपो०—अयँ ! यह क्या कह रही हो ? (अलग) या ईश्वर ! क्या औरत बनाकर मुझीको नचायेगी ?

नटखट—(एक साड़ी लाकर) लो इस साड़ीको पहन कर मुझे नाटकका मटकना दिखाओ ।

निपोड़०—या ईश्वर ! यह किस मुसीबतमें फँसा । मैं मर्द होकर औरत बनूँ ?

नटखट—लो, जल्दी पहनो । मैं भी तुम्हारे कपड़े बदले लेती हूँ ।

(निपोड़शंखकी टोपी और अचकन उतारकर खुद पहनती है । निपोड़शंखके बाल जरा बड़े होने चाहिये । पट्टेदार हों तब भी ठीक है; ताकि साड़ी ओढ़नेमें मालूम हो कि जनाने बाल हैं ।)

निपोड़०—मगर यह साड़ी तो महरिनकी है ।

नटखट—नहीं, इसका दूसरा जोड़ा मैंने महरिनको दिया है । इसको मैंने अपने लिये रख छोड़ा है । पहनते क्यों नहीं ? याद रखो, जबतक औरत बनकर मटकना न दिखाओगे तबतक मैं हर्गिज न मानूँगी ।

(दोनों साड़ियां ठीक एक-सी होनी चाहिये । छोटेको

हों तो और भी बेहतर है। उसी छींटका एक रूमाल लेकर उसके दो किनारेंपर पीतलके दो बड़े-बड़े बाले और रूमालके बीचके हिस्सेमें नाकमें पहननेका लटकन पीतलके तारमें लगा-कर रूमालमें टांक ले। इस तरहसे कि कानमें बाला और नाकमें लटकनके तारको दबा लेनेसे निपोड़शंखकी पतली और नुकीली दाढ़ी (French beard) और मोछ उस रूमालके भीतर ठीक तरहसे छिप जायं। इस रूमालको पहले कमीजके पाकेटमें रख लेना चाहिए और इसको घूंघटकी आड़में पहनना चाहिए। साड़ीका पहनना और रूमालका लगाना आनन-फानन होना चाहिये। साड़ी पहनते वक्त बातचीतका जारी रहना जरूरी है।)

निपोड़०—(साड़ी पहनता हुआ) अच्छा भाई, जोरू किसी तरह खुश तो रहे। बीबी, अब तो रहम खाओ। इतने लोगोंके सामने क्यों जलील कर रही हो ? मुझे साड़ी पहनना भी तो नहीं आता।

नटखट—नहीं, जैसे बने वैसे पहनकर तुमको मटकना होगा। देखो, मैं मर्द बन गई, और तुम एक साड़ी भी नहीं पहन पाते।

निपोड़०—कभी पहना हो तब तो। जिन्दगीमें यह पहली मुसीबत है। नाटक देखनेकी सजा पा रहा हूँ। मगर

बीबी साड़ी खुल-खुला जाय तो मैं नहीं जानता। भाइयो, मुझपर क्यों हँसते हो? देख लो, घरपर यही होनेको है।

नटखट—वाह जी! तुम तो मटकने लगे।

निपोड़०—बीबी, यह पोशाककी बलिहारी है। इस पोशाकमें अपनी क़सम बड़ी चुलचुल चुलबुलाहट मालूम होती है।

नटखट—सच्ची कहो।

निपोड़०—बीबी, अलग रहो। मर्दसे हुआ अब जनाना, देखो कहीं हाथ न लगाना।

गाना।

निपोड़०—मटकूं न झिझकूं न झेपूं शर्माऊं।
नाटकके नखरे मैं तुमको दिखाऊं।

नटखट—घूंघट तो खोलो सुरतिया दिखाओ।
झटको न छटको न बइयां छोड़ाओ।

निपोड़०—हां हां छुओ न अंगन कंगन जाओ उधर भागो।
हां छोड़ो जी चोली व साड़ी जाओ चलो जाओ।
भौंवें चमकाऊँ नैना चलाऊँ।
थिरक थिरक चलक ठुमक चटक मटक करत जाऊँ।

(दोनोंका जाना)

(दूसरी तरफसे महराका आना)

महरा—(निपोड़शंखको अपनी जोरू समझकर) अरे, ई का ! बाप रे बाप ! ई कुकर्म ! आजै तो देख पायेन है । हम नाहीं जानत रहेन कि हींया अस तमासा होत है । आवत है, यही ओर आवत है । रहो ।

(छिप जाता है)

(निपोड़शंख और नटखट दोनों गलेमें हाथ डाले आते हैं । और निपोड़शंख गाता है । वैसे ही महरा लपककर निपोड़-शंखका गला पकड़ता है । नटखट भाग जाती है ।)

महरा—हींया मटकत हो ? हमरे आंखिनके सामने अस कुकर्म ! चलो घरे तो बताइत है । बोटी-बोटी काटके फेंक देब ।

(महरा निपोड़शंखको मारता पीटता ढकेलता हुआ । बाहर ले जाता है ।)

चौथा दृश्य

सड़क

(निपोड़ शंख को मारते-पीटते महराका आना)

गाना

निपोड़—

महरवा मारे डारत है, भौजी बोलत्यू काहे ना ?

चूड़िया तोरे डारत है, चोलिया फारे डारत है।

भौजी बोलत्यू काहे ना ? (देखनेवालोंकी तरफ)

ददइया रे ! बपइया रे ! ससुइया रे ! ननदिया रे !

महरवा मारे डारत है, भौजी बोलत्यू काहे ना ?

(अलबेले, रंगीले, गुलजारहुसेन, मुठभेड़चंद, सर्वदानन्द, घबराहटमलका आना)

सब—हाँ, हाँ, कौन है, क्यों मारता है ?

महरा—जाओ, जाओ, चला जाओ, नाहीं तुहोंके ठोकब हम अपने मेहरारूका मारित है, तोहरे बापकेर का ? तोहरे बापकेर मेहरारू होय ई ? कहाँ गई ? (निपोड़का भागना चाहता है।) ऐसी आ, चुड़ेलिया, वैसी कहां निकसी जात है।

(महरिनका झाड़ू लेकर आना)

महरिन—अरे ! ई गजब देखो ! ई नासकाटी एकरे साथे कौन आय ?

(लपककर दोनोंको झाड़ू मारती है ।)

महरिन—अरे नासकाटा, ई के होएँ ? हमार नानी होएँ कि तोहार काकी होयें ? एहीके फरफन्दसे घर-दुआर सब छोड़े हम (महराको फिर मारती है)

महरा—अरे ! दुई दुई । ई का भावा ! अब राम जाने ई मोर मेहरारू होए कि ई होए । दादा तूही लोग इन्साफ करके बताओ कि दुई में मोर मेहरारू कौन होए ।

मुठभेड़०—अबे; दोनोंपर चिट्ठी छोड़ दे ।

महरा—मुहाँ तो देख लेई तनिक एके खोलाके । अरे ! अरे ! मुहाँ छिपावत काहे है ?

(जबरदस्ती निपोड़शंखका मुंह खोलता है)

सब—आँय !!! यह क्या !

सर्व्वदानन्द—अल्लाह ! आप हैं, हजरत !

अलबेले—मुजस्सिम खुद !

रंगीले—औरतकी पोशाकमें !

गुलजार०—'हम तो मुरशिद थे, मगर—आप वली निकले ।'

घबड़ाहट०—क्यों जनाब, अभी तो आप हम लोगों-पर खफा हुए थे, थूकते थे, फटकारते थे । फिर आपने यह स्वांग क्यों बनाया ?

दुमदार आदमी

निपोड़०—आइये, माफ करो। क्या बतावें हमने तो अपनी जोरूको खुश करनेके लिये यह स्वांग बनाया था। मगर यह कम्बख्त महरा बीचमें ख़ामख़ाही बिगड़ गया।

सच्चिदानन्द—तो हम लोगोंने भी पब्लिकको खुश करनेके लिये यह स्वांग बनाया था। मगर दुमदार आदमी हम लोगोंसे फ़जूल ही ख़फ़ा हो गये।

गुठमेड़०—मगर महरा अपनी ग़लतीपर पछताता है।

अलबेले—तो दुमदार आदमी भी अब अपनी ग़लती-पर पछताते होंगे।

निपोड़०—हाँ भाई, कद्र उल्लूकी उल्लू ही जानता है।

गुलज़ार०—हुमांको कब चोरान्द पहिचानता है?

निपोड़०—अच्छा भाई, अब हम भी अच्छे और तुम भी अच्छे। न तुम हमको बुरा कहो और न हम तुमको बुरा कहें। तुम भी खुश घर जाओ और हम भी रोते-कलपते घर जायँ।

घबड़ाहट०—शुक्र है कि आपकी दुम कट गई! अदाबर्ज।

सब—Good-night.

(ड्रापसीनका गिरना)

गड़बड़झाला

यह प्रहसन १९१२ में लिखा गया और उसी साल यह काशीके 'इन्दु' में प्रकाशित हुआ था। इसका अभिनय पहले-पहल गोंड़ेके पी० एल० डी० क्लबमें १२ दिसम्बर १९१९ को बड़ी धूम-धामसे किया गया था। और इसने रङ्गमञ्चपर बड़ी सफलता प्राप्त की थी। उसके बाद यह अन्य कई स्थानोंपर भी खेला गया और हर जगह यह अत्यन्त ही लोक-प्रिय प्रमाणित हुआ। इसका विषय वही है, जिसकी मुसीबतें कुछ-न-कुछ हर भलेमानुसको अपने बाल-बच्चोंकी शादीके अवसरपर उठानी पड़ती हैं। इस रोगको दूर करनेके लिये इस प्रहसनमें कटाक्षोंकी मात्रा जहांतक हो सकी है तीव्र की गई है, ताकि किसी तरहसे समाजपर इसका असर तो पड़े।

प्रहसनके पात्र और पात्री

पात्र—

१—मनहूसलाल—दूसरोंका बुरा चाहनेवाला दगाबाज और खुदगर्ज बूढ़ा ।

२—कम्बख्तलाल—मनहूसलालका आवारा बेटा ।

३—धोतीप्रसाद—पुराने ख्यालका शक्की आदमी ।

४—बिगड़ेदिल—अपनी बिरादरीका सताया हुआ व्यक्ति ।

५—डाक्टर ।

६—बुद्धू—मनहूसलालका नौकर ।

पात्री—

७—दुखदेई—मनहूसलालकी स्त्री ।

८—भगमानी—कम्बख्तलालकी स्त्री ।

पहला दृश्य

स्थान—रास्ता

बिगड़ेदिल—(आप ही आप) कुछ कहा नहीं जाता। ज़मानेकी हवा ही बदल गई। मर्द ज़नाने हो गये। औरतें मर्दानी हो गईं। लड़के सयाने हो गये। सयाने नादान बच्चे हो गये। जवानोंमें बुढ़ापा आ गया। बूढ़ोंमें नये सिरेसे नौजवानी समा गई। इनके लिये न टीपनका झगड़ा न

ग्रहका बखेड़ा। चट मँगनी पट ब्याह। मगर नौजवानोंके लिये सौ-सौ मुसीबतें। पण्डितोंका विचार, ग्रहका मिलान, बाप, भाई, मामू, चाचा, नाना, दादा सब गैरे-गैरोंकी रजामन्दी, खानदानकी अच्छाईका सबूत, दहेजका झंझट, कहाँ तक कहूँ। मैं अपना रोना किसके आगे रोऊँ? इस कम्बख्त मनहूसलालके मारे मेरी भांजीकी कहीं शादी नहीं होने पाती। किसीसे कहता है, इसका खान्दान नीचा है। किसीसे कहता है, कि वह उसके माथेपर भँवर है, जिसकी वजहसे लड़केपर कोई न कोई आफत फट पड़ेगी। सबसे सैकड़ों ही दोष बताता है। इसलिये कि चारों तरफसे हारकर मैं उसीके साथ शादी कर दूँ और मजा यह है कि इसका लड़का कम्बख्तलाल भी इसी फिक्रमें है। अच्छा, मैं भी एक लाठीसे दोनोंको हांकता हूँ। वह चाल चलता हूँ कि ये मरते दमतक याद करेंगे। ऐसे लोगोंके लिये ऐसा अच्छा सबक होगा कि फिर कोई भूलकर भी............ऐ लीजिये! खब्बीस चला आ रहा है। उहूँ हूँ पोशाक तो देखिये?

(मनहूसलालका आना)

मनहूस०—आदाबअर्ज है, भाई साहब, मैं आपहीके यहां गया था।

बिगड़े०—क्यों, किसलिये? जब हम बिरादरीसे बाहर

और हमारे खान्दानमें सैकड़ों दोष हैं तो हमारे दरवाजेपर जानेसे फायदा ?

मनहूस०—आप तो बिगड़ने लगे। अरे भाई साहब, मेरी सलाहसे काम कीजिये तो—

बिगड़े०—बस, बस, अपने घरपर रखिये अपनी सलाह। मुझे किसीकी परवाह नहीं है। मैं आप ऐसे लोगोंकी बिरादरीपर थूक फेंकता हूँ जो पल्ले सिरेके बेईमान, दगाबाज, कुकर्मी, झूठे, जालिया, फरेबी, मक्कार, शराबी, लालची, गन्दे, डरपोक, खुशामदी हैं। थुड़ी है ऐसी बिरादरीपर! थुड़ी है! मैं बेजात भला, मगर आप ऐसे कमीनोंके साथमें रहना। छि!···अपनेको बड़ा धर्मी कहते हैं।

मनहूस०—अजी जनाब, उसी बिरादरीमें न रहनेसे आज आपकी भांजीकी लाख खूबसूरत होनेपर भी कहीं शादी नहीं होती।

बिगड़े०—बलासे। मगर सड़ी हुई लाशके खानेवाले गीदड़ों और कुत्तोंको गुलाबका फूल नहीं मिल सकता। अगर भौंरा न मिले या बुलबुल न हो तो कुछ परवाह नहीं। फूल अपनी टहनीपर सूखके मुर्भा जायगा।

मनहूस०—बेफायदा।

बिगड़े०—नहीं बेफायदा नहीं। मैले नाबदानों और

गलीज कीचड़ोंमें गिरनेसे बचा रहेगा। लुच्चों और कमीनोंका यह मुँह कि मेरी देवीसी भांजी नलिनीसे शादी करें। ऐसी नौबत आनेके पहले यह छुरी दो जानोंका फैसला करेगी।

मनहूस०—(दूर भागकर घबड़ाके इधर-उधर देखता है) ए, ए, ए सिपाही वो सिपाही—

बिगड़े०—पहले नलिनीकी, और दूसरी मेरी।

मनहूस०—पहले छुरी बन्द कीजिये, छुरी, फिर बात पीछे कीजियेगा।

बिगड़े०—(अलग) उफ! गुस्सा भी क्या बुरी चीज है, मगर जब दिलमें आग लगी रहती है तो छिपायेसे नहीं छिपती।

मनहूस०—हां, अब कहिये नलिनीके बारेमें क्या कहा आपने?

बिगड़े०—कहा क्या, बस यही कि नलिनीका अब किस्सा पाक किये देता हूं। उसके लिए यह दुनिया नहीं है। उसकी शादी (आसमानकी तरफ उंगली उठाकर) वहां होगी।

मनहूस०—(अलग) अरे कम्बख्त, तू चूल्हेमें जा मर। मगर नलिनीको मेरे लिये छोड़ जा। ऐसा न हो कहीं यह उसका सफाया कर दे। फिर मैं रह जाऊँ टका-सा और सारा खेलका खेल बिगड़ जाये। (प्रकट) अजी जनाब, आप

घबड़ाते काहेको हैं। कौन नहीं शादी करता, सबसे पहले मैं तैयार हूँ। मेरी औरत मौजूद है तो क्या? मगर, दोस्त वह जो बुरे वक्त काम दे। अरे, चलो अभी शादी कर लूँ।

बिगड़े०—(अलग) देखा बेईमान को। ऐसे दोस्तके गलेपर छुरी फेर दे। अच्छा रहो बच्चा। तुम्हारी दवा हमी करेंगे। (प्रकट) आप शादी करेंगे?

मनहूस०—हाँ तो क्या किया जाय? आपकी बिरादरीमें लेनेकी यही सूरत है।

बिगड़े०—बस बिरादरीका नाम लिया कि मेरे आग लगी।

मनहूस०—अच्छा, तो फिर आपकी खातिर शादी कर लूँगा।

बिगड़े०—माफ़ कीजिये। मुझे खातिरदारीकी जरूरत नहीं। आप शादी करना चाहते हैं?

मनहूस०—मैं-मैं! अच्छा जो आपकी राय।

बिगड़े०—ठीक बोलिये ठीक, नहीं तो नलिनी इस दुनियासे जाती है।

मनहूस०—हाँ साहब करेंगे। न करें क्या मानी, बीच खेत करेंगे?

बिगड़े०—फिर आगे मुकरियेगा तो नहीं?

मनहूस०—यह लो एक, दो तीन, बात पक्की हो गई।

बिगड़े०—अच्छा तो पण्डितको बुलाकर कुंडली दिखाकर सब विचरवा लिया जाय।

मनहूस०—अजी कहाँका विचरवाना, कहाँका कुछ। कल कीजिये शादी।

बिगड़े०—(अलग) क्यों बच्चा, अपने लिये कहांका विचरवाना, कहांका कुछ। दूसरेका मामला होता तो हजारों ढकोसला बताते। ईश्वर समझे तुम लोगोंसे (प्रकट) मगर शादी चुपचाप हो, किसीको कानोंकान खबर न हो।

मनहूस०—यही तो मैं कहनेवाला था। मैं छिपके चुपचाप कल आठ बजे रातको आऊँगा, नहीं तो अगर उस गुरदार बुढ़ियाको मालूम हो गया तो मेरी पूरी कम्बख्ती आ गई। खोपड़ीका एक बाल न बचेगा और सुनो, दुलहिन हमारे मकानपर नहीं आयगी और न मैं अपने साथ लाऊँगा। उसके लिये एक दूसरा मकान किरायेपर लूँगा। आप वहीं उसको पहुंचा दीजिये। बस ठीक है, हाँ (अलग) फाँसा है मूजीको।

(जाता है।)

बिगड़े०—(अकेला) अब कहाँ जाता है ? ऐसा याद करेगा कि हमेशाके लिये आदत छूट जायगी। इसका नौकर घुघुवा, है बड़ा चलता-पुर्जा लौंडा। देखनेमें भी खूबसूरत है।
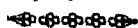
उसको मैंने सिखा-पढ़ाकर ठीक भी कर रखा है। बस, उसीको औरत बनाकर इस बुड्ढेके साथ शादी कर दूँ और उसके दो घण्टे बाद इसके लड़केको फांस फूँसकर इसीसे शादी करूँ। तब देखनेमें आयगा मज़ा। चलो, उल्लू गया मगर उल्लूका पट्ठा भी आ रहा है।

(कम्बख्तलाल बदमाशोंकी तरह झूमता हुआ आता है)

कम्बख्त०—जिधर जाता हूँ उधर नलिनीहीकी खूबसूरती सुनता हूँ। बड़े-बड़े डोरे डाले, मगर हत्थे चढ़नेकी कौन कहे देखने तकको न मिली। शादी तो मेरी हो चुकी है, तो इससे क्या ? एक और सही। अगर कहीं नलिनीकी मेरे साथ शादी हो जाती तो क्या कहना था !

बिगड़े०—(अलग) कहे जाओ बच्चा। मैं सुन रहा हूं सब।

कम्बख्त०—फिर तो—अख्खाह आदाबअर्ज है जनाब, कहिये कोई लड़का ठीक हुआ ?

बिगड़े०—क्या बताएँ बदनसीबी हमारी।

कम्बख्त०—मैं आपसे कई दफे कह चुका कि यह मामला मुझपर छोड़ दीजिये तो अभी, हां सब······

(बातें करते हुए दोनोंका जाना)

दूसरा दृश्य

मकान

(बुद्धू अकेला टहलता है)

बुद्धू—अहा हा हा ! वाह, बेटा बुद्धू क्यों न हो ? ऐसा गड़बड़झाला होगा और दोनों वह-वह उल्लू बनेंगे कि आहा हा हा ! ऐसे लोगोंकी ऐसी ही सजा होनी चाहिये, तभी ठीक होंगे। मैंने कई जगह नौकरी की, मगर इस घरके ऐसा अन्धेर कहीं नहीं देखा। बुड्ढा कमबख्त तो शैतानका नाना है, और उसका लड़का उसका भी बाप। न बाप समझता है अपने बेटेको और न बेटा समझता है अपने बापको। हरदम लड़ाई-झगड़ा दंगा-फसाद। जो एक कहता है दस, तो दूसरा सुनाता है बीस। कैसी इज्जत, कहाँका दबाव। और इधर सास पतोहूमें दिन-रात जूतियाँ चलती रहती हैं। किसी वक्त चैन नहीं, बुड्ढेको अपनी दाढ़ी रगनेसे फुर्सत नहीं मिलती। जब देखो तब खिजाब, कुश्ता, सुर्मामें उलझा रहता है। बेटे साहब तो आज फलानीकी फिक्रमें हैं तो कल्ह ढेमाकीकी ताकमें हैं।
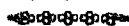
दोनों बहुत इधर-उधरका लगाकर सभीको धोखा दिया करते हैं। अब मालूम होगा। चलकर दिखाना तो अपने हथकण्डे। वाह! बेटा बुद्धू, हाँ।

गाना

बुद्धू—

चलता हूँ अभी वह चाल जिसमें होवें पायेमाल बाप पूत दोनों, बाप पूत दोनों—

खूब बनाऊँ। जाल फैलाऊँ। हो मजा। वाह वाह॥
बनके दूल्हन करूं वह जतन फिर न करें ऐसा चलन वह।

(बुद्धूका जाना—कम्बख्तलालका दूसरी तरफसे आना)

कम्बख्त०—मार लिया है। ऐसी पट्टी पढ़ाई कि वह शादी करनेपर तैयार ही हो गया। और जाता कहां वह? किसके यहाँ उसका गुजर होता। शहर भरमें तो मैंने अच्छी तरहसे आग लगा दी है। कल्ह चुपचाप बारह बजे रातको शादी होगी। फिर क्या चैन ही चैन। बापकी ऐसी तैसी, घर बारकी ऐसी तैसी। बस अब सबको गोली मार दिया। जोरू भी जाय कम्बख्त भाड़में। क्या परवा है, वह शादी तो मेरे बापने कर दी थी। मुझसे उससे क्या वास्ता? अब मैं अपने आप शादी करूँगा और अलग मकान लेके रहूँगा। जिन्दगी मजा करनेके लिये है न कि दुःख उठानेके लिये······

औरतें मर्दके लिये बनाई गई हैं। जहाँ एकसे तबियत घबड़ाई फ़ौरन उसको धता बताया और दूसरी घरमें आई।

(कम्बख्तलाल जाता है वैसे ही दूसरी तरफसे भगमानी पहुँचती है।)

भगमानी—हाँ, यह मुँह और यह हौसला? अच्छा आ तो सही फिर देखना कैसा छठी का दूध पिलवाती हूँ? मालूम होता है कि आज ये फिर—

(दुखदेईका चिल्लाते हुए आना)

दुखदेई—अरी मोरी मइया! बापरे बाप! अरे तुझे काली माई भच्छ लें। अरे तेरे हाथमें कोढ़ फूटे, निपूते। ऐसा घूँसा मारा कि प्राण निकल गया। हाय!

भगमा०—(अलग) अय! अरी बुढ़ियाका नखरा-तिल्ला देखो। अय है! प्राण निकल गया और चिल्लाने भरको दम रह गया। निगोड़ी!

दुख०—जबसे यह पतोहिया आई है—नानी, तुम खड़ी हो?

भगमा०—मुझे कोसे बिना दम फूल रहा था क्या? आई वहांसे बड़बड़ाती हुई।

दुख०—ए-ए-ए! 'फिर जो बढ़-बढ़के बोली तो जबान पकड़के खींच लूंगी। चण्डालिन! एक तो सिखा-पढ़ाके
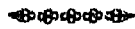
मेरी जान लेनेके लिये उस निगोड़ेको भेजा है। (रो कर) अ-अ-हत्यारेने जाते ही ऐसा मारा हाय—

भगमा०—अय, किसने सिखा-पढ़ाके भेजा? खा तो किरिया। झूठ और मुँहपर। चली कहने जबान खींच लूंगी, अय देखें जिगरा। खींचो जरी।

दुख०—(सर पीटकर) हाय करम! मुंह लगाई डोमिन··चल, दूर हो यहांसे, तेरा मुंह देखते बदन जल-भुनके राख हो जाता है।

भगमा०—तो फिर आंखें क्यों नहीं फोड़ डालती हो अपनी?

दुख०—मर, मर, मर। चूल्हेमें जा। जलमुही।

भगमा०—और तुम बैठी-बैठी आक़बतकी बोरियाँ बटोरना। चुड़ैल नहीं तो।

दुख०—चुप।

भगमा०—अय! तूही अपना मुंह सीले।

दुख०—खड़ी तो रह जरी।

[भगमानीका जाना]

दुख०—भाग गई, नहीं तो झोंटा पकड़के नोंच ही लेती। पटक देती, मुंह तोड़ देती। आज निगोड़ीका लहू पी लेती। कलहकी छोकड़ी (हांफती है) यह क्या?

[पर्देके भीतरसे आवाज]

"मनहूसलालने एक अवारा औरतको लाकर पीपलवाले मकानमें रखा है और उसको घरमें डालनेवाले हैं।"

दुख०—हा! सुनते-सुनते हैरान हो गई। इस मूए बूढ़ेको बुढ़ौतीमें अब क्या सूझी है? नित एक नई बेसवाको घरमें डालनेकी फिकिरमें लगा रहता है। निगोड़ा मिरचा जल गया, मगर कड़ुआपन बाकी है। मुआ अब भी अपनेको छैला ही समझता है। अच्छा, रहो, आज मैं दोनोंकी गत बनाती हूँ।

तीसरा दृश्य

मकान

[बुद्धू औरतकी पोशाकमें अकेला]

बुद्धू—इस पोशाक और नक़ली बालकी बलिहारी है कि जिनकी बदौलत मेरे सामने नलिनी भी मात हो गई। तभी तो बाप बेटे दोनोंने मुझीको अपनी जोरू बनाना बेहतर समझा। अब मैं भी औरतोंकी तरह झूठी मुहब्बतका जाल फैलाता हूँ। तब हो मजा। वह लो दूल्हा नम्बर एक आन मरा।

[मनहरलालका आना]

मन०—आहा हा; ऐसी बाँकी जोरू बड़ी हिकमतसे मिलती है।

बु०—और ऐसा भोला मर्द क़िसमतसे मिलता है।

मन०—वाह! वाह! क्या कहना है। जीती रहो। जीती रहो।

गाना

बु०—नई नवेली अलबेली दुल्हनियाँ।
सइयाँकी हूँ मैं दुलारी।
मन०—मैं भी हूं कैसा रंगीला संवलिया।
नैना है मेरे कटारी।

बु०—जुल्फे मेरी काली।
मन०—.........दाढ़ी है निराली।
बु०+मन०—.........तभी तो है जोड़ी प्यारी।
मन०—खट्टी मीठी चटनी ऐसी मेरी तेरी जोड़ी,
जिया चटपट हो, दिल लटपट हो दम फटफट हो॥

प्यारी, औरतके लिये उसका पति ही सब कुछ है। चाहे लंगड़ा हो, लूला हो, या जरा बुड्ढा भी हो। उसीकी तन-मनसे सेवा करनेसे औरत बैकुण्ठमें जा सकती है।

बु०—वहाँ जानेकी क्या जरूरत? औरत अगर होशियार हो तो बैकुण्ठका पूरा मजा यहीं घर बैठे ले सकती है।

मन०—हाँ, हाँ, सही है। मैं तुम्हारे लिये बाजारसे मिठाई ला दूँगा। तुमको अपने हाथसे खिलाऊँगा, फिर मुँह धो दूँगा और कभी-कभी कंघी-चोटी भी कर दिया करूँगा। है न मनकी बात मुनिया? और राजा 'नल' की कहानी सुनाऊँगा।

बु०—और टहलाने नहीं ले चलोगे ?

मन०—अरे ! टहलनेका भूलकर भी नाम न लेना। औरतोंको बाहर जाती हुई तुमने कभी नहीं देखा होगा। बात यह है मेरी सुगिया, कि सड़कपर हउवा होता है हउवा। जहाँ उसने किसी औरतको देखा, बस, दोनों हाथसे पकड़के दांतसे हबक-हबकके खा डालता है। बाप रे बाप, यह-यह बड़े दाँत होते हैं।

बु०—तब मैं गाड़ीपर टहलने चलूँगी।

मन०—ऊँह ! टहलनेमें क्या धरा है ? कुछ नहीं, ऐसा ही अगर गाड़ीपर चढ़नेका शौक़ है तो तुम चारपाईपर बैठ जाया करना, मैं उसे आँगनमें दो दफे उधर खींचके ले जाऊँगा और दो दफे इधर। तुम समझ लेना कि मैं गाड़ी-पर जा रही हूं।

बु०—मगर मैंने किताबोंमें पढ़ा है कि—

मन०—अरे तू लिखना-पढ़ना भी जानती है ?

बु०—हाँ, यही कुछ थोड़ा-सा।

मन०—हाय ! बुरा हुआ। अच्छा, जल्दी भूल जा, जल्दी भूल जा, जल्दी भूल जा। नहीं तो नरकमें जायगी।

बु०—भूल जाऊँ ?

मन०—हां जल्दी भूल जा। एकदम भूल जा, सब कुछ भूल जा।

बु०—लो, मैं भूल गई।

मन०—वह वाह! वह वाह! वाह री मेरी गोरइया, आ आ तो प्यारी इसी बातपर।

बु०—चलो उधर। तुम कौन हो जी? हटाओ हाथ।

मन०—हाय! हाय! तुमको क्या हो गया, प्यारी!

बु०—तुम मेरे घरमें कौन घुसनेवाले? तुम हो कौन? निकलो, चलो यहांसे।

मन०—कोई औरत भला अपने मर्दको इस तरहसे निकालती है।

बु०—क्या तुम मेरे मर्द हो?

मन०—और तुम क्या समझी—

बु०—ख़ाक पत्थर।

मन०—अरे! कल ही तो तेरी शादी हुई है।

बु०—मैं कुछ नहीं जानती। मैं तो सब भूल गई।

मन०—अररररर! सब भूल गई! यह तो बड़ी आफ़त हुई। अरे! तू अच्छी तरह फिरसे याद कर ले, मैं तेरा एकलौता मर्द हूँ।
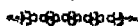
बु०—मगर अभी एक आदमी धड़ामसे कूदा था। वह कहता था तू मेरी औरत है।

मन०—[अलग] ओहो, शादी होते देर नहीं, यार लोग चक्कर लगाने लगे [प्रकट] नहीं, नहीं, तुम्हारा मैं ही मर्द हूँ। इधर देखो, अच्छी तरहसे पहचान लो और लो प्यारी, पतिव्रत धर्मके बराबर·········

बु०—चूल्हेमें गया तुम्हारा पतिव्रत-धर्म! वह फिर पहुंचा डण्डा लिये हुए। वह, वह।

मन०—अरे डण्डा लिये हुए है। बाप रे बाप, (बड़ेसे देवदारके सन्दूकमें घुस जाता है) प्यारी, घबड़ाना मत। मैं यहीं हूँ, तुम्हारे पास ही। मगर तुम उसे बताना मत, मैं यहाँ पर छिपा हूँ और याद रखना प्यारी, पतिव्रत-धर्म औरतको सब आफतोंसे बचाता है।

बु०—[अलग] वाह! बे डरपोक। औरतको पति-व्रत-धर्म बचायगा, मगर मर्दोंको अब बकस बचाया करेगा।

मन०—(बकसके भीतरसे) देखो, राजा नल अपनी दमयन्तीको पतिव्रत-धर्म हीके भरोसे जङ्गलमें अकेली छोड़ गये थे, अकेली। और तुम्हें क्या, मैं तो तुम्हारे पास ही हूँ।

बु०—अब देखिये तमाशा। वह दूल्हा नम्बर २ भी

आ रहा है। इसके लिये मुहब्बतके दांव-पेंचमें ज़रा मसीटकी जरूरत है; क्योंकि जवानोंको फँसानेके लिये नखरेमें थोड़ी-सी काली मिर्च भी चाहिये।

[कम्बख्तलालका आना और बुद्धका मुँह
फेरकर खड़ा होना)

कम्बख्त०—वाह! वाह! कैसी प्यारी अदा है! बड़ी तदबीरसे ऐसी जोरू नसीब हुई है।

बु०—(अलग) बेशक! क्योंकि बेवकूफ बनना तुम्हारी तक़दीरमें लिखा था।

कम्बख्त०—नलिनी प्यारी, मैं तुम्हारी खाली तारीफ ही सुनकर तुम्हारे पीछे दीवाना था।

बु०—तो फिर!

कम्बख्त०—यह रुखाई तो और भी गज़ब ढा रही है प्यारी।

गाना

बु०—हाँ हाँ, पकड़ो न हाथ, जिया कांपे हमार।
दिल धड़के हमार, जिया कांपे हमार॥

कम्ब०—मानो गोरी, बतियां मोरी, छतियां लगोरी।
तनमें, मनमें, जियामें, हियामें, राखूँ तुमको यार॥

मनहूस देवदारके सन्दूकमें घुस जाता है। कम्बख्तलाल आता है और कुछ मुँह फेरकर खड़ा हो जाता है। (पृष्ठ ४४)
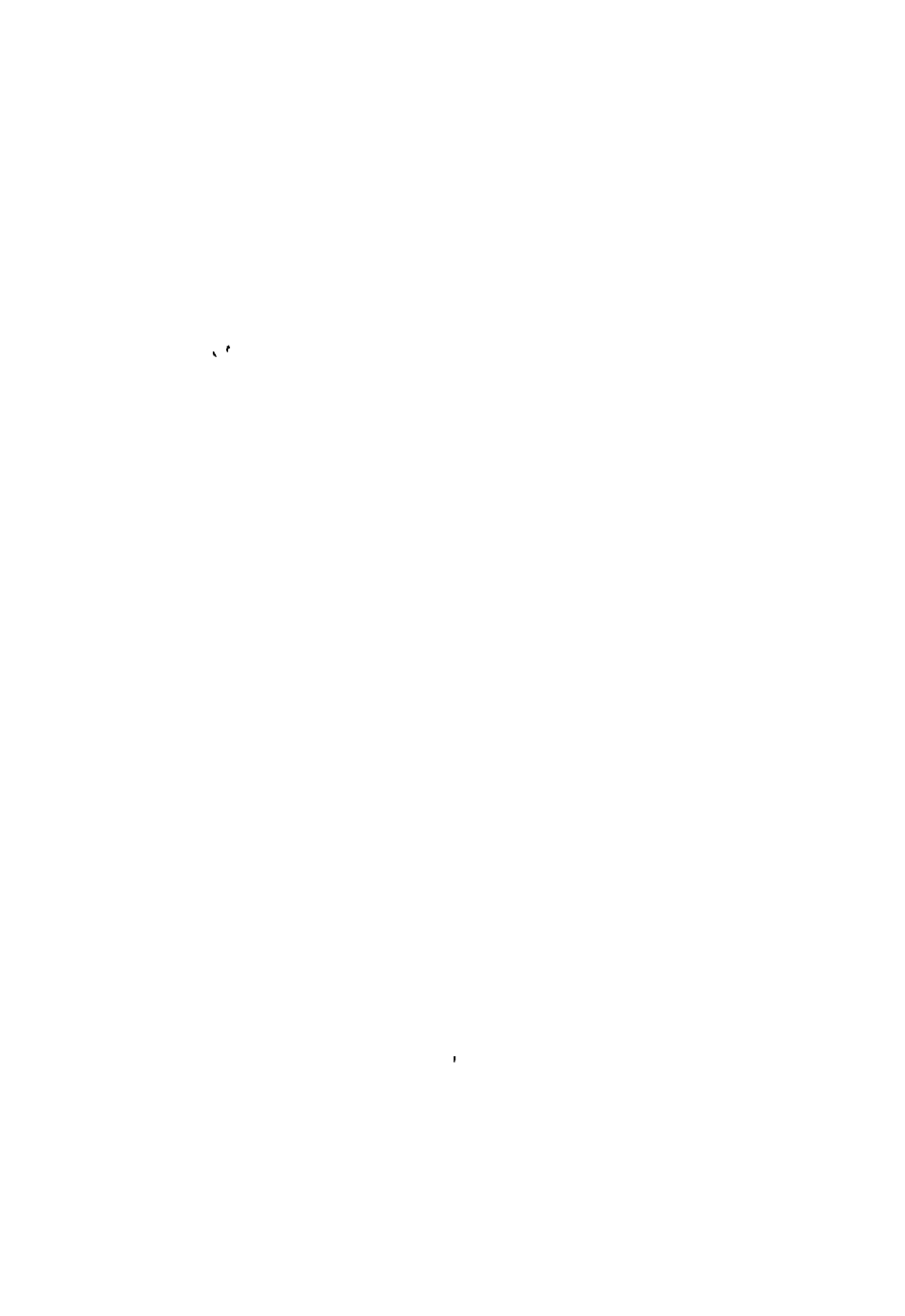
बु०—अटपट यह बतियां सुनके; धड़के छतियाँ,
छोड़ो बहियां, फूटी चुड़ियां हाय! सइयां हाय हाय!
छोड़ो छोड़ो जी हाथ, दूँगी गाली हजार।

कम्ब०—क्यों, क्यों प्यारी इतनी बिगड़ती क्यों हो?

बु०—जी हां, अच्छे आये प्यारी कहनेवाले। शादी करके अकेली घरमें छोड़ गये। गोया जोरू न हुई घर रखने-वाली हुई।

कम्ब०—क्या करूँ प्यारी, मैं अपनी सौतेली मांके मारे बेहद परेशान हूँ। अभी कलह उसकी अच्छी तरहसे मरम्मत की थी, मगर आज भी दो-एक डण्डे लगानेमें देर हो गई।

मन०—(बक्ससे थोड़ा सर निकाल कर) प्यारी, पति-व्रत-धर्म याद रखना (गड़ापसे सर नीचे कर लेता है।)

बु०—औरतों ही को मारना आता है या किसी मर्दको भी तुमने ठोंका है?

मन०—(सर निकाल कर) पतिव्रत-धर्म। हां, भूलने न पावे।

कम्ब०—अरे एक दफे? मेरे बापसे पूछो, कभी मैं लड़ाईमें दबा हूँ उनसे?

मन०—(सर निकाल कर) पतिव्रत-धर्म। (गड़ापसे सर नीचे कर लेता है।)

कम्ब०—और देखो बिस्मिलियाकी नाक मैंने ही काटी थी, एक रोज बुधुआको मैंने ही पटका था। सरकारको मेरी बहादुरीकी खबर हो जाय तो मैं फौजी अफसर हो जाऊँ।

बु०—(अलग) वाह बेटा, बुधुआ हीको पटककर बहादुर बन गये। (प्रकट) अच्छा, तो तुम्हें लड़ना होगा!

कम्ब०—किससे ? तुमसे ? आओ मैं कब हटनेवाला !

मन०—(सर निकाल कर) यही वक्त है प्यारी पतिव्रत धर्म दिखानेका।

बु०—मुझसे नहीं, एक आदमीसे।

कम्ब०—अरे ! एक आदमीसे।

बु०—हां, एक बुड्ढेसे।

कम्ब०—आह ! तब क्या पूछना है। यों उठाके पटकूँगा। यह पेंच लगाऊँगा। प्यारी, मैं कुश्ती भी लड़ चुका हूं। अरे बिजलीकी तरह उसके ऊपर फट पड़ूँगा।

मन०—प्यारी पतिव्रत-धर्म (जल्दीसे सर नीचे कर लेता है।)

बु०—वह बुड्ढा यहीं कहीं छिपा है। जबसे तुम गये हो तबसे मुझे तंग कर रहा है और कह रहा है कि तू मेरी औरत हो जा।
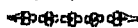
कम्ब०—तुम्हें खूब मालूम है, यहीं छिपा है ?

(जाना चाहता है)

बु०—हां, मगर तुम जा कहां रहे हो ? ठहरो, ठहरो, अजी ठहरो।

कम्ब०—मैं उससे मैदानमें लड़ूँगा। यहांपर लड़नेसे तुम घबड़ा जाओगी और गवाहीमें पकड़ी जाओगी। मुझे मत रोको, मुझे जाने दो।

बु०—वाह, वाह, तुम यहीं लड़ो। वह लो, दरवाजा पीट रहा है। आ गया, आ गया; मैं जाती हूँ दरवाजा खोलने।

(बुड्ढ़का जाना)

कम्ब०—अरे ठहर जा। जल्दी न कर। हाय (इधर उधर दौड़कर) अरे मोहल्लेवालो दौड़ो। इस घरमें खून होने-वाला है। अरे ! कोई ईश्वरके लिये पुलिसवालोंको खबर कर दो। हाय ! कोई लड़ाईके पहले जल्दी पहुँच जाओ। हाय ! अब क्या करूँ ?

बु०—(झाँककर अलग) बस; इधर-उधर आग लगाने हीमें तेजी थी। जालमें, मक्कारीमें, दगाबाजीमें बहादुर थे। अब बहादुरी कहां गई ? तेरे कमीनेकी।

(कम्बख्तलाल कभी कोनेमें छिपता है, कभी आरपाईके नीचे छिपता है। आखिरमें जाकर बक्सका ढकना उठाकर उसमें घुसना चाहता है।)

कम्ब०—कौन ? मेरा बाप !

मन०—कौन ? मेरा बेटा कम्बख्तू !

कम्ब०—आप यहाँ क्या करने आये ?

मन०—और तू यहां किस लिये आया ?

(झांककर अलग) अब चले बाप-बेटोंमें जूतियां, देर काहेको है ?

कम्ब०—मैं-मैं-मैं अपनी औरतके पास आया।

मन०—चुप बे। अब जो यह बात कही तो मुँह नोच लूँगा।

कम्ब०—क्यों क्यों ? अब चाहे नाराज हों या जो कुछ हों, मैंने तो उससे शादी कर ली।

मन०—अबे ओ, जबान सम्हालके बातें करता है कि नहीं, वह मेरी औरत है।

कम्ब०—ओहो ! अब मैं समझा, आप ही हैं।

मन०—हाँ, तुम्हारा बाप।

कम्ब०—जनाब, मैं आपकी बेवकूफी सुन चुका हूँ।

यहाँपर मुझे आप अपना बेटा मत कहिये। नहीं तो वह जान लेगी तो मेरी इज्जतमें बट्टा लग जायगा।

बु०—(अलग) वाह बे इज्जतवाले, वाह ! अच्छा ज़माना आया। अब बेटेकी इज्जत अपने बापका नाम लेनेसे चली जाती है।

मन०—अबे क्या ? तुझे बेटा न कहूँ तो क्या अपना बाप कहूँ ?

कम्ब०—यह अख्तियार है आपको, मगर बेटा मत कहिये।

बु०—(अलग) अहा हा ! अख्तियार है। वाह ! बापके बाप होनेमें अख्तियार है। बापके बेटा होनेमें शर्म।

मन०—देखो तो बदमाशको। मेरी औरतपर कब्जा करना चाहता है और मेरा बेटा होनेसे भी इन्कार करता है।

कम्ब०—(बुद्धू को देखकर) आओ, प्यारो यह बुड्ढा मुझे भी तंग कर रहा है। तुम्हारा रहना यहाँ ठीक नहीं। आओ, चलो यहांसे। (बुद्धू का हाथ पकड़कर उसे ले जाना चाहता है।)

मन०—हाय ! हाय ! अबे उसे कहां लिये जाता है ?

(दौड़कर कम्बख्तलालको धक्का मार बुद्धू का हाथ छुड़ाकर उसे स्टेजके दूसरी तरफ घसीट ले जाता है।)

कम्ब०—(मनहूसलालका हाथ पकड़कर उसे स्टेजके पहले

किनारेपर ले जाता है) देखिये अब अपनी इज्जत चाहते हैं तो ज्यादे हाथ-पैर न फैलाइये नहीं तो मैं अपनी औरतके सामने डरपोक नहीं बनना चाहता।

मन०—(कम्बख्तलालके मुँहपर तमाचा मारकर) हराम-जादा, नालायक़, बदजात, फिर कहेगा उसको अपनी औरत ?

कम्ब०—अरे ! अपनी औरतको भी अपनी औरत न कहूँ ?

मन०—अबे ओ उल्लू ! वह मेरी औरत है ?

कम्ब०—(बुद्धूको एक तरफ ले जाकर) तू मेरी औरत है न ?

बु०—हाँ।

कम्ब०—देखिये, यह मेरी औरत है मेरी।

मन०—(बुद्धूको दूसरी तरफ खींच ले जाकर) तू तो मेरी औरत है न ?

बु०—हाँ।

मन०—अबे देख, यह मेरी औरत है मेरी।

(इतनेमें एक तरफसे दुखदेई और दूसरी तरफसे भग-मानी आ जाती हैं]

दुखदेई—(मनहूससे) यह मुई कौन है ?

भगमा०—(कम्बख्तसे) यह निगोड़ी कौन है ?
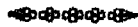
मन०—(दुखदेईसे) अरे तू किधरसे पहुँच गई ?

कम्ब०—(भगमानीसे) तुझे यहाँ किसने बुलाया ?

दुखदेई—मैं तेरी नानीकी खातिर करने आई हूँ।

मन०—चुप ! वह नानी नहीं, वह मेरी औरत है।

दुखदेई—अब निगोड़ी बेसवा भी—

मन०—ए-ए-ए-मुँह नोच लूँगा, जो फिर उसे यह कहेगी।

कम्ब०—(भगमानीसे) यह मेरी—ई, वह है।

बु०—(दुखदेईको अलग लाकर) सुनिये इधर मैं बताऊँ। असलमें मैं आपकी पतोहू हूँ। आपके लड़केने मुझसे चुपचाप शादी कर ली है। मगर इनको समझाइये, जरा समझते ही नहीं, बार-बार कहते हैं कि लड़केको मारो झाड़ू, तू मेरी होके रह।

दुखदेई—झाड़ू मारूँ ऐसे बूढ़ेको। अरे! क्यों रे बूढ़े, अपनी पतोहूको अपनी औरत बनाना चाहता है ?

बु०—(भगमानीसे) देखो, देखो, बुढ़िया तुम्हें गाली दे रही है।

मन०—अब नानीसे पतोहू हो गई !

कम्ब०—(भगमानीसे) बात यह है कि तुम्हें रोटी बनानेमें होती थी तकलीफ, इसलिये इसको मैंने अपनी औरत—

बु०—(भगमानीको अलग खींचकर) मैं बताती हूँ। सच बात तो यह है कि मैं आपके ससुरकी रखेली औरत हूं। मगर यह नहीं मानते। आप इनको समझाइये। मुझे तंग कर रहे हैं और कह रहे हैं कि तू उनको छोड़के मेरे साथ रह।

भगमानी—(कम्बख्तसे) ऐ! हैं! तुम्हारी बिलकुल ही मत मारी गई क्या? वह तुम्हारी माँ हुई कि नहीं? क्या अपनी मां हीको घर बिठालोगे?

बु०—(दुखदेईसे) देखो-देखो, तुम्हें वह कैसी-कैसी बातें कह रही है! बाप रे बाप!

दुखदेई—(दौड़कर भगमानीको झाड़ू उठाकर मारती है) क्यों री चुड़ैल, क्या कहा तूने? फिर तो कह।

भगमानी—अरे, बाप रे बाप! हाय! तेरे भांटेमें आग लग जाय। तुझे भवानी चबाय जाय,

दुखदेई—(मारती है) ले, और ले, ले ले।

भगमानी—(दूसरा झाड़ू लेकर मारती है) आओ, तू भी लेती जा। ले, यह ले, यह ले।

बु०—देखो आजकलके गये घरोंकी सास-पतोहूकी लड़ाई। हाँ हाँ, रुकने न पावे।

[बाप-बेटा दोनों छुड़ाने जाते हैं, मगर सब झाड़ू इन्हीं दोनोंके सरपर पड़ने लगती है]

मनहूस०—अरे ! अरे ! यह क्या, मेरी खोपड़ीको दोनोंने चांदमारी बना लिया ।

कम्ब०—अरे ठहरो, मुझे निकल जाने दो । बाप रे बाप !

[मनहूस और कम्बख्तका भाग जाना और उनके पीछे बुढ़देई और भगमानीका मारपीट करती हुई जाना]

बु०—आहा हा ! वाह रे उल्लुओ !

(मनहूसलालका फिर आना)

मनहूस०—धत्तेरेकी ! बड़ी मुश्किलसे जान बची । अरे सब चले गये ! अच्छा हुआ मेरी प्यारी तो है । आओ, भाग चलो । खूब मौका मिला ।

बु०—कैसे चलूं, मेरे पैरमें तो मोच आ गई ।

मनहूस०—तब क्या किया जाय ? अच्छा आओ गोदमें उठा लूं ।

बु०—यों न जाऊँगी ।

मनहूस०—कन्धेपर चलोगी ? चलो तो सही किसी तरकीबसे ।

बु०—मैं घोड़ेपर जाऊँगी ।

मन०—अररर ! इसमें तो फौजी बू आ गई । इस वक्त घोड़ा कहांसे लाऊं ?

बु०—कहींसे। अगर नहीं मिल सकता तो तुम्हीं घोड़ा बनो।

मन०—कौन! मैं-मैं-मैं-मैं घोड़ा बनूं?

बु०—तो हर्ज क्या है, अन्धेरेमें कौन देखेगा कि, घोड़ा है कि गदहा है कि तुम हो?

मन०—(अलग) ठीक कहती है कोई पता न पावेगा। (प्रकट) मगर यह आज ही देखा कि बुढ़ापेमें औरतके लिये घोड़ा बनना पड़ता है।

बु०—अजी बुढ़ापेमें तो औरतको सरपर भी चढ़ाना पड़ता है।

म०—गोदमें क्यों नहीं चलती?

बु०—गोदमें लिये लिये तुम कहीं भहरा पड़ोगे। एक टांग टूटी है, दूसरी भी टूट जायगी।

मन०—[अलग] ठीक कहती है, है समझदार।

बु०—और दूसरे दो पैरोंसे कहाँतक चलोगे और कब-तक चलोगे? चारों हाथ पैरसे दमके-दममें कहांसे कहाँ हो रहोगे।

मन०—[अलग] बहुत ठीक, दूरकी सूझी।

बु०—उस मूए मर्दके मुंहमें आग लगा दूं जो अपनी

औरतके दुःखमें काम न आवे। वह लो, तुम्हारा बेटा फिर आ रहा है।

मन०—अच्छा, जल्दी कर। मगर देख, कहना मत किसीसे। हां समझी। ले डण्डा पकड़। अच्छा भाई [घोड़ा बनता है], मगर देख बहुत जोर न लगाना।

बु०—क्या तुम बूढ़े हो ?

मन०—नहीं नहीं, कौन कहता है ? अफगानिस्तानकी लड़ाईमें जरा कमरमें चमक आ गई थी।

बु०—ओहो ! [पीठपर चढ़कर] यह पुरानी रोशनीपर नई रोशनीने चढ़ाई ठानी है।

(प्रस्थान)

चौथा दृश्य

दालान

(कम्बख्त और बिगड़ेदिलका बातें करते हुए आना)

कम्बख्त—आपने अपनी भांजीका मेरे ही साथ शादी की है न ?

बिगड़े—हां, हां, तुम्हारे ही साथ।

कम्बख्त०—क्या और भी कोई आपकी भांजी है ?

बिगड़े०—क्यों ? क्या उससे भी अपनी ही शादी करोगे ?

कम्बख्त०—नहीं, मेरे बाप कहते हैं कि नलिनीसे मेरी शादी हुई है।

बिगड़े०—मालूम होता है तुम्हारे बापने भी कहीं चोरी छिपे शादी करके अपनी औरतको अलग छिपाके रखा है, मगर धोखेमें तुम्हारे मकानमें पहुँच गये। इसलिये नलिनीको अपनी औरत समझने लगे।

कम्बख्त०—हां-हां, ऐसा ही कुछ गोलमाल है। मैं जाकर अपने बापको समझाये देता हूँ।

[कम्बख्तलाल जाता है। बिगड़ेदिल ताली बजाता है और धोतीप्रसाद आता है।]

बिगड़े०—क्यों जनाब, बाबू धोतीप्रसाद, पहचाना आपने इस आदमीको? यह वही है जिसने खास अपने मतलबके लिये आपसे कहा था कि अपने भतीजेकी शादी नलिनीसे भूलकर भी न कीजियेगा।

धोती०—हाँ हाँ, क्योंकि वह बुरे खान्दानकी है। मगर इसने खुद कर लिया! मालूम होता है, अभी इसके बापको नहीं मालूम है कि वह आप ही की भांजी है, नहीं तो वह इसका छुआ पानी न पीते। वह खान्दानके बारेमें बड़े कट्टर हैं। यह कम्बख्तलाल जरूर जातसे बाहर कर दिया जायगा।

बिगड़े०—आप कहाँकी बातें कर रहे हैं? अजी जनाब जमानेकी हवा ऐसी बदली है कि हमें डर है कि कहीं आपके ऐसे कट्टर लोग खुद न जातसे बाहर हो जायें। अच्छा, जिसको आप खान्दानवाला समझते हैं वह मनहूसलाल चला आ रहा है। असलमें आपको इसीने शादी करनेसे मना किया था। आप वहीं छिप जाइये।

(धोतीप्रसादका जाना और मनहूसलालका आना)

मन०—ईश्वर न करे किसीके नालायक लड़का हो। वह दो दिनका लौण्डा चला है मेरी आँखोंमें धूल झोंकने। कम्बख्त कहता क्या है कि आपने कहीं और जगह शादी की है और नलिनीसे मेरी शादी हुई है। तेरी ऐसी-तैसी—कौन,

आप बिगड़ेदिल ? अल्लाह, आदाब-अर्ज है जनाब! क्या आपके मोहल्लेमें किसी और लड़कीका नाम नलिनी तो नहीं है ?

बिगड़े०—नहीं नहीं, क्यों ?

मन०—मेरा लड़का रुम्मनलाल कहता है कि नलिनी-से मेरी शादी हुई है।

बिगड़े—जरूर उसका दिमाग खराब हो गया है।

मन०—यही मैं भी समझता हूँ।

(धोतीप्रसादका आना)

धोती०—क्यों, मुन्शीजी ! सुना कुछ ? दूसरोंके लिये आप बहुत कहते-फिरते थे, लेकिन खुद आपके लड़केने नलिनीसे ब्याह कर लिया है।

मन०—आपको नहीं मालूम। लड़का मेरा पागल हो गया है। वह सबसे यही कहता फिरता है। असलमें तो शादी नलिनीसे मेरी हुई है।

धोती०—आपकी ! ! !

मन०—हां जनाब, मेरी। सैकड़ोंमें कहूँगा मेरी।

धोती०—मगर आपहीने तो उस वक्त मुझे मना किया था कि अपने भतीजे मदनकी शादी नलिनीसे हर्गिज मत करना; क्योंकि वह वेश्याके पेटसे है।

मन०—जब थी, अब तो नहीं है।

धोती०—अरे! आपहीने तो अपने मुँहसे कहा था!

मन०—अजी आपहीके ऐसे बेवकूफ लोग दूसरोंके बहकानेमें पड़ते हैं।

धोती०—तो क्या वह झूठा था?

मन०—सरासर।

[बिगड़ेदिल धोतीप्रसादको फिर छिप जानेके लिये इशारा करता है। धोतीप्रसाद जाता है और कम्बख्तलाल आता है]

कम्ब०—हां पूछिये, आप इनसे पूछिये कि इनकी भांजीकी किसके साथ शादी हुई है।

मन०—हां, पूछ, तू ही पूछ।

कम्ब०—[बिगड़ेदिलको अपने पास लाकर] आपकी भांजीकी शादी मेरे साथ हुई है न?

बिगड़े०—[धीरेसे] हां।

कम्ब०—(उछलकर) देखिये, मेरे साथ, मेरे साथ।

मन०—[बिगड़ेदिलको अपने पास लाकर] आपकी भांजीकी मेरे साथ शादी, हुई है न?

बिगड़े—[धीरेसे] हां।

मन०—[उछलकर] मेरे साथ, अब लो। [बिगड़ेदिलसे] मगर यह क्या कहता था कि मेरे साथ, मेरे साथ?

बिगड़े०—(धीरे से) मैंने आपसे कहा था न कि इसका दिमाग़ ख़राब हो गया है।

मन०—ठीक बात है, इसका दिमाग बिल्कुल खराब हो गया है।

बिगड़े०—(कम्बख्तलालसे) तुम्हारे बाप सठियाके खप्ती हो गये। देखते नहीं, कैसे पागल हो रहे हैं।

कम्ब०—बस यही बात है। खप्ती हो गये हैं।

मन०—यों इससे पीछा न छूटेगा। बुलाइये डाक्टर-को यह पागल हो गया है।

कम्ब०—हां, बुलाइये डाक्टरको, इनके दिमागकी जांच करें।

(बिगड़ेदिलका जाना)

मन०—अरे, होशमें आ, होशमें।

कम्ब०—अजी, आप अपनी आंखें खोलिये, आंखें।

(बिगड़ेदिलके साथ डाक्टरका आना)

बिगड़े०—लीजिये, डाक्टर साहब आ गये।

मन०—आइये डाक्टर साहब, इधर आइये···

कम्बख्त०—नहीं साहब, पहले मुझसे सुनिये···

(दोनों डाक्टरको पकड़कर अपनी तरफ खींचते हैं।)

मन०—(डाक्टरका हाथ पकड़कर) यहां कहां जाते हो।
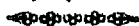
कम्बख्त०—(डाक्टरका दूसरा हाथ पकड़कर अपनी तरफ खींचते हुए) झटसे मैं आपके कानमें बात कहे देता हूँ।

डाक्टर—अरे, छोड़ो, मुझे छोड़ो, नहीं तो डाक्टर बुलानेकी मुझे भी जरूरत पड़ेगी।

मन०—डाक्टर साहब, मैंने—

कम्बख्त०—इन्होंने नहीं, मैंने उसके साथ—

मन०—चुप। हाँ, मुझसे—

(डाक्टरकी दाहिनी तरफ मनहूसलाल खड़ा होता है और बाईं तरफ कमबख्तलाल और दोनों डाक्टरके कानमें एक साथ बोलते हैं।)

कम्बख्त०—नलिनी जो कि बिगड़ेदिलकी भाञ्जी है, रोज मंगलको बारह बजे···

मन०—मंगलके दिन आठ बजे रातको मेरी शादी नलिनीके साथ···

डाक्टर—उफ! ओः, उफ! कानका पर्दा फटा!

मन०—बात यह है, डाक्टर साहब···

कम्बख्त०—(मनहूसलालको अलग हटाकर खुद सामने आता है।) इनकी बातोंको आप···

मन०—(कम्बख्तलालको ढकेलकर) इसका दिमाग···

कम्ब०—(मनहूसको हटाते हुए) असल बात तो यह है। (मनहूस उसको फिर ढकेल देता है)

डाक्टर—आयं ! आयं दोनों नशेमें हैं।

मन०—नशेमें नहीं, यह पागल है।

कम्ब०—डाक्टर साहब, यह होशमें नहीं है।

मन०—हट उधर। मैंने एक शादी की···

कम्बख्त०—झूठ, वह शादी मुझसे हुई।

मन०—चुप। डाक्टर साहब, इसका दिमाग खराब हो गया है।

कम्ब०—अजी, सिड़ी है सिड़ी यह। बिल्कुल पागल।

डाक्टर—हमारी समझमें तुम दोनों पागल हो।

(बुद्धूका आना।)

बु०—और डाक्टर भी पागल हैं।

डाक्टर—अररर ! यह क्लोरोफार्मकी शीशी कहांसे निकल पड़ी ?

मन०—अरे यह पर्देसे बाहर हो गई ?

कम्ब०—अहा हा ! प्यारी, तुम कहां थी ?

मन०—अब बच्चा कहो प्यारी, ऐसा मारूँगा झापड़ मुँह ही टूट जायगा।

डाक्टर—(अलग) देखते ही दिलका नब्ज बिगड़ गया।
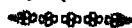
कम्ब०—सुनिये डाक्टर, यह औरत मैं···

मन०—(बात काटकर) यह मेरी जो······

कम्बख्त०—(मनहूसका मुंह बन्द करता है।) आप इसीसे पूछिये।

डाक्टर—क्या पूछूँ ?

मन०—पहले मेरा नाम लेके पूछिये कि तू मनहूसलाल की कौन है।

डाक्टर—(बुढ्ढ़ी से) तू मनहूसलालकी कौन है ?

बु०—(धीरेसे) लड़की।

डाक्टर—कहती है लड़की।

मन०—तुम्हारा सर।

कम्बख्त०—हां, हां, पतोहूसे मतलब है। मेरा नाम लेके पूछिये कि तू कम्बख्तलालकी कौन है।

डाक्टर—तू कम्बख्तलालकी कौन है ?

बु०—(धीरेसे) बहिन।

डाक्टर—यह तुम्हारी बहिन है।

कम्ब०—तुम हो बहिरे।

मन०—हां, अपने कानकी दवा करो तुम। यह मेरी औरत है !

कम्ब०—यह मेरी जोरू है।

डाक्टर—अव्वल नम्बरके पागल हैं दोनों (बुद्धूसे) तू मेरे साथ रहेगी, तुझे मैं बड़ी जल्दी डाक्टरी सिखा दूँगा।

बु०—(मुंहपर तमाचा मारकर) मुए, अपना मुंह बनवा पहले।

डाक्टर—बापरे बाप! अरे, तू समझती तो है नहीं। वह दोनों तो जायंगे पागलखाने और तू मेरे साथ रह तो तुझे मैं नर्स बना दूँगा।

मन०—(डाक्टरको धक्का मारकर) अरे, ओ डाक्टरकी दुम, उससे क्या बातें कर रहा है ?

डाक्टर—उफ़! उफ़! मैं ज़रा थरमामेटर लगा रहा था। (इशारेसे बुद्धूसे) हाँ, हाँ, रही रही—(मनहूससे) यह मेरी वह है।

मन०—वह कौन है ममानी ?

डाक्टर—(अलग) घपलेमें अगर वह मिल जाय तो क्या बुरी है। (प्रकट) क्या नामके क्या नामके (बुद्धूसे इशारेमें) हां, हां, रही—(मनहूससे) मेरी औरत।

मन०—लीजिये यह तीसरा इक़रार भी पैदा हो गया। सबकी यह औरत ही है कि किसीकी मां भी है ?

डाक्टर—(अलग) जब उस उमरको आयेगी तो यह सबकी मां भी कहलायेगी।

कम्ब०—यह डाक्टर पागल है।

मन०—जरूर पागल है और बहिरा भी है।

बु०—और काठका उल्लू भी है।

डाक्टर—अरे क्या तू इसकी है?

बु०—हूँ।

डाक्टर—और उसकी?

बु०—हाँ।

डाक्टर—यह लड़की भी पगली है।

[धोतीप्रसादका आना]

धोती०—इस गड़बड़झालेको देखते-देखते मैं भी पागल हुआ जाता हूँ। अरे तू लड़की कौन है?

मन०+कम्बख्त०+डाक्टर+मेरी औरत, मेरी औरत, मेरी औरत।

बु०—[एक हाथमें बेल्ट खोलता है और दूसरे हाथसे सरका नकली बाल हटाता है।] मैं हूँ तुम लोगोंका······

डा०—अरे, यह तो औरतसे मर्द हो गयी!

मनहूस+कम्बख्त०—अरे कौन बुधुआ?

बु०—जी, हुजूरका गुलाम।

[बिगड़ेदिलका आना]

डा०+धो०—क्या गड़बड़झाला है, कैसा घुटाला है,

समझमें आता है कुछ भी न खाक बला।

बु०+बिगड़ेदिल—यारोंका आला यह ढंग निराला है,

हजरतका काला है, देखोजी मुँह बना।

डा०+धो०+बु०+बि०—अहा! खूब बना, खूब बना,

खूब बना, हाँ, हाँ, हाँ।

मन०+कम्ब०—पा गया मैं अपनी सजा

अब न करूंगा ऐसा खता हां, ऐसी खता तोबा।

ड्राप

कुरसी-मैन

इस प्रहसनमें म्युनिसिपल मेम्बरीकी दौड़-धूपका खाका खींचा गया है। इस सम्बन्धमें आजकल जितनी बुराइयाँ होने लगी हैं, उनकी बुरी तरहसे खबर ली गयी है और इस तरहसे मेम्बरीके उद्देश्यको भी झलकानेका उद्योग किया गया है। यह सन् १९२१ में लेखकके परम मित्र श्रीमान् ए० डी० पन्तजी, डिप्टी कलेक्टरके अनुरोधपर लिखा गया और 'चाँद' और 'गोंडा-गजट'में प्रकाशित हुआ था।
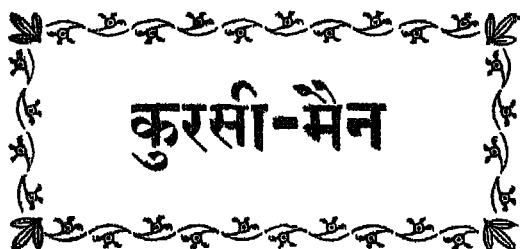
इस प्रहसनके पात्र और पात्री

पात्र—

पात्र	
गब्बूलाल	मेम्बरी चाहनेवाले
धोतीप्रसाद	मेम्बरी चाहनेवाले
गड़बड़चन्द	मेम्बरी चाहनेवाले
झटपटनाथ मुकरजी	मेम्बरी चाहनेवाले
बुद्धू धोबी	मेम्बरी चाहनेवाले
धौंकलदास—	गड़बड़चन्दका बाप
वोटरचन्द—	एक वोटर
शमशेर अली—	कान्सटिबलान
बन्दूकहुसेन—	कान्सटिबलान
चार आदमी ।	
भङ्गी ।	

पात्री—

गब्बूलालकी स्त्री ।

पहला दृश्य

गब्बूलालका मकान

(गब्बूलाल और उनकी बीबी)

गब्बू०—सुना बीबी—इस साल तो ५०० में ४८५ वोट मेरे शर्तिया हैं। किसीके उखाड़े उखड़ नहीं सकते।

बीबी—यह तो तुम बराबर दस सालसे कहते आ रहे हो। मगर मैम्बर आजतक न हुए।
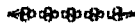
गब्बू०—तब बात और थी। मगर इस साल मैं जरूर होऊँगा, क्योंकि मेरे ४८५ पक्के हैं।

बीबी—आखिर तुम मेम्बरी के लिये क्यों मरे जाते हो ? किस बातकी तुम्हें कमी है ?

गब्बू०—बीबी, दौलत तो काफी कमा चुका। तीर्थ-व्रत भी सब कर आया हूँ। अब सिर्फ एक ही हौसला बाकी है। यह भी अगर ईश्वर पूरा कर दें तो आबरू बन जाय।

बीबी—तुम तो ऐसा कहते हो कि मालूम होता है तुम्हारे पास इज्जत-आबरू कुछ भी नहीं है। इसीलिये अब मेम्बरीकी बदौलत इज्जत कमाना चाहते हो ? खूब !

गब्बू—तुम नहीं समझती बीबी ! अरे मेम्बरी तो वह चीज है कि इसकी बदौलत इज्जत क्या रुतबा, ओहदा, अख्तियारात और आनरेरी मजिस्ट्रेटी सब कुछ मिल सकती है और तारीफ यह कि बिना किसी किस्मकी काबिलियत हासिल किये हुए।

बीबी—लो, रहने दो। रात-रातभर वोटकी फिक्रमें दरवाजे-दरवाजे ठोकरें खानेमें बड़ी इज्जत है। भंगी, चमार, कुंजड़े, कबाड़ियोंके घर जाकर आबरू गँवानेमें बड़ी इज्जत है ? चलो, हटो। जो कुछ बाप-दादोंकी इज्जत है भी, उसे तुम मेम्बरीकी दौड़-धूपमें और भी खाकमें मिला रहे हो।

गब्बू—तो इससे क्या ? अपना मतलब है। प्यासा ही कुएंके पास जाता है।

बीबी—अपना मतलब कैसा ? मैं तो समझती थी कि मेम्बरीको लोग पब्लिकको खिद्मत करनेके लिये चाहते हैं।

गब्बू—हाँ, वोट पकड़ते वक्त वोटरोंको इसी तरह समझाकर उन्हें फाँसा जाता है। मगर सच पूछो तो यह बात नहीं है। इसमें तो वह शान है कि देखोगी दरवाजेपर रोज झाड़ूवालियां झाड़ू लगायेंगी। भिश्ती सुबह शाम आकर पानी छिड़केगा। फाटकपर रातभर म्युनिसिपेलटी-की लालटेन जला करेगी और तारीफ यह कि सब बातें बिना पैसेके !

बीबी—आग लगे ऐसे ख्यालपर। ईश्वरकी कृपासे तुम ऐसे मुहताज नहीं हो कि भीखके टुकड़ोंके लिये जान दो। एक भिश्तीके बदले तुम दस आदमी खुद नौकर रख सकते हो। एक लालटेनकी जगह दस बिजलीके लेम्प अपने दामों-से जलवा सकते हो।

गब्बू०—सब कुछ कर सकता हूँ। मगर बिना मेम्बरी-के हुकूमतकी शान तो नहीं आ सकती।

बीबी—हुकूमत ? किसपर ? चार भंगियोंपर ? छिः ! ऐसी ही तुम्हें हुकूमतका बड़ा शौक था तो तुम अपनेमें वैसी

काबिलियत क्यों नहीं हासिल करते ? अपने मुल्कको जानो-दिलसे ऐसी खिदमत क्यों नहीं करते जिससे अफसर-मातहत सबोंकी निगाहमें तुम्हारी इज्जत होती। सभी तुम्हारी दबदबा मानते। तमाम पब्लिक तुमपर एतबार करके खुशी-खुशी तुम्हें अपने हर काममें अपना सरताज बनाती। अगर ऐसे तुम होते तो पब्लिक खुद तुम्हारे पास दौड़-दौड़कर आती। तुम्हें फिर कातिकके कुत्तेकी तरह गली-गली मारे फिरनेकी तकलीफ न उठानी पड़ती।

गब्बू०—बेवकूफ हो। पहिले मेम्बर हो जाने दो तो मुल्ककी खिदमत तो करूँ होगा। देखती हो, शहरकी सड़कें मोटर और गाड़ियोंसे कैसी खराब हो रही हैं। मेम्बर होते ही इनपर ऐसा बेढब टैक्स लगाऊँ कि इनका चलना ही बन्द हो जाय। फिर देखना, मुल्ककी सड़कें ऐसी साफ-सुथरी और चिकनी रहें कि देखनेवालोंका यही जी चाहे कि उसपर सो रहें।

बीबी—क्या कहना है ! और हो सके तो बादलोंपर भी टैक्स बाँध देना ताकि शहरकी नालियोंपर भी कोई खराबी न आये। और अगर सड़कों और गलियोंकी हिफाजतका तुम्हारा ऐसा ही ख्याल है तो मेरी एक राय मानो। वह यह कि तुम मेम्बरीके उम्मीदवारोंपर खूब बेढब

टेक्स बँधवा दो, क्योंकि शहरकी सड़कें और गलियाँ साल भरमें मोटर और गाड़ियोंसे जितनी खराब नहीं होतीं उससे कहीं ज्यादे खराब तो मेम्बरीके उम्मीदवार लोग एक ही महीनेमें, वोट पकड़नेकी दौड़-धूपमें कर देते हैं।

गब्बू०—ठीक है, ठीक है! बड़ी दूरकी सूझी। अगर ऐसा हो जाय तो टैक्सके रुपयोंसे मुल्क भी मालामाल हो और हर सालकी तरह मेरे मुक़ाबलेमें फिर कोई कुंजड़ा, कबाड़िया खड़े होनेकी हिम्मत भूलकर भी न करे।

बीबी—छि:! छि:! ऐसे लोगोंके मुकाबलेमें तुम्हें खड़े होनेमें शर्म नहीं मालूम होती! देखो, आँखें खोलकर देखो, अगर पब्लिक तुम्हें चाहती कि तुम मेम्बर होओ तो तुमको जलील करनेके लिये ऐसे लोगोंको तुम्हारे मुक़ाबलेमें हर्गिज़ खड़ा न करती। मेरी सलाह मानो, तुम इस झगड़ेमें मत पड़ो।

गब्बू०—वाह! आज नोमिनेशनका आख़िरी दिन है। आज ही एक दफे शहरका चक्कर लगाकर अपना नाम उम्मीदवारोंमें दर्ज कराता हूँ। इतना वक्त फजूल खराब हुआ। इतनी देरमें तो मेरे दस वोट और सीधे हो जाते।

(जाता है)

दुमदार आदमी

बीबी—तक़दीरमें ख़ाक छानना बदा हो तो कोई क्या करे ?

गाना ।

न समझे अनारी, समझाय मैं हारी ।
दर दरकी ठोकर खावें,
गलियोंमें जा ख़ाक उड़ावें,
ऐरों ग़ैरोंके पैरोंपर,
अपनी नाक गवांवें, उसपर फ़रमावें
मिलेगी इज्जत भारी !
ऐसी समझपर जाऊँ बलिहारी ।

दूसरा दृश्य

सड़क
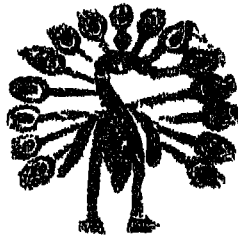
(वोटरचन्दका आना)

वोटर०—हत् तेरी मेंबरीके उम्मीदवारोंकी ऐसी तैसी ! सोते-जागते, उठते-बैठते इन लोगोंने नाकमें दम कर दिया। इधर गब्बूलालने परेशान कर रखा है, उधर धोतीप्रसाद अलग जान खाये हुए हैं और उसपर तुर्रा यह कि पब्लिकके कुछ खैर-ख्वाहोंने बुधुआ धोबीको मेरी जान खानेके लिये खड़ा कर दिया है। यह कम्बख्त तो ऐसी धमकी दिखाता है कि अगर परचा उसके नाम न डालूं तो मेरे यहां कोई धोबी कपड़ा न धोयेगा। क्या करूं। वह लीजिये, गब्बू-लाल फिर आ पहुँचे।

(गब्बूलालका प्रवेश)

गब्बू०—राम ! राम ! काका, राम ! राम ! आप तो मेरे बिरादरीके हैं और दूसरे आप मेरे काका होते हैं। आप तो मुझे परचा देंगे।

वोटर०—हां काका, अगर उस वक्त तक जिन्दा बच जाऊं तो—

गब्बू०—एं ? आप मुझे काका क्यों कहते हैं। मेरे काका तो आप हैं।

वोटर०—और मेरे भी काका आप हैं।

गब्बू०—किस नातेसे ?

वोटर०—उसी नातेसे जिस नातेसे आप मुझे काका कहते हैं। यह रिश्तेदारी बहुत ही नाजुक है, इसलिये जल्दी समझमें नहीं आती, क्योंकि परचा देनेके ठीक एक महीने पहिले यह पैदा होती है और परचा देते ही विचारी खतम हो जाती है।

गब्बू०—अच्छा, तो आप ही लोगोंके भरोसे मैं इस दफे फिर मेम्बरीके लिये खड़ा होना चाहता हूँ। देखिये बिरादरीका ख्याल रहे।

(जाता है)

वोटर०—खूब ख्याल है। मगर ईश्वरके लिए जाइये मेरी जान छोड़िये। अररर ! यह लीजिये यह दूसरा आन मरा। क्या कहूँ यह लोग तो मरनेकी भी फुरसत नहीं देते।

(धोतीप्रसादका आना)

धोती०—अल्लाह ! आप हैं ! मकानपर जनाब हाजिरी दे आया, मगर आप तो ऐसे कटे-कटे फिरते हैं कि मालूम

होता है आप कुछ नाराज हैं। जरा इन सफेद बालोंका तो ख्याल कीजिये। कहीं धब्बा न लगा दीजियेगा।

वोटर०—अजी नहीं। राम-राम कीजिये। ऐसा भी कहीं हो सकता है?

धोती०—वही तो। एक वोट मुझे तो आप देहींगे और दूसरा गड़बड़चन्दको दीजियेगा। क्योंकि वह मेरे मेलका है और काठका उल्लू भी है। हर काममें वह मेरा आँख मूंदे साथ देगा।

वोटर०—क्यों नहीं कबूतर कबूतरहीके साथ उड़ता है। मगर जनाब, मुझे नहीं मालूम था कि मेम्बरीके लिये ऐसी अनोखी क़ाबिलियतकी जरूरत पड़ती है।

धोती०—देखिये, भूलियेगा नहीं।

(जाता है)

वोटर०—जाइये। राम नाम सत्य है। अब किसी तरह इस गलीसे होकर चुपकेसे घर पहुँच जाऊँ तो खैरियत है। (कुछ दूर चलकर) अरे, इधर तो गड़बड़चन्द मय अपने बाप चौकलदासके आ रहा है। अच्छा उधर भागूँ। (दूसरी तरफ चलकर) धत् तेरेकी! इधर दूसरा यमदूत आफतदा-नाथ! ससुरजी, राम राम! मुकरजी! अब क्या करूँ?

(छिप जाता है)

(एक तरफ धाँकलदारा और गड़बड़चन्द आकर सलाह करते हैं। दूसरी तरफसे झपराटनाथ मुकरजी आते हैं।)

झप०—यह शाला कूकुर लोग बड़ा बाधा डालता है। जहाँ जहाँ चोरी-चोरी रातको बोट पकड़ने जाता है यह शाला लोग भूँक-भूँकके भण्डा फोड़ देता है। बश, वहाँ वहाँ तुरन्त गब्बूलाल और धोतीपरशाद जाकर शब चौपट कर देता है। हम इशका जरूर बदला लेगा। इशीलिये हम मेम्बर होगा जरूर करके। फिर खूब कोशिश करके 'कुरशीमैन' होगा। तब शाला कूकुर लोगपर खूब भारी-भारी 'टैक्स' लगायेगा, इश माफिक कि फिर कोई ऐसा बखेड़ेवाला और बदमाश जानवरको न पाले।

वोटर०—(छिपी हुई जगहसे) बलिहारी है बाबूजी, आपके नेक कामपर, चोर बड़ी दोआएँ देंगे।

झप०—गब्बूलाल तो मेम्बर होने शकता नहीं, उशका नाम भूलसे इश शालके लिश्टमें नहीं है। किन्तु वह भारी बेवकूफ है, उशको नहीं मालूम। अब उजरदारीका भी बखत नहीं रहा। किन्तु धोतीपरशादका खटका है। वह गड़बड़-चन्दको मिला है तो हम भी बुधुवा धोबीको शाथ किया है। जदीं गड़बड़चन्द बैठ जाए तो हम धोतीपरशादको जरूर

मार लेगा। (धौंकलदासको देखकर) वेल धौंकलदाश, आप रास्तेमें भी लिश्ट ही देखता रहता है।

धौंक०—(जल्दीसे कागज पाकेटमें रखकर) आप हैं, सलाम-सलाम।

झप०—सलाम। आप इस साल खुद नहीं खड़ा हुआ अपने लड़केको खड़ा किया।

धौंक०—हाँ सरकार, आपहीका बेटा है। बेटा गड़बड़, बाबूको सलाम करो। बाबूजी 'मेम्बरी' और 'लाटरी' तो किस्मतका खेल है। आठ दफे मैंने कोशिश की तब हारकर इस दफे इसको खड़ा किया; क्योंकि लड़का बड़ा भाग्यमान है।

झप०—जब आप नहीं हुआ तो लड़का नहीं होने शेकता। इसको आप बोलें कि बैठ जाय।

धौंक०—नहीं सरकार, इस बच्चेपर तरस खाइये। इसका हौसला न तोड़िये, अगर आप बैठ जायें तो यह जरूर हो जायगा। आप वैसे ही बड़े आदमी हैं। आप मेम्बरी लेकर भला क्या कीजियेगा? बाबूजी, आप बैठ जाइये। बेटा, बाबूके पैरपर टोपी रखो।

झप०—वाह! हम इस साल 'कुरसी-मैन' होगा।

हमारा बड़ा उम्मीद है। इसको तो कुछ भी उम्मीद नहीं है। इसको बिठा लो।

धौंकल०—(पाकेटसे लिस्ट निकालकर) यह कैसे कहते हैं आप ? देखिये सब वोट मेरे हैं।

झप०—(पाकेटसे लिस्ट निकालकर) झूठी बात। हमारा है सब। उधर आड़में चलकर मिलान करके देख लो।

(तीनों आदमी वोटरचन्दके छिपनेकी जगहपर जाते हैं।)

झप०—(चौंककर) ओ बाबा ! ई कौन जानवर ?

वोटर०—(सामने आकर) जानवर नहीं वोटर।

गड़बड़—बापी, यह हमारा वोट।

झप०—नहीं यह हमारा वोट है।

धौंक०—(वोटरचन्दको एक किनारे ले आकर) देखिये, आप हमारी तरफ हैं न ?

वोटर०—जी हाँ, मैं पहले जबान दे चुका हूं।

झप०—(वोटरचन्दको दूसरे किनारेपर ले आकर) वह क्या बोलता था ?

वोटर०—कुछ नहीं, वह उल्लू है। आप खातिर जमा रखिये।

(गब्बूलालका चिल्लाते हुए आना)

गब्बू०—हाय! बाप! हाय मर गया! हाय, अब क्या करूँ।

झप०—वेल, आप विलायती कुतियाके माफिक काहेको चिल्लाता है।

गब्बू०—हाय! मैं मरा!

वोटर०—खूब मौका मिला। इस गड़बड़झालेमें भाग चलूँ।

(भाग जाता है)

गड़बड़०—ओ बापी, यह वोट भागा जाता है, पकड़ो।

(धौंकल और गड़बड़ उसके पीछे भाग जाते हैं।)

गब्बू०—हाय! मेरा नाम इस साल वोटरोंकी लिस्टमें नहीं है। मुझे आज मालूम हुआ। अब क्या करूँ?

झप०—कुछ नहीं। खाली डाक्टरको बुलाये और अपना दिमाग़ दिखाये। (अलग) अच्छा खूब चाल याद आया (ज़ाहिर) आप भारी बेवकूफ हैं। आप इतना नहीं समझा कि धोतीपरशाद और गड़बड़चन्दने चोरी-चोरी आपका नाम लिश्टसे कटा दिया।

गब्बू०—क्या? क्या? धोतीप्रसादने ऐसा किया? हाय! तब तो वह आस्तीनका साँप निकला। उसको तो मैं अपनी तरफ़ जानता था। उसीने मुझे धोखा दिया। उसीने

मुझसे कहा था कि इस सालकी लिस्ट बिलकुल पुरानी लिस्टकी तरह है। इसीलिये मैं बिना लिस्ट देखे अब तक अपना काम करता रहा। मैं नहीं जानता था कि उसने मुझे कन्नेसे काट दिया है। अच्छा, मैं तो डूबा। मगर उसको भी ले डूबूँगा। (जाता है)

झप०—आहा हा! अब जीत गया। हम जरूर करके मेम्बर होगा। आहा हा! और उसका बाद एकदम कुरसी-मैन हो जायेगा।

गाना

झप०—कुर्शीमैन होवेगा हम तो जरूर
जेण्टिलमैन बोलेगा हमको हजूर।
म्युनिसिपल आफिसमें जायेगा,
कोट पैण्ट हैट भी लागायेगा,
फिर तो बड़ा बड़ा अफसर कहलायेगा।
वाह! वाह! वाह! कुर्शीमैन होवेगा...
रोज नया टेक्सको लगायेगा
भारी खेताब फिर पायेगा
बड़ा साहब भी हाथको मिलायेगा।
वाह! वाह! वाह! कुर्शीमैन होवेगा...

(बुधुआ धोबीका कपड़ोंका गट्ठर लादे आना।)

कुरसी-मेन

बुद्धू (धोबी)—तनी हमार ई कपड़ाके गट्ठर घाट लाद ले चलो। तू हमरे जनपर काम न देहौ तो हमार एको वोट न पइहो।

झपसटनाथ (उम्मेदवार)—गठरी सरपर लादकर चलता है। (पृ० ८३)

बुद्धू—ए के होए ? ससुरजी बाबू ?

झप०—ससुरजी नहीं मुकरजी बोलो। हिन्दुस्तानी। मानुख बङ्गला नाम नहीं बोलने शकता।

बुद्धू—अच्छा मटरजी बाबू, तनी हमार ई कपड़ाके गट्ठर घाटे लाद ले चलो। का जनी कौन ससुर हमार गदहवा कानीहौज करियाय दिहीस है। एही ले तूसे कहित है।

झप०—वेल, बुधुआ, हम बाबू लोग हैं, गदहा नहीं हैं जो तुमरा बोझ लादें।

बुद्धू—देखो हमार करिहाँव पिरात है। तू हमरे ऊपर काम न देहो तो हमार एको वोट न पइहो। हां, जो हमार साथ किये हो तो भाई भरपूर हमार साथ दो नाहीं तो तोहार साथ हमका दरकार नाहीं है। हम सब परचा अकेले अपने नाम छोड़ाइब।

झप०—अच्छा बाबा। चलता है। (गठरी सरपर लाद-कर चलता है।) किन्तु बाबा बड़ा भारी है।

बुद्धू—मेम्बरीके बोझ ऐसे कुछ हलुक नाहीं होत है। दूनो एकुई जानो लिये चलो।

(दोनों जाते हैं।

बाजार
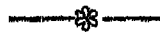
(कुछ लोग आकर टहलते हैं। एकाद खोञ्चेवाले भी 'कचालू चटपटे' 'बंगाली मिठाई' 'चाय गरम' की हांक लगाते आते हैं। घूमनेवाले खोंचावालोंसे सौदा लेते हैं। इसके बाद धोती प्रसाद धौंकल दासको साथ लिये आते हैं। और खड़े-खड़े लेक्चर देने लगते हैं। धौंकलदास बीच बीच "हियर-हियर" कहके ताली पीटता है)

धोती०—देखो भाइयो! अब मेरे मरनेके दिन करीब हैं। इस उम्रमें लोग ईश्वरकी सेवा करते हैं, मगर मैं आप लोगोंको ईश्वरसे भी बढ़कर समझता हूँ और ईश्वरके बदले आप ही लोगोंकी खिदमत मरते-दमतक करना चाहता हूँ। इसीलिये मैं मेम्बरीके लिये खड़ा हुआ हूँ। आपलोग अपना वोट मुझीको दीजियेगा। मैं अपने वोटरोंको गाड़ियोंपर चढ़ाकर परचा दिलाने ले आऊंगा।

(झपसटनाथका आना)

झप०—ये सब झूठा बात है। यह बुड्ढा कुछ काम नहीं करने शकेगा और हम जोवान हैं। गदहाके माफिक

मजबूत हैं। हम खूब शकेगा। हम अपना वोटरोंको मोटरपर चढ़ाके वोट दिलाने ले चलेगा। शहर भरका शब मोटर तुमरा वास्ते हम मांग लिया है।

सब—हां बाबूजी, मोटर ठीक है। बस, मोटर मोटर सभे कसम खा लेओ भाई कि बिना मोटरके परचा छोड़े कोई न जाई।

झप०—बश, बश। ठीक है।

(जाता है और उसके पीछे बहुत लोग मोटर मोटर कहते जाते हैं)

धौंकल०—बड़ा गजब हुआ! हम लोगोंका बना बनाया खेल बिगड़ गया।

धोती०—कुछ पर्वाह नहीं! कल परचा पड़ेगा। आप अभी जाकर शहर भरमें जितना 'पिटरोल' मिले सब खरीद लीजिये, ताकि कल मोटरवालोंको एक बून्द भी 'पेटरोल' न मिले।

धौंकल०—वाह! वाह! यह खूब तरकीब निकाली कल कोई मोटर न चलेगी और न कोई वोटर वोट देने आयेगा। मैं अभी जाकर सब 'पेटरोल' खरीद लेता हूँ। भलासे हजार दो हजार रुपये बिगड़ जायँ, मगर लड़का तो किसी तरह मेम्बर हो जाय।

धोती०—बेशक, यही चाहिये। हिन्दुस्तानियोंके लिये एक यही तो बड़प्पनको निशानी है। मैं भी तबतक जरा कोतवाली जाकर दो कान्सटिबलोंको बुद्धू धोबीके पीछे लगाये देता हूँ; क्योंकि उसकी वजहसे वोटरोंमें बड़ी खलबली मची हुई है। सभोंको इस बातका डर है कि अगर उसकी रायपर न चलेंगे तो कोई धोबी उनके कपड़े न धोयेगा। इसलिये उसको किसी तरहसे आज ही हवालातमें बन्द करा देना है, जिससे धोबियोंकी हिम्मत टूट जाय। और वोटरोंके दिलसे घबराहट निकल जाय।

धौंकल०—जरूर! जरूर! इन कामोंमें देर करना ठीक नहीं। आइये!

(दोनोंका जाना)

(दूसरी तरफसे गब्बूलालका दो-चार आदमियोंके साथ आना)

गब्बू०—बस भई, अब तो कोई नहीं रह गया।

पहला आदमी—जी नहीं, धोतीप्रसाद और गड़बड़-चन्दके सभी वोटरोंको आप न्योता दे चुके! अब चलिये दावत और जलसेका इन्तजाम कीजिये।

गब्बू०—अच्छा, अब आपलोग यह कोशिश कीजिये कि जिनको मैं न्योत आया हूँ वह सब लोग मेरे यहाँ आवें।

दूसरा आदमी—इसका आप तनिक भी सोच न कीजिये।

तीसरा आदमी—आजकलके जमानेमें तो दावत और जलसोंमें लोग बिना बुलाये फट पड़ते हैं।

चौथा आदमी—और जब आप खुद ही घर-घर जाकर लोगोंको बुला आये, तब भला ऐसा भी कहीं हो सकता है कि कोई न आये ?

गब्बू०—बस, वे लोग आ भर जायँ। फिर तो सारी रात उन्हें ऐसा जलसा दिखाऊँ और इतनी शराब पिलाऊँ कि सुबहको कोई वोट देने न जा सके और जो कोई जानेका इरादा भी करे तो फाटकके बाहर वह निकलने न पावे। तब घोंघाप्रसाद और गड़बड़चन्दको 'लिस्ट' से मेरा नाम निकल-वानेका मजा मालुम होगा।

सब—खूब मालूम होगा !

गब्बू०—हम डूबे हैं तो—

सब—यारोंको भी ले डूबेंगे।

गब्बू०—शाबाश ! यही चाहिये। अच्छा अब आपलोग बी अस्तुरा जान, बी नहरनी जान, बी कटारी जान वगैरह वगैरह शहरभरकी सब रंडियोंको नाचनेके लिये बुला लाइये। जबतक मैं घर जाकर महफिलका इन्तजाम करता हूँ।

(जाता है)

पहला आदमी—अच्छा भाई, यही तै कर लो, कौन किसके यहाँ जाय।

दूसरा आदमी—हम तो भाई तिलकधारी पण्डित हैं। हम रंडी बुलाने नहीं जायेंगे।

तीसरा आदमी—वाह! वाह! तब किस बोरतेपर तुमने बड़े आदमियोंसे दोस्ती की है? इन लोगोंकी जब संगत की है तब तुम्हें रण्डीके घर नित जाना ही पड़ेगा।

चौथा—और नहीं तो क्या? और इसमें दोष ही क्या है? ये लोग तो मंगलामुखी कहलाती हैं।

दूसरा आदमी—मंगलामुखी! क्या यही लोग मंगलामुखी कहलाती हैं? तुम्हें ठीक मालूम है?

पहला आदमी—अच्छी तरह। अजी इनका दर्शन तो शकुन होता है।

दूसरा आदमी—हाँ? तब तो यह लोग साक्षात् देवियाँ हैं यह मैं नहीं जानता था।

तीसरा आदमी—और अगर तुम्हें इन लोगोंसे कुछ परहेज भी हो तो तुम हिन्दू-रण्डियोंके घर जाना। अब तो कतरनी बाई, कैंची बाई, कुल्हाड़ी बाई बहुत-सी हिन्दू-रण्डियाँ भी हो गई हैं।

दूसरा आदमी—हम तो भाई, तिलकधारी पण्डित हैं, हम रण्डी बुलाने नहीं जायेंगे। चौथा आदमी—इसमें दोष ही क्या है, ये लोग मंगलामुखी कहलाती हैं। (पृष्ठ ८८)

दूसरा आदमी — अरे! सच कहना यार! हिन्दू-रण्डियाँ भी होने लगी हैं ?

पहला आदमी—एक नहीं हजारों।

दूसरा आदमी—वाह! वाह यह तो बड़े सौभाग्यकी बात है। अच्छा तो हम हिन्दू-रण्डीके घर जायंगे, क्योंकि हम पण्डित हैं। हमें अपने धर्मका बड़ा विचार है।

और लोग—अच्छा यही सही।

[प्रस्थान]

चौथा दृश्य

मैदान

गदहेको सीनके पीछे पहले हीसे खड़ा रखना चाहिये। ताकि ऐन वक्त पर परेशान न करे। ड्रामा शुरू होनेके पहले भी उसको दो चार बार स्टेजपर घुमा देना जरूरी है।

(बुद्धू गदहेपर बैठा हुक्का पीता हुआ दिखाई पड़ता है।)

बुद्धू—आज हमहूँ राजशाही ठाटसे शहर घूमैं निकसे हन। जेहमां लोग जानैं तो कि अँसो कवनो भारी रईस लम्बरीके लिये ठाढ़ भवा है! अउर का, गदहा अस उत्तिम सवारीपर भागदारे मनई चढ़त हैं। ई हाथी घोड़ा न होय कि एहपर नीच ऊँच सभे बइठें। अउर हाथी घोड़ा ऊंट कवनो सवारीमें सवारी होय! राम कहो! हाथीपर चढ़ो तो रस्सा पकड़े-पकड़े जीव जाय। ऊंटपर बइठो तो हचकत-हचकत कमरिये टूट जाय। घोड़ापर चलो तो ससुर कहूँ लैके भाग जाय तो फिर आपन पतो न पावो। अउर गदहाके का बात है! न नीच न ऊंच। आपन टांग फइलाके बइठो अउर मजेसे हुक्का पीयत जहाँ चाहो ठुमुक-ठुमुक चला आओ। अस मजेदार देखके अब भला केकर जीव न ललचात होई?
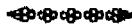
मुला भाईका करो। ई आपन २ नसीब होय कि नाहीं? अच्छा तनि सबुर करो। हमका जो सभै मिलके लिम्बर कराय देयो तो हम कानून बनाय देब कि सब लोग बेरोक गदहापर चढ़ा करें। तब भाई सभे मजा करिहो। अउर का? सइयां भये कोतवाल अब डर काहेका?

(कान्सटिबल, बन्दूकहुसेन और शमशेर अलीका आना)

शमशेर—(आपसमें) यही है।

बन्दूक०—(आपसमें) हां बस! इसे पकड़ ले चलो। और नशेकी इल्लतमें आज हवालातमें बन्द कर रखें तो यारोंके दस रुपये सीधे हो जायं।

शमशेर—(आपसमें) भई, जहाँतक हो सके हरामका माल हलाल करके खाना चाहिये। इसलिये देख लो, अगर नशेमें हो तो और भी अच्छी बात है।

बुद्धू—(अलग) यह देखो दुई-दुई सिपाही फाट पड़े। मुला हमका देखके डिराये गये। ऐसी आवे के नाहीं हियाव पड़त है। जानत हैं कि डगरमें अपसर ठाढ़ है। तनि डाँट देई तो अउर घबराय जायँ (प्रकट) ए सूझ नाहीं पड़त हैं? एक तो भैंसा अस गदहा और ओहपर हमरे अस भारी अपसर असवार। अउर सलाम नाहीं कीन जात है? सलाम करो।

बन्दूक०—(आपसमें) हाँ हाँ है, मालूम होता है।

शमशेर०—तब ठीक है।

बुद्धू—ठीक नाहीं हो क्या गलत कहित है? भला चाहो तो तुरन्ते सलाम करो। नाहीं जाने रहेयो बात बनी न।

बन्दूक०—बिल्कुल नशेमें है।

बुद्धू—नशामें तो रहते हन। नाहीं जानत हो कि हाकिम लोगनका हर साइत हुकुमका नसा चढ़ा रहत है?

शमशेर०—और अकबाल भी करता है।

बन्दूक०—अब इससे बढ़कर और सबूत क्या चाहिये?

बुद्धू—अब अर्बी फारसी बोले हीयाँ काम न चली। सलाम करे के पड़ी। आज नाहीं लम्बर हन, काल्ह तो होबे। मुला हम आजेसे सलाम लेवे केर आपन आदत डालित है। यही खातिर सभे लिम्बर होत हैं, कुछ हम ही नाहीं। फिर आपन हक हम कसस छाड़ देई?

बन्दूक०—शमशेर अली, देखते।हो इस बदमाशको, नशेमें किस कदर बहक रहा है।

शमशेर०—मुझे तो अब हर तरहसे इतमीनान हो गया कि या तो यह पागल हो गया है या बहुत ज्यादा पी गया है।

बन्दूक०—फिर इसका इलाज?

बुद्धू—हमसे पूछो। सात दफे झुक-झुकके कहो हजूर सलाम।

शमशेर०—लो बेटा, पहिली सलामी तो यह दगी।

(बुद्धू को मारता है)

बन्दूक०—और दूसरी यह। (मारता है)

बुद्धू—ए सिपाही भाई! सुनो तो। रुको रुको। वइसे गदहापर चढ़े केर मन रहा तो कहेयो काहे नाहीं? मारत काहे हो? हम उतरा जाइत है (उतरकर) लो दूनो जने पारापारी आपन सौक बुझाय लो।

शमशेर०—क्यों बे, हमको गदहेपर चढ़नेके लिये कहता है।

बुद्धू—तब अउर काहेके लिये मारत हो?

बन्दूक०—इस बेहूदेसे जबान लड़ाकर अपना दिमाग खराब करना है। मैं इस गदहेको काञ्जीहौसमें किये देता हूँ और तुम इस गदहेको कोतवाली ले चलो।

(गदहा ले जाता है)

बुद्धू—नाहीं दादा, काञ्जीहौस न ले जाओ। सुनो तो।

शमशेर०—चुप बदमाश, चल इधर।

बुद्धू—पहिले हमार गदहा मँगाय देयो।

शमशेर०—फिर नहीं सुनता।

(मारता है)

बुद्धू—अरे सुनो भाई, हमरे दूनो पाँवमें बाई पकड़े है।

शमशेर०—हम तो तुझे ले चलेंगे।

बुद्धू—आपन पीठपर चाहे लाद ले चलो। अउर तो कौनो उपाय देख नहीं पड़त है।

(जमीनपर बैठ जाता है और चिलम फूंककर हुक्का पीता है)

शमशेर०—क्यों बे हम तुमको अपनी पीठपर लादेंगे ?

बुद्धू—गरज होई त लदबे करिहो। काहे वास्ते कि बिना गदहाके सवारीके हम कहूँ चल नाहीं सकित है।

शमशेर०—अच्छा आने दे बन्दूकहुसेनको। वह आ गया।

[दूसरे कान्सटेबलका आना]

बुद्धू—हुक्का पीहो ? अरे ! सुनत काहे नाहीं। बहिर हो का ?

शमशेर०—क्या है बे ?

बुद्धू—लो, तनि चिलम तो भर लाओ।

शमशेर०—क्यों बे पाजी, हमको चिलम भरनेको कहता है ?

बुद्धू—तो फिर केहसे कही ? हीयाँ हमार मेहरारू बइठ है ? यह साइत तो हीयाँ बस तुंही हो।

[मारे गुस्सेके शमशेरअली बुद्धूके हाथसे हुक्का-चिलम छीनकर नेपथ्यमें फेंक देता है ।]

शमशेर०—पाजी ! बदमाश ! बेहूदा कहींका !

बुद्धू—ई कवन करम कियो ? का तूका न पिलाइत ?

(बन्दूकहुसेनका एक पर्देदार डोली का खटोला बिना बिनावटके होना चाहिये । और कहारोंके साथ आना ।)

शमशेर०—चुप । बन्दूकहुसेन ! इस मरदूदको डोलीमें चढ़ाकर तुम उस तरफ चलो और मैं इस तरफ ताकि यह किसी तरफ कूदकर भाग न सके ।

(दोनों बुद्धूको जबरदस्ती डोलीमें ठूंसते हैं ।)

बुद्धू—अरे भाई जल्दि याव ना । ई तो बताओ हमका कहाँ लिये जात हो ? काहे वास्ते अस ठाठसे, पालकीपर चढ़-कर हम खाली ससुराले जाइत है अवर कहीं नाहीं ।

बन्दूक०—चुप बदमाश !

शमशेर०—चलो बच्चा, अब थानेपर तो तुम्हारा कचू-मर निकालता हूँ ।

(बुद्धूको डोलीके भीतर करके डोलीका पर्दा गिराता है ।)

बन्दूक०—अब डोली उठाओ और ले चलो ।

(डोलीका खटोला बीना हुआ नहीं होता, इसलिये कहार

लोग डोली उठाकर चलते हैं। मगर बुद्धू जमीनपर ज्योंका-त्यों बैठा रह जाता है।)

शमशेर०—अब धोतीप्रसादसे मुंह-मांगा इनाम पाऊँगा।

बन्दूक०—मैं तो दस रुपयेसे कौड़ी कम न लूँगा।

[दोनों कांसटेबलों और डोलीवालोंका जाना।]

बुद्धू—(अकेला—जमीनसे उठकर) धात्त तोरे सिपाहीके ऐसी तैसी! हमका थानेपर ले जात रहे। ई नाहीं जानिन कि हम टेंटमें चाकू रखे हन। झटसे पालकीके बिनावट काट दीन और चटसे निकर आयन। अकिल बड़ी चीज आए! मुला भाई आज मालूम भवा कि अख्तियारके आगे धन, दौलत और अकिल सब झूठ है। देखो लालपग- रियामें तनीभर अख्तियार मुला इतनेहीमें आफत मचा दिहनि। तब्बे तो सभे पहके लिये हाय हाय करत है। अउर जेहका दैईउ कवनो किसिमके अख्तियार नाहीं दिये हैं से लम्बरीके पाछे आपन जीव दिये देत है। अब तो हमहूँका पहकर चाट पड़िगा। पहसे कवनो हमका सलाम न करिहैं। मुला जहाँ दफा चौतिसमें चलान करनेवाला अख्तियार पाय जाब तब सभे काकाके गोड़ेपर गिरिहैं। अब बिना लिम्बर भये हम कहूँ मान सकित है? कालहै सैयो। फिरका पूछेके है?

कुरसी-मैन

गाना

बड़ा करबे मजा, मोरा जानैं गुसइयाँ,

कहुं लिम्बर जो हमका बनाय दें राम।

हमरी धोबिनियाके लाली चुन्दरिया,

ओका कटउबे, आंगा सिलइबे

ओमा लगइबे चान्दीके बोताम !

बड़ा करबे मजा···

सहरियाके भंगी भी लै लै टोकरिया,

आवैं बहारे, संझा सकारे,

मोरे दुआरे देहौं न दमड़ी छेदाम। बड़ा करबे मजा··

अपसर बनकर डाँट बताइबे;

साहबसे मिल चुगली खइबे,

घर गिरवइबे, टिकस लगइबे,

आफत करबे, कैद करइबे।

जब करिहों यह सब काम,

तब तो होइहै नाम,

फिर करिहैं सबै हमका झुक झुक सलाम। बड़ा...

(जाता है।)

पांचवां दृश्य

सड़क

(धोतीप्रसादका बदहवास आना)

धोती०—गजब हो गया ! परचा पड़ रहा है और हमारे वोटरोंका अब तक पता नहीं ! या ईश्वर ! साढ़े तीन सौ आदमी यकायक कहां मर गये ? अब क्या करूँ ?

(झपसटनाथका घबड़ाये हुए आना ।)

झपसट०—ओ बाबा ई का बात ? अभी तक एकठो मोटर भी नहीं खुला ? फिर हमारा वोटर लोग किस माफिक आये । कोई 'नानकापरेशन' का लेक्चर तो नहीं दे दिया ।

धोती०—ओ वोटर ! ओ वोटर !

झपसट०—ओ मोटर ! ओ मोटर !

धोती०—हाय ! हाय ! कोई नहीं बोलता । और एले-क्शनका वक्त खतम हुआ जाता है ।

झपसट०—किसी तरफ भों भों नहीं सुनाता । बड़ा देरी हो रहा है ।

धोती०—(नेपथ्यकी ओर चश्मा ठीककर खूब गौरसे

देखता हुआ) हमारा एक वोट भी आता हुआ नहीं दिखाई पड़ता।

झपसट०—ओ बाबा ई कौन ? धोतीप्रसाद है। उधरको क्या देखता है ?

(झपसटनाथ धोतीप्रसादके आगे खड़ा होकर उसी तरफ देखता है।)

धोती०—अय ! यह क्या ? आंखोंके सामने यह दीवाल कैसी खड़ी हो गई ? अरे ! यह तो झपसटनाथ है ! अरे ! हटिये साहब ! मुझे अपने वोटरोंको देखने दीजिये।

झपसट०—वेल ! हम भी तो अपना वोटर लोग देखता है।

(धोतीप्रसाद वहांसे हटकर झपसटनाथके आगे खड़ा होता है और तब झपसटनाथ वहांसे हटकर धोतीप्रसादके आगे खड़ा होता है। अन्तमें दोनों एक दूसरेको आगे बढ़नेसे रोकते हुए अपने दोनों हाथ फैलाये बराबर खड़े होकर नेपथ्यकी ओर देखते हैं। दूसरी तरफसे सड़क बुहारता हुआ एक भंगी आता है।)

झपसट०—(धोतीप्रसादसे) बश, बश, आगू मत आओ। तुम गड़बड़ करेगा।

धोती०—[झपसटनाथसे] बस आप भी आगे न बढ़ें। वरना हमारे आते हुए वोटर भड़क जायेंगे।

(भंगी सड़क बुहारता बुहारता घोतीप्रसाद और झपसटनाथकी पीठ बुहारने लगता है ।)

झपसट०—ओ बाबा ई की ? [घूमकर देखता है] ।

धोती०—अरे ! यह क्या ? [घूमकर देखता है] राम ! राम ! भंगी होकर हमको छू लिया । बदमाश कहींका !

भंगी—सरकार ! पीठमें गर्दा लाग रहा । हम कहा यहू बहार देई ।

झप०—अच्छा ठीक किया । पिछाड़ी साफ कर दिया ।

धोती०—खैरियत हो गई कि तुमने झाड़ूसे छूआ । हाथसे जो छूते तो मुझे अभी नहाना पड़ता और तब मैं तुम्हें बिना मारे नहीं छोड़ता ।

झपसट०—ओ भंगी बाबू, उसका बात मत सुनो । वह ऐसा ही कूकुरके माफिक भूंकता है । हमारा बात सुनो । बोलो तुम वोटर है ।

भंगी—वोटर ?

धोती०—अरे ! क्या यह वोटर है ?

झपसट०—नहीं होगा तो हम अभी बना देगा । हाँ भंगी बाबू, बोलो तुमरा की नाम है ?

भंगी—हमार नाम तो सरकार लोधे है ।

झपसट०—(जेबसे लिस्ट निकालकर) क्या बोला,

लोधे ? हां हां उसमें लोधेका नाम दिया है।

धोती०—(जेबसे लिस्ट निकालकर देखता हुआ) मगर वह जातका अहीर है साहब !

झपसट०—कुछ परवाह नहीं। आजकल जात-पांतका विचार नहीं किया जाता। अच्छा, तुमरा बापका की नाम है ?

भंगी—मतई, मुला ऊ तो अब नाहीं है।

धोती०—(लिस्ट देखकर) और इसमें लोधेके बापका नाम रामचरन लिखा है।

झपसट०—सब ठीक है। यह वोटर होने सकता है।

धोती०—वाह ! वाह ! कुछ खबर है इसके बापका नाम मतई है।

झपसट०—किन्तु यह बोलता है कि अब वह नहीं है। जब वह था तब इसका बाप था। जब नहीं है तब वह किस माफिक इसका बाप होने सकता है ? नहीं होने सकता।

धोती०—अच्छा वह न सही। मगर रामचरन इसका किस तरहसे बाप कहा जा सकता है ?

झपसट०—तुम तो भारी बेवकूफ बुझाता है। अरे बाबा, आजकल बापलोग कूकुरके बच्चाके माफिक बहुत होता है। इसमें थोड़ा-सा जगह है। सब बापका नाम कैसे लिखा जा
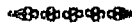
सकता है। बस भंगीबाबू तुम वोटर है और हमारा वोटर है।

धोती०—अरे! तो क्या सचमुच वोटर है? अगर भाई, तुम वोटर हो तो चलो मेरे नाम परचा छोड़ दो। हे भंगी भाई, तुम्हें हाथ जोड़ता हूँ। लो तुम्हारे कदमोंपर टोपी भी रखता हूँ। मेरी इज्जत तुम्हारे ही हाथमें है। मुझ डूबते हुएको उबारो। बस, मेरी बांह पकड़ लो भंगी भाई।

(भंगीके कदमोंपर टोपी रखता है।)

झपसट०—(धोतीप्रसादको ढकेलकर) हट। हम तो इतना कष्टसे इसको वोटर बनाया। अउर तुम उसको दो पइसाके टोपीसे फुसलाता है? भंगी बाबू, इसका टोपी दो पइसाका है। हम तुमरा पैरपर दस रुपीका कोट रखता है तुम खाली हमरा वास्ते वोट दो।

(अपना कोट उतारकर भंगीके पैरपर रखता है।)

भंगी—ई सब गुड़गुड़ गुड़गुड़ का होय हमरे कुछ समझिन नाहीं आवत है। कोटिया और टोपिया कहो अलबत्ता पहिन लेई।

(कोट और टोपी पहनता है।)

धोती०—हम समझाय देते हैं। देखो, तुम वोटर हो और—

भंगी—वोटर नाहीं सरकार, हम जमनापारी भंगी हन।

अउर हम नाहीं कुछ जानित है।

झप०—ठीक है भंगी बाबू ! इसका बात तुम कुछ मत मानों, खाली हमरा बात याद रखो। हम सब रस्तामें बता देगा। चलो अब बखत नहीं है।

भंगी—मुला हम बिना सड़क बुहारे कहूँ जाय नाहीं सकित है।

झप०—ओ, तब तो बड़ा देरी हो जायेगा। लाओ झाड़ू हम जल्दी जल्दी बुहारे देता है।

(भंगीसे झाड़ू लेकर झपसटनाथ सड़क बुहारता है।)

धोती०—(भंगीसे) आओ, तुम हमारे साथ आओ। देखो, हमने तुम्हारे क़दमोंपर अपनी टोपी तक रख दी। हमरा कुछ तो ख्याल करो।

भंगी—यह देखो, दमड़ीके टोपीपर इतना गुमान ! अरे ! ई दस रुपयाका कोट नाहीं देखते हो ? हम बाबूजीके बात मानब।

धोती०—अच्छा भाई, न मानो। मगर यह जान लो कि मैं तुम्हें पाकर अब छोड़ नहीं सकता। बूढ़ा तो हूँ मैं ज़रूर, मगर यह ख्याल रहे कि मेम्बरीके जोशमें बड़ी जवानी होती है।

भंगी—तो हमार का करबो ?

धोती०—लो, फिर इस बूढ़ेकी जवानी देख ही लो। जै मेम्बरी की।

(धोतीप्रसाद भंगीके पीछे जाकर बैठ जाता है और झटसे अपनी गर्दन भंगीकी जांघोंके बीचमें डालकर भंगीको अपने कन्धोंपर उठा लेता है।)

भंगी—अरे! अरे! अरे! देखो बाबूजी, ई हमका उठाये लिये जात है।

(धोतीप्रसाद इसी तरह भंगीको लादे हुए ले जाता है।)

झप०—(सड़क बुहारता हुआ सर उठाकर देखता है।) अर-रररर! वह बुड्ढा शाला हमरा शमूचा वोटर उठा ले गया अब की करे बाबा? बड़ा गड़बड़ हो गया। नहीं नहीं, अभी कुछ घबड़ानेकी बात नहीं है। (झाड़ू दिखाकर) उसका दुम तो हमरा ही हाथमें छूट गया। बस अभी कच्छी मारके जाता है। अउर यह दुम दिखाकर बोलेगा कि वह वोटर हमारा है और वह किसीका नहीं होने सकता।

[झाड़ू लिये दौड़ता हुआ जाता है और दूसरी तरफसे वोटरचन्दका आना]

वोटर०—राम! राम! मेम्बरीके पीछे यह लोग जो न कर डालें वही थोड़ा है।

गाना

डुबो दिया इन लोगोंने यह देस,
बना बना कर अपने लाखों भेस। डुबो दिया···
अपनी शान दिखानेको, अपनी धाक जमानेको।
घर घर फिरकर लेक्चर देकर, पहले लोगोंको फुसलावें,
बनकर मेम्बर टाइटिल-होल्डर,
गरदनपर फिर छुरी चलावें।
तनिक न इनके दिलमें लागे ठेस। डुबो दिया···
अपनी आन जतानेको, अपना मान बढ़ानेको।
कभी हैं लीडर जनताके, कभी हैं धर्म-प्रचारक भी,
जब दाल कहीं नहीं गलती,
बन गै झट सम्पादकजी।
इनके आगे दई न पावे पेस।
डुबो दिया इन लोगों···

(बुद्धू का आना)

बुद्धू—अरे ! तू इहाँ घूमत हो। हम साँझसे तूका हेरत-हेरत मर गएन। चलो ऐसी हमरे दुवारे चलके बइठो। हम आपन सब वोटर उहें बइठाए हन।

वोटर०—लो भई, रातभर तो गब्बूलालके यहाँ बन्द रहे। वहांसे किसी तरह निकल भागे तो यह पकड़कर बैठाने-

की ताकमें है। वही मसल है कि तवेसे गिरा तो आगमें पड़ा। ईश्वर आजकल दुश्मनको भी वोटर न बनाये। अरे ! भई, अब तो एलेक्शनका वक्त खतम भी हो गया। अब तो बेचारे वोटरोंकी जान छोड़ो।

बुद्धू—अच्छा, तू चलो तो। अब्बे ससुरजी बाबू मोटर भेजिहैं। बस ओहपर मजेसे नवाब अस बइठके परचा छोड़े चलेयो। अरे ! यही परचा छोड़ेके नाते तू लोगनका कब्बो-कब्बो मोटरपर चढ़ेके मिलत है। तौन हमरे बदौलत चलो तू हूँ चढ़ लेयो। नाहीं पछतावो। काहेके नखरा करत हो ? आजे भर तोहार कद्र है। फिर तो जानित है मुरईके भाव न बिकइहो। कोई बातो न पूछी। चलो तुका बीड़ी पिलाइब, बीड़ी।

(बुद्धू वोटरचन्दका हाथ पकड़कर घसीटता है)

वोटर०—अरे ठहर ! इधर देख मामला ही खतम हो गया। लोग लौटे आ रहे हैं।

(गड़बड़चन्दका रोते हुए आना)

गड़बड़०—अरे ! मेरे बापी हो ! अरे ! मेरे बापी हो !

वोटर—लो भाई, इनका तो फैसला हो गया। बोलो, राम नाम सत्य है।

बुद्धू—अरे ! ई का भवा ? जानो एकर बाप मर गवा।

वोटर०—बाप नहीं मरा। बाप मरता तो भला यह इतना रोता? यह मेम्बरीमें हार गया है।

गड़बड़०—अरे! बापी हो!

बुद्धू—कहा तू कुरे हार गयो?

गड़बड़०—(रोता हुआ) हाँ भाई, हम तो मर गए। हाय!

बुद्धू—भला भवा! वाह! वाह!

गड़बड़०—(रोता हुआ) हाय! जलेपर क्यों नमक छिड़कते हो?

वोटर०—वह बेहूदा है। उसकी बातोंका आप ख्याल न कीजिये। हाँ जनाब, आपके साथी धोतीप्रसादका क्या हुआ?

गड़बड़०—(रोता हुआ) वह भी तो हार गये।

बुद्धू—अरे! धोतीप्रसादवो हार गया? आहा हा हा! भल्ल भवा! भल्ल भवा! भल्ल भवा!

(ताली बजाकर नाचता है।)

वोटर०—आखिर फिर हुए कौन?

गड़बड़०—क्या बताऊँ? लालमोहन और नानकचन्द हो गये जिन्होंने जरा भी कोशिश नहीं की थी। यही तो रोना है। हाय!

बुद्धू—(आगे बढ़कर) अउर बुद्धू धोबी?

गड़बड़०—वह तो पहले ही हार गया। उसके नाम तो एक परचा भी नहीं पड़ा।

बुद्धू—आयं! का भवा? हार गये न? हाय! दादा हमहू बिलाय गएन। हाय! बाप रे बाप!

(रोता है)

वोटर०—और वोटर पकड़ पकड़कर अपने घर बैठाते रहो।

गड़बड़०—अरे! तूही बुद्धू धोबी है क्या? मैं अब-तक मारे रञ्जके तुझे नहीं पहचान सका था। ओहो हो!! बड़ा अच्छा हुआ। तेरा रोना देखकर अब मेरा रंज बिल्कुल जाता रहा। आहा हा हा!

वोटर०—क्यों नहीं? दूसरोंकी मुसीबत देखकर अपने कलेजेमें ठण्ढक पहुँचती ही है।

गड़बड़०—(हंसता है) आहा हा हा!

बुद्धू—हँसत हौ, मरिहौं एक लपोटा, मुँह टेढ़ होइ जाई! हाय! दादा हमका झपसटनथवा बिलवाएँ दिहिस। हम वोट पकड़ पकड़ अपने दुवारे इकट्ठा कीन। अउर ऊ मोटर नाहीं भेजिस। हमसे दगा किहिस। हाय! करम फाट गवा। अच्छा रहो।

(रोता हुआ जाता है)

गड़बड़—मोटर आज चलती कैसे ? यहाँ तो बापीने पहिले ही सब 'पेटरोल' खरीद लिया था। मगर धोतीप्रसादने धोखा दिया। उसने कहा था कि बुद्धू को हवालातमें बन्द करा दूँगा। मगर यह तो खुले खजाने घूम रहा है। बस, मालूम हो गया। इसीकी वजहसे हमारे वोटर नहीं आये। अभी जाकर बापीसे कहता हूँ कि धोतीप्रसादने मेरा गला कटवा दिया।

(जाता है।)

वोटर०—लो भइ, हारनेके बाद तबेलेमें लतिहाउजकी भी तैयारी होने लगी। मेम्बरीकी दौड़-धूपके आखिरी छापमें इसके सिवाय और क्या धरा है। बस, अब खिसक दूँ और जाकर अपने घरपर बैठूँ। नहीं तो दूसरी मुसीबत गवाही देनेकी पड़ेगी।

(जाता है।)

(दूसरी तरफसे गब्बूलालका आना।)

गब्बूलाल—वाह रे हम ! क्यों न हो। आखिर मार ही गिराया न ? अपना कुछ न बना सके, मगर दूसरोंको तो चौपट कर डाला। यह हिन्दुस्तानकी खास पालिसी (Policy) है और आजकल इसीका बोलबाला है।

दुमदार आदमी
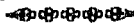
(धोतीप्रसाद और झपसटनाथका तकरार करते आना)

झपसट०—हम हार गया तो की ? किन्तु तुम तो मेहतरको अपना मस्तकपर चढ़ाया उसपर भी हार गया। बेश होलो ! बेश होलो ! हम खूब खुशी करेगा। हुर्रा ! हुर्रा ! हिप हिप हुर्रा !

धोती०—अरे ! तुम अपनी कहो। सड़कपर भंगी बनके झाड़ू तक दी और तब भी अपना-सा मुँह लेकर रह गये। धत् तेरेकी ? कुर्सीमैन होने चले थे। मगर मेम्बरी भी न मिली। खूब हुआ ! टिलि-लि-लि-लि-लि।

गब्बू०—(दोनोंके बीचमें जाकर) अजी, आपलोगोंकी यह खुशनसीबी बहुत कुछ मेरी बदौलत नसीब हुई। इसलिये जरा मेरी पीठ तो ठोंक दीजियेगा ; क्योंकि मुझे तो आप दोनों ही के हारनेकी खुशी है। और दोहरी खुशी है। आहा ! हा ! हा ! हा ! हा !

(झपसटनाथ और धोतीप्रसाद चकित होकर गब्बूलालको देखते हैं। और दूसरी तरफसे छड़ी लिये चौंकलदास आता है)

बुद्धू—(झपसटनाथसे) कहो ससुरजी बाबू, मोटर काहे नाहीं भेजियो ?

[झपसटनाथको मारता है]

धौंकल०—(धोतीप्रसादसे) क्योंजी, हमारे लड़केको धोखा देकर हरा दिया !

(धोतीप्रसादको मारता है).

झपसट०—ओ बाबा ई की ?

धोती०—अरे बाप रे ! यह कैसी आफत आई !

[बुद्धू झपसटनाथको और धौंकलदास धोतीप्रसादको मारते हैं हैं और गब्बूलाल बीचमें ताली बजाकर हँसता है]

गाना

बुद्धू+धौंकल—मारो मारो, बढ़कर मारो,
घुसकर मारो, कसकर मारो, मारो ।

झपसट०—अरे ! बाबा बा बा,

धोती०—हाय ! दादा दा दा,

गब्बू०—आ हा हाहा हा हा !

बुद्धू+धौंकल०—मारो मारो जी भर,

धोती०—अरे भाई, बस कर,

झपसट०—गिरा धोती खुलकर ।

पटाक्षेप

पत्र-पत्रिका-सम्मेलन

इस प्रहसनको सम्पादक "वर्तमान" ने १९२४ में अपने विजयादशमीके विशेषांकके लिये लिखवाया था और यह उस अंकमें समाचारपत्रोंके सम्मेलनके नामसे प्रकाशित हुआ था परन्तु उसमें उसके बहुतसे अंश काट डाले गये थे जिससे यह बिलकुल भद्दा और बेतुका हो गया था। अस्तु १९२५ में यह फिर अपने सम्पूर्ण रूपमें 'चाँद' में प्रकाशित हुआ। इसका विषय साहित्यिक होनेके कारण इसमें हमारे कुछ प्रधान पत्र-पत्रिकाओंको अपने असली नामसे प्रवेश होना पड़ा है। इसके लिये उनके सम्पादक और प्रकाशकगण लेखकको क्षमा करेंगे; क्योंकि वे केवल अपने सम्पादक और प्रकाशक हीके माल नहीं हैं; बल्कि सम्पूर्ण हिन्दी संसारके हैं। इस नाते लेखकने उन्हें अपने ही जानकर उनके नामोंसे अलंकृत किया है और इस तरहसे उन पत्र-पत्रिकाओंको लोक-प्रियताका प्रमाण है।

प्रहसनके पात्र और पात्री

<table>
<tr><th>पात्र</th><th>पात्री</th></tr>
<tr><td>हास्य—प्रकृतिका पति।
समाज—भारतमाताका पुत्र।
साहित्य-सम्मेलनका सभापति
चाँद—मासिक पत्र।
मतवाला, मौजी, गोलमाल, भूत, बाङ्गवासी — हास्यपत्र
श्रीवेङ्कटेश्वर, भारतमित्र — समाचारपत्र
तीन अन्य समाचार पत्र।
ग्रामगजट—एक पत्र।
अङ्गरेजी पत्र।
श्रीहुजूरीराम।
नाटक।
उपन्यास।
एक आदमी।</td><td>प्रकृति—हास्यकी स्त्री।
कला, स्वाभाविकता — प्रकृतिकी बहिनें
भारतमाता—समाजकी माँ
शिक्षा—कलाकी नौकरानी
माधुरी, सरस्वती, प्रभा, गल्पमाला, मनोरमा, मोहिनी — मासिक पत्रिकायें</td></tr>
</table>

पहला दृश्य

हास्यका मकान

[हास्य और उसकी स्त्री प्रकृति बातें कर रहे हैं]

प्रकृति—तुम तो अजीब आदमी होते हो।

हास्य—और तुम मुझे बेतुकी नजर आती हो।

प्रकृति—क्यों ?

हास्य—इसलिये कि मैं हास्य हूँ। मेरे अजीब होनेमें तो कोई शक ही नहीं। फिर इसमें तुम्हें ताज्जुब करनेकी क्या जरूरत ?

प्रकृति—बातें ही बनाना आता है या कुछ काम करना भी ?

हास्य—वाह री ! मेरी प्रकृति देवी ! इतने दिन जोरू-गीरी करनेपर भी तुम्हें यह नहीं मालूम हुआ कि मैं कैसे कामका आदमी हूँ।

प्रकृति—आखिर कुछ सुनूँ भी तो सही।

हास्य—जिसकी कहो उसकी आबरू घड़ी भरमें उतार लूँ।

प्रकृति—बस ? यह तो पुलिसवाले भी कर लेते हैं। कभी पाला पड़ेगा तो आटे-दालका भाव मालूम होगा।

हास्य—अजी, इसका खटका नहीं। आबरू सुसरी गई तो क्या, रही तो क्या ? तीन टकेकी चीजके लिये इतनी फ़िक्र करना भलेमानुसोंका काम नहीं है।

प्रकृति—क्यों ?

हास्य—यह चचा समाजसे पूछो। रोज ही उनकी आबरू जाती है मगर मजाल है कि चेहरेपर शिकन आ जाय। चाँद गंजी हो जाती है मगर तारीफ़ यह है कि मोछें बराबर ऐंठते जाते हैं।

प्रकृति—फिर भी तुमसे तो अच्छे हैं। क्योंकि वह भी

पत्र-पत्रिका-सम्मेलनमें जा रहे हैं और तुम टससे मस नहीं होते। यही तो कहती हूं कि तुम अजीब आदमी हो।

हास्य—मुझे भी क्या कोई खुशामदी टट्टू समझ रखा है कि "मान न मान बड़ी खाला सलाम ?"

प्रकृति—यह कैसे जानते हो कि तुम्हारा वहाँ मान नहीं है ?

हास्य—अरी श्रीमतीजी, वहीं नहीं, बल्कि इस हिन्दुस्तानमें कहीं भी नहीं है।

प्रकृति—आखिर क्यों ?

हास्य—इसलिये कि ईश्वर मुझे एक हुनर देना भूल गये।

प्रकृति—वह क्या ?

हास्य—रोना। मैं पैदा भी हुआ तो भी कम्बख्तीका मारा हँसता हुआ ?

प्रकृति—तो इससे तुम्हारा नुकसान क्या हुआ।

हास्य—नुकसान ? अरी ! यह भी खबर है कि बच्चा बिना रोये दूध नहीं पाता।

प्रकृति—अच्छा, इसका प्रबन्ध मैं कर दूँगी। तुम चलो तो।

हास्य—वाहरी मेरी कलयुगी बीवी ! तुम धन्य हो, तभी तो आजकलके मर्द अपनी बीबियोंको मांसे भी बढ़कर सम-

झते हैं। मगर तुम मुझे इस मिहरबानीसे दूर ही रखो। वरना मैं तुमसे भी हाथ धोऊँगा।

प्रकृति—यह क्या कहते हो।

हास्य—वही जो भुगत रहा हूँ। क्योंकि गाय-भैंसोंको तो गोरी पल्टन चटनी कर गई, जिसके कारण यहाँ, जहाँ कि दूध-दहीकी कभी नदियाँ बहती थीं अब दवाकी तरह इस्तेमाल करनेको भी नसीब नहीं होते। इसलिये डरता हूँ कि कहीं तुमपर भी उसकी निगाह न पड़ जाये ताकि वर्त्तमान युगके बूचड़खानेमें तुम काम आ जाओ। और मैं उल्लूकी तरह देखता ही रह जाऊँ।

प्रकृति—हटो भी। क्या तुम अपने बेहूदेपनसे बाज न आओगे ?

हास्य—लीजिये, अब घरहीमें मेरी बातें बेहूदेपनकी समझी जाती हैं तो और लोग फिर क्यों न मुझे बेहूदा ख्याल करें ? इसीलिये तो मैं और भी कहीं नहीं आता-जाता।

प्रकृति—खैर! मुझे यह बताओ कि तुम यहाँसे चलोगे भी किसी तरह या नहीं ?

हास्य—आखिर तुम्हारे कामोंमें कौन-सी गड़बड़ी मचाता हूँ, जो मुझे यहाँसे हटानेके लिये तुली बैठी हो ?

प्रकृति—घबड़ाते क्यों हो, मैं तुम्हारे साथ चलूंगी।

हास्य—अब और बना। एक तो रेलवाले खाली पैसा-ही कमाना जानते हैं, मगर मुसाफ़िरोंको जगह देना नहीं। उसपर मैं एक तमाशा साथ लेकर चलूँ। जिसमें ठलुये पीछा न छोड़ें। हर स्टेशनपर दस-बीस उसी डब्बेमें घुसते रहें। "करघा छोड़ तमाशा जाये, नाहक चोट जुलाहा खाये।" ना भाई हमसे न होगा।

प्रकृति—क्या बताऊँ, यह मेरे भाग्यका क़सूर है जो ऐसे बेकदरेके पाले पड़ी।

हास्य—श्रीमतीजी, भाग्यको नाहक दोष देती हो। जब समाज और साहित्य दोनोंने तुम्हारी तरफ आँख उठाकर देखना भी पाप समझा तब तुम हर तरफसे हारकर मेरे गले पड़ी। तो अब क्यों पछताती हो? तुम्हें जाना हो तो जाओ क्योंकि मर्दोंके रोके आजतक भला कोई स्त्री रुकी है कि तुम्हीं रुकोगी। अव्वल तो तुम स्त्री और उसपर तुम्हारा नाम प्रकृति। ब्रह्मा भी तुमसे हारे हैं।

प्रकृति—मैं तो जाऊँगी ही और तुम्हें भी साथ ले चलूंगी।

हास्य—ऐसे जोरूके टट्टू तुम्हें कालिजोंमें बहुत मिलेंगे, जो इम्तहान छोड़कर जोरुओंके तलवोंपर नाक रगड़नेके लिये भाग आते हैं। मुझसे यह उम्मीद न रखो।

प्रकृति—अच्छा, अगर तुम्हें ठलुओंका डर है तो मैं मरदाने कपड़े पहनकर चलूंगी।

हास्य—अरे! कहीं यह ग़ज़ब मत कर बैठना। वरना 'मतवाला' तुम्हें चाकलेट समझकर चट ही कर जायगा। और दूसरे कपड़े बदलनेसे दिल थोड़े ही बदल जायगा। वही तो सब आफतोंकी जड़ है। वही कम्बख्त उचककर आँखोंकी खिड़कियोंसे झाँककर सारी दुनियाको अपने दोनों हाथोंसे बुलाने लगता है।

प्रकृति—फिर भी मर्दोंके दिलसे औरतोंका दिल अच्छा होता है।

हास्य—जी हाँ। सिर्फ़ फ़र्क़ इतना ही है कि मर्द चारों तरफ़ घूमघामकर अपने खूंटेपर आ भी जाता है, मगर औरत जो कहीं बहकी तो अन्तमें चौकके कोठे ही पर जाकर दम लेती है। इससे नीचे वह बात नहीं करती।

प्रकृति—नीचे तुम्हारे चाचा समाज जो टहला करते हैं। वह क्या करे बेचारी बड़ोंका लिहाज़ न करे?

(घूँघट काढ़े कलाका आना।)

कला—बहिन प्रकृति!

प्रकृति—कौन? बहिन कला!

(दोनोंका लिपटकर रोना)

हास्य—अरे ! यारो ! मैं खाली बैठे क्या करूँ ?

(एक शंख उठाकर बजाता है ।)

प्रकृति—(रोना छोड़कर हास्यके पास आती है ।) हाय हाय ! यह क्या करते हो ?

हास्य—जरा सुरमें सुर मिला रहा था; क्योंकि बिना साजके खाली अलापमें कहाँ मजा ? हां चलो शुरू करो। मैं भी तुम्हारा साथ दे रहा हूँ।

(फिर शङ्ख बजाता है)

प्रकृति—(हास्यके हाथसे शंख छीनकर जमीनपर फेंक देती है) पत्थर पड़े तुम्हारे शंखपर ! यह भी क्या मसखरापनका वक्त है ?

हास्य—तो श्रीमतीजी यह भी क्या कोई रोनेका वक्त है ? कुछ पूछो मत। औरतोंने तो कुत्तोंके भी कान काट लिये, जो मिलनेके वक्त भूँकनेके बदले कभी-कभी दुम भी हिला देते हैं। मगर औरतें—

प्रकृति—अजीब घामड़ हो। वह बेचारी मुसीबतके मारे रोती है और तुम्हें—

हास्य—तब तो ठीक है। मगर बीबी साहेबा, तुम लोगोंकी बातें समझनेके लिये ज्योतिष और सामुद्रिक विद्या दोनों हारी हैं। जानवरोंतकके हृदयकी थाह मिल जाती है,

मगर तुम्हारी नहीं। यही ज़रा-सी बातमें देख लो कि तुम मुसीबतमें भी रोती हो और खुशियालीमें भी। फिर मैं कैसे जान सकता था कि तुम्हारा कौनसा रोना असली है और कौन सा नकली।

प्रकृति—अच्छा अपनी लन्तरानी रहने दो। इस बेचारीकी भी खबर लोगे? यह आफतकी मारी तुम्हारे पास दौड़ी आई है।

हास्य—मजबूर हूँ, मैं कुछ बातचीत नहीं कर सकता।

प्रकृति—क्यों?

हास्य—क्योंकि तुम मेरे सामने खड़ी हो। पराई औरतोंसे अकेलेमें और चुपचाप बातें करनेका आजकल फैशन है?

प्रकृति—अरे! कुछ खबर भी है, यह कला है।

हास्य—कौन? कला! तुम्हारी बहिन और साहित्यकी बीबी? राम! राम! तब इतना लम्बा घूँघट क्यों है?

कला—क्या करूँ? मेरा मुँह दिखाने काबिल नहीं रहा। शिक्षाने मेरी नाक काट ली है।

प्रकृति—आंय, उस लौण्डीका यह जिगरा। जिसे यहाँ मुँह खोलनेका भी साहस नहीं होता था। कभी आँख मिलाकर बातें करनेकी हिम्मत नहीं पड़ी, उसी कम्बख्त शिक्षाने तुमपर यह गजब ढाया?

हास्य—चलो अच्छा हुआ। ऊबड़-खाबड़ मिटकर चेहरा तो बराबर हो गया।

प्रकृति—हाय! हाय! इस बेचारीकी तो नाक कट गई और तुम कहते हो कि अच्छा हुआ। उसपर और मुसीबत यह है कि इसके पतिने इसे घरसे निकाल दिया।

हास्य—यह भी कोई बुरी खबर नहीं। आजादी तो मिली।

कला—(आगे बढ़कर) बस, अब जलेपर और नमक न छिड़किये। ईश्वरके लिये मेरे कलेजेको जलनको शान्त कीजिये।

हास्य—तो इसके लिये क्या मेरी ही खोपड़ी फालतू समझ रखी है?

प्रकृति—दूसरे दुःख दर्दमें शरीक होना मनुष्यका धर्म है।

हास्य०—यह बड़ा बेवकूफ धर्म है जो पराये झगड़ेमें अपनी खोपड़ी तोड़ानेकी सलाह देता है। देखो हिन्दुओंको भला कभी एक दूसरेका साथ देते हैं?

प्रकृति—तभी तो हर जगह लात खाते हैं। वरना किसीकी मजाल है कि खुद ही छेड़के किसीको चपत लगा दिया करें। इसलिये बलासे, चाहे तुम्हारी खोपड़ी रहे या

टूटे, मगर बहिनके इस अपमानका बदला लेनेके लिये सम्मेलन चलना होगा।

हास्य—मेरा क्या; तुम्हीं पछताओगी। क्योंकि अगर यह खोपड़ी फूट गई तो बीबी तुम फिर फुटबाल किससे खेलोगी?

(स्वाभाविकताका आना)

स्वाभाविकता—जीजाजी! प्रणाम!

हास्य—कौन? भावकी स्त्री स्वाभाविकता?

कला—लो मेरी बहिन स्वाभाविकता भी आ गई। इससे शिक्षाका सब अनर्थ मालूम होगा।

प्रकृति—आओ बहिन गले मिल लूँ। बहुत दिनोंके बाद मिली हो।

हास्य—(दोनोंके बीचमें आकर) पहिले आप लोग मुझे बता दीजिये कि मिलते वक्त जो आप लोगोंका रोना होगा वह असली होगा या नक़ली?

प्रकृति—हाय! हास्य! अब देखो सब मसखरापन। चलो हटो, हम लोग नहीं मिलेंगी।

हास्य—वाह री! श्रीमतीजी! तुम्हारी तरह जो कहीं यहाँवाले भी हयादार होते तो अबतक हम भी अपनेको

तीसमारखाँ समझने लगे होते। काहेकों फिर कोई बात हमारी खाली जाती ?

स्वाभाविकता—अरे हमारी वजहसे आप लोग न लड़िये। लीजिये मेरे पतिने आपको यह पत्र दिया है।

(पत्र देती है)

हास्य—भाई वाह ! डाकखानेको चरका तो अच्छा दिया। यह पोस्टेज बढ़ानेका नतीजा है। आमदनी तो न बढ़ी। हाँ, डाकका बोझ अलबत्ता हलका हो गया। खैर, देखूँ खतमें क्या लिखा है।

(पत्र खोलकर पढ़ता है और बीच बीचमें अपनी राय भी जमाता जाता है।)

मसखरे भाई सलाम !

"हिन्दी साहित्यके दरबारमें मेरी मिट्टी पलीत हो रही है" (खैर किसी तरह मिट्टी स्वार्थ तो हुई। खाकमें मिलनेसे बची)—उसी कम्बख्त शिक्षाके मारे जो आपके यहाँ टुकड़ोंपर पली थी और जब कला और स्वाभाविकता अपनी बड़ी बहिन प्रकृतिके साथ आपकी निगहबानीमें रहतीं थी तो वह तीनों बहिनोंके पैर दबाया करती थी। मगर जबसे वह साहित्यके यहां कलाकी लौंडी होकर आई है तबसे आफ़त मचा रखी है। साहित्यकी मुंहलगी होकर घरकी मालकिन

बन बैठी है—(शाबाश ! अच्छी तरक्की की) यहां तक कि साहित्यपर अपना रङ्ग जमाते ही इसने कलाकी नाक काट ली—(नाक तो कटती ही । यह साहित्य और शिक्षाके बीचमें अपनी नाक क्यों डालने गई । वह भी क्या हमारा घर समझ रखा था, जहां शिक्षा सदा दुम दबाये रहती थी ।) नाक काटते ही कलाको साहित्यने घरसे निकाल दिया— (खूब किया ! कौन उल्लू भला नकटी बीबी घरमें रखना पसन्द करेगा ?) स्वाभाविकता अपनी बहिनका यह हाल देखकर यहाँ एक मिनट भी ठहरना नहीं चाहती, और मुझको इस दरबारको लात मारकर चल देनेको कहती है । मगर मैं मजबूर हूँ; क्योंकि पत्र-पत्रिका-सम्मेलनमें हमारे साहित्य साहब सभापति हुए हैं और समाज मन्त्री हैं—(अररर ! और चाचा हास्य कहां गये ? अच्छा देखा जायगा) इसी सम्मेलनके कारण कामका बहुत बोझ है । इस वक्त नौकरी छोड़ना ठीक नहीं मालूम होता । इसलिये मेरी स्त्री अकेली ही आती है । कृपया अपने यहां इसे शरण दीजिये ।

आपका वही 'भाव'

प्रकृति—देखी शिक्षाकी धाँधली ?

हास्य—अच्छा बीबी ! सम्मेलन चलनेकी तैयारियाँ करो ।
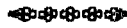
प्रकृति—धन्य भाग! कि इन दुखियोंके दुःखने साहित्यसे बदला लेनेके लिये तुम्हें उत्तेजित तो किया।

हास्य—जी नहीं। माफ कीजिये। बन्दा बदला-उदला लेना नहीं जानता।

प्रकृति—क्यों?

हास्य—क्योंकि लड़ाई, फौजदारी, मारकाट, बीमारी, हत्या और मुसीबतसे मुझे स्वाभाविक घृणा है। इसलिये किस बीरतेपर भला किसीसे बदला ले सकता हूँ?

प्रकृति—तब यकायक चलनेके लिये कैसे तैयार हो गये?

हास्य—क्योंकि अब घरपर मेरी खैरियत नहीं है।

प्रकृति—क्यों?

हास्य—क्योंकि अब यह घर हमारा घर नहीं रह गया; बल्कि भागी भटकी औरतोंका कांजीहौस हो गया। इसकी खबर फैलते ही दुनियाभरकी स्त्रियां जोरूगिरीसे एकदम हड़ताल बोलकर सीधे यहीं दौड़ेंगी। घरमें एक ही औरत आफत मचानेके लिये काफी है न कि ढेरकी ढेर। इसलिये मेरा यहाँसे अब खिसक जाना ही ठीक है।

प्रकृति—खैर! तुम वहांतक चलो तो सही। यही बड़ी बात है। अच्छा मैं झटपट अपना सामान ठीक कर लूँ। आओ बहिनों, भीतर चलें।

(प्रकृति, कला और स्वाभाविकताका जाना)

हास्य—(अकेला) अच्छा मैं भी जरा टेलीफोनसे अपने भक्तोंसे बातचीत कर लूँ। शायद वह लोग भी साथ चलें तो क्या कहना है।

हास्य—(टेलीफोनपर जाकर) हलो ! क्यों मतवाले !

उत्तर—(टेलीफोन द्वारा पर्देके भीतरसे) कौन है बे ?

हास्य—भई वाह ! इसने तो ऐसी चपत मारी कि खोपड़ी भिन्ना गई। इसकी जबान क्या तम्बोलीकी कतरनी है। (टेलीफोनसे) अरे भई, बहुत चढ़ा गए हो क्या ?

उत्तर—चुप रहो जी। मैं इस वक्त डण्ड पेल रहा हूँ।

हास्य—यह हजरत तो चौमुखी लड़नेकी तैयारियाँ कर रहे हैं। अच्छा, अब दूसरा दरवाजा झाकूँ। (टेलीफोनसे) भाई, मौजी हो तो ?

उत्तर—क्या कोई विज्ञापन छपाना है। मैंने इसका दर बहुत सस्ता कर रखा है।

हास्य—तभी मौज कर रहे हो। (टेलीफोनसे) भइया गोलमाल !

उत्तर—पटनेसे भागकर कलकत्ते आया और यहाँ भी ऊधम मचानेवाले पहुंच गये। नाकमें दम है। हर जगह गोलमाल, कहीं भी चैन नहीं।

हास्य—यह तो आपके नामहीका प्रभाव है, माफ कीजियेगा। (टेलीफोनसे) अजी, मिस्टर भूत !

उत्तर—भला शैतानको पटकनेके लिये कोई पेंच मालूम हो तो बताओ। पुरस्कारमें एक किताब दूंगा।

हास्य—भई वाह ! दोनों पल्ले बराबरके हैं। पेंचकी क्या जरूरत ? हमारे अखाड़ेमें तो सभी अपनी-अपनी मस्तीके जोरमें हैं। यहाँ कहना सुनना बेकार है। अच्छा अब दूसरोंसे भी दो-दो बातें पूछ लूं; क्योंकि अपनोंसे बढ़कर वक्तपर पराये ही साथ दे जाते हैं (टेलीफोनसे) श्रीमान् बंगवासीजी !

उत्तर—समय साधारण है। पानी अच्छा बरसा है। जमीन अभीतक गीली है। समाचार नगर अगड़म बगड़म शर्मा।

हास्य—यह भई अपनी धुनके पक्के हैं (टेलीफोनसे) बाबा वेंकटेश्वर महाराज !

उत्तर—हमने उपहारमें बांटनेके लिये एक नई मशीन मंगवाई है जिसमें बिना लेखक और कम्पोजीटरकी सहायताके पुस्तक आपसे आप तैयार हो जाती है।

हास्य—अब क्या पूछना है, हिन्दीके सम्पादक लेखकोंको पुरस्कार देनेसे बाल-बाल बच गये। (टेलीफोनसे) बाबू भारतमित्र !

उत्तर—उतावली न करो। समाचारको अभी-अभी सिरकेमें डाला है। कुछ दिनों बाद इसका आचार चखाऊंगा।

हास्य—धन्यवाद। क्या बताऊँ। जहाँ जाय भूखा, वहाँ पड़े सूखा। जब अपने ही लोग बेगाने हैं गैर तो फिर गैरही है! खैर चलते-चलाते पत्रिकाओंको भी सलाम-बन्दगी कर लूँ। किसी उम्मीदसे न सही, तो फर्ज अदाईहीके ख्यालसे सही। (टेलीफोन) अजी श्रीमतीजी प्रभा देवी!

उत्तर—क्योंजी, भला चन्द्रलोककी स्त्रियोंकी दुम कितनी बड़ी होती है?

हास्य—भई वाह! दूर की सूझी। (टेलीफोनसे) महा-रानी "गल्पमाला" देवी!

उत्तर—गल्प फौरन भेजो। अगर 'फर्स्ट डिविजन' में पास होंगे तो 'डिपलोमा' 'सेकेण्ड डिविजन' में 'डिगरी' और 'थर्ड डिविजन' में 'सरटिफिकेट' मिलेंगे। और धन्यवाद ऊपरसे!

हास्य—अरे बाप रे बाप! यह तो 'यूनिवर्सिटी' नानीकी भी चची नीकली। साढ़े तीन इञ्चकी तो लेखनी, उसमें भी ढाई इञ्च स्कूल और कालिजके इम्तहानोंमें घिस गई! अब एक इञ्च जो जरा पेट पालनेके लिये बची भी है
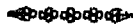
तो उसकी भी आबरू बिगाड़ना चाहती है। हाथ जोड़ता हूँ श्रीमती जी! कृपा कीजिये। यहाँ इम्तहानके नामसे बुखार आता है। अब रङ्गरूटोंके ऐसा दम नहीं रहा। (टेलीफोनसे) मिस 'मोहनी' !

उत्तर—अभी महीना पूरा भी नहीं हुआ। बीचहीमें पाठक लगे ऊधम मचाने।

हास्य—ठीक है। ग़लती हुई। हिन्दीकी मासिक पत्रिकाओंकी यन्त्रीका हाल मुझे मालूम न था। (टेलीफोनसे) बीबी 'गृहलक्ष्मी' जी!

उत्तर—जी हाँ, मैं सेवामें उपस्थित हूँ। अगर आप मुझे मेरी वार्षिक फीस भेजकर बुलाइये तो ईश्वर चाहेगा आपकी गृहलक्ष्मी सालभरतक बड़ी नेक रहेंगी।

हास्य—उसके बाद बदमाश हो जायेंगी! खूब! कहो भइया हास्य, रह गये अपना-सा मुँह लेकर। अब क्या करोगे किसीसे पूछकर? तुम्हारा कोई साथ देनेवाला नहीं। अपनी धुनके आगे दूसरेकी खबर कोई नहीं लेता। चलो गाड़ीका वक्त आ गया।

[हास्यका जाना]

दूसरा दृश्य

सड़क

भारतमाता और उसका पुत्र समाज।

(समाज भारतमाताके बाल पकड़कर घसीटता हुआ प्रवेश करता है)

समाज—ला सीधी तरहसे 'पत्र-पत्रिका-सम्मेलन' का पण्डाल बनानेके लिये रुपया दे, नहीं तो तेरी खोपड़ीका एक-एक बाल बीन लूँगा ! सुनती है कि नहीं ?

भारतमाता—अरे ! ओ निर्दयी पुत्र ! मेरे बाल छोड़ दे। हाय ! मैं रुपये कहाँसे दूँ। मैं खुद ही भूखों मर रही हूँ। अरे हत्यारे समाज। तूहीने अपनी इस भारतमाताको जगत्‌की महारानीसे आज एकदम भिखमङ्गी बना डाला है। इज्जत गई शान गई। धन वो माल गये। अब यह केवल लोथ ही रह गया। हाय ! अब भी क़साई तेरा कलेजा नहीं पसीजता ?

समाज—बस, टरटर मत कर। रुपये तुझे देने होंगे जैसे बने तैसे। तेरे ही उद्धारके लिए यह रुपये चाहिये।

भारतमाता—रहने दे ओ पाखण्डी ! बस, अब जलेपर नमक न छिड़क। इसी तरहसे कह कहके तूने ओ समाज ! हमारा इस गरीबीमें भी पेट काटकर बचाया हुआ सब धन लूट लिया। मैं बाज आई तेरे सम्मेलनोंसे। मैं सैकड़ों बरससे तेरा यही रङ्ग देख रही हूं। और तू उद्धारके बहाने मुझे दिनों-दिन और भी मारता जाता है। न जाने किस साइतमें तूने मेरी कोखमें जन्म लिया था। जा मेरे पास अपनी कफनके लिये भी अब एक कौड़ी नहीं रह गई है। मैं खुद धर्म-कर्म सब गंवाकर दूसरोंके टुकड़ोंपर इस पापी पेटको पाल रही हूँ।

समाज—कम्बख्त, रुपये नहीं हैं तो मैं तेरे हाड़ मांससे रुपये वसूल करूंगा। आखिर तू मेरी मां क्यों बनी थी ? मां-बाप होते किस दिनके लिये हैं। जानती नहीं कि मैं इस सम्मेलनका मन्त्री हुआ हूँ। इसका सब इन्तजाम मेरे सर पर है। बिना रुपयेके मैं क्या कर सकता हूँ ? ला जल्दी रुपये निकाल। क्यों अपनी दुर्दशा कराती है ? (भारतमाताको मारता है।)

भारतमाता—हाय ! हाय ! देखो आजकलके पुत्रका हाल !

('चांद' का आना)

चांद—खबरदार ! हाथ रोक, ओ पाखण्डी समाज ! मैं आ गया।

समाज—कौन है तू ? निकल यहांसे। मैं अपनी मांको मारता हूँ। तेरे बापका क्या बिगड़ता ?

चांद—मैं हूँ "चाँद" मासिक-पत्र ! तेरा जानी दुश्मन।

समाज—अच्छा, तो मैं भी हूँ समाज ! तेरे मुँहपर कलंक लगानेवाला।

[दोनोंका लड़ना]

भारतमाता—हाय ! हाय ! मेरा पुत्र मारा जा रहा है। इसने मेरी दुर्दशा कर डाली है, फिर भी मांकी ममता अपने पुत्रकी मौत अपनी आँखोंके सामने नहीं देख सकती। इसे किस तरह बचाऊँ ?

(चांदके पैरमें मारती है)

समाज—हाय ! इसने मुझे घायल कर डाला।

(गिर पड़ता है)

चाँद—हाय ! मेरी टांग टूट गई।

(गिर पड़ता है)

भारतमाता—(समाजके पास आकर) बेटा, तुम्हारी बलइयाँ लूँ। तुम्हें कहाँ चोट लगी ?

चाँद—अरी ओ मूर्खा तभी तो तेरी यह दुर्दशा है। तू अपनी भलाई चाहनेवालेका कभी साथ नहीं देती। उल्टे तू उसकी टांगें तोड़ती है।

भारतमाता—माता अपने पुत्रके दुःखके आगे अपना सब दुखड़ा भूल जाती है!

(समाजको सहारा देकर ले जाती है।)

चाँद—तब फिर ओ भारतमाता! अपने भाग्यको क्यों रोती हो? जन्मभर अपने पाप भोगो!

(उठकर लंगड़ाता हुआ जाता है)

(दूसरी तरफसे माधुरी, सरस्वती और उसके पीछे हास्यका आना)

माधुरी—श्रीमती सरस्वती देवी! आप बहुत दूनकी हांकती थीं। मगर देखिये मेरी सुन्दरताका असर, कि वह आदमी (हास्यकी तरफ इशारा करके) मुझपर मोहित होकर मेरे पीछे-पीछे स्टेशनपरसे ही आ रहा है।

सरस्वती—वाह री! माधुरी! मुझीसे चाल चलने लगी। वह मुझे छोड़कर भला तुमपर क्यों मरने लगा?

माधुरी—इसलिये कि सारा हिन्दी-संसार मेरा ही दम भर रहा है।

सरस्वती—रहने दो। बहुत शानकी न लो। आंखोंकी चाहपर बहुत फूली न समाओ। अभी कुछ दिनों हृदयमें भी प्रेम उभारना सीखो।

माधुरी—वाह जी ! बड़ी अम्मा ! जवानी ढल गई, मगर अभी हृदयसे प्रेमकी उमंग नहीं गई ।

सरस्वती—जवानी बीत गई तो उसके बदले तजुर्बा भी तो बढ़ गया । इसी तजुर्बेकी बदौलत मैंने उस आदमीको अपने प्रेम-जालमें ऐसा फांसा है कि परछाहींकी तरह मेरे पीछे लगा है ।

हास्य—(अलग) वाह ! वाह ! यह रूपकी घमण्डी और वह तजुर्बेका दम भरनेवाली, अच्छी जोड़ी मिली ।

माधुरी—क्या कहना है ! बुआ वह दिन गए, जब बाजारमें अकेली तुम्हारे ही रूपकी दूकान थी और रसिकगण झक मारकर तुम्हारे द्वारपर आया करते थे । मगर अब तो हर गली कूचेमें एक-से-एक बढ़िया दूकानें खुल गई हैं । अब तो लोग वहीं जायँगे जहाँ अधिक तड़क-भड़क होगी ।

सरस्वती—अरी जुम्मा-जुम्मा आठ दिनकी बच्ची । चार आदमियोंकी भीड़ देखकर जमीनपर पैर रखना न छोड़ । क्योंकि खाली तड़क-भड़कहीसे दूकान ऊँची नहीं होती ।

हास्य—(अलग) वाह री स्त्री जाति ! कितनी ही तुम लोग शिक्षिता हो जाओ, फिर भी बिना लड़े एक जगह नहीं रह सकती ।

माधुरी—अरी जा बहुत बढ़-बढ़कर मत बोल ।

सरस्वती—बहुत जवानी न दिखा। नहीं तो मुँह नोच लूँगी।

माधुरी—तो मैं भी चेहरा बिगाड़ दूँगी। देखती नहीं, तुमसे दुगुनी हूँ।

सरस्वती—याद रख, मेरी भी हड्डियाँ पुरानी हैं।

(हास्यका दोनोंके बीचमें आ जाना)

हास्य—हांय! हांय! देशके मरदुए क्या मर गये जो आपलोग अपनी मर्दानगी दिखाने लगीं?

सरस्वती—यह लड़ाई नहीं, बल्कि अपने प्रेमीको अपने पास खींचनेकी चाल थी। माधुरी! देखा मेरा तजुर्बा। मेरे प्रेमीसे आखिर न रहा गया। मुझे सहायता देनेके बहाने अपना प्रेम प्रकट कर ही बैठा।

माधुरी—वाह री सरस्वती! यह मुझे बचाने आया है।

(दोनों हास्यको पकड़कर अपनी-अपनी तरफ खींचती हैं)

हास्य—हाय! हाय! दो मुल्लाओंमें यह मुर्गा हराम हुआ।

सरस्वती—इसीसे न पूछ लो कि यह किसको चाहता है। (हास्यको अपनी तरफ खींचकर) क्यों जी, तुम किसे प्यारी समझते हो, इसे या मुझे?

हास्य—श्रीमतीजी! मैं तो इस समय सबसे प्यारी अपनी जानको समझता हूँ।

सरस्वती—चल मरदुए, दूर हो ?

माधुरी—(हास्यको अपनी तरफ खींचकर) सच बताओ, तुम किसे सहायता देने आये हो।

हास्य—श्रीमतीजी ! उसीको जो मुझे इस मुसीबतमें सहायता दे।

माधुरी—मर कम्बख़्त।

सरस्वती—क्यों रे बदमाश, तू फिर मेरे पीछे-पीछे क्यों आया ?

हास्य—सम्मेलनका रास्ता जाननेके लिये।

माधुरी—और तू मुझे इतना घूर क्यों रहा था ?

हास्य—मैं आपके दोपट्टे को देख रहा था, क्योंकि मेरी स्त्रीने स्टेशन ही पर आपको देखकर मुझसे कहा था कि मुझे पहिले बाजारसे ऐसी ओढ़नी ला दो, तब मैं शहरमें चलूँगी।

माधुरी—यह बड़ा बेहूदा मालूम होता है।

सरस्वती—बिल्कुल लुंगाड़ा है।

हास्य—जी हाँ। इसके अलावा कुछ पाजी भी है और मुँहफट भी है।

माधुरी+सरस्वती—अरे तू कौन है ?

हास्य—मैं हास्य हूं सरकार !
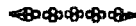
सर०—राम! राम! भाग यहांसे। कहाँसे इस कम्बख्त-से मुठभेड़ हो गई! मैं तो इसे कभी मुँह नहीं लगाती।

(माधुरीकी तरफ हास्यको ढकेलकर चल देती है।)

हास्य—तभी अदरकसे सोंठ हो रही हो।

माधुरी—खबरदार! इधर मत आना। मैं तेरी तरफ आंख उठाकर भी नहीं देखती।

हास्य—तभी तो मेरे चित्रोंहीसे तुम अपना मन भर लेती हो। क्यों श्रीमतीजी?

माधुरी—(दो हत्थड़ मारकर) चुप लुच्चाड़े, भ्रष्टाचारी छिछोरा, अश्लीलताकी दुम कहींका।

(चल देती है।)

हास्य—वाह! यारो! उपाधियां तो बे-भावकी मिलीं।

(एक आदमीका सरपर एक गट्ठर लादे आना)

आदमी—अरे भाई! कोई समाजका सम्बन्धी है?

हास्य—क्यों जी चचा, समाजका सम्बन्धी ढूंढ़ते हो?

आदमी—वाह! वाह! खूब मिले! क्या आप उनके भतीजे हैं?

हास्य—जी नहीं। खास चचा हूँ।

आदमी—मगर आप तो उनको चचा कहते हैं।

हास्य—हमारे यहां ऐसी ही रिश्तेदारी होती है। तुम

इन बातोंको क्या समझो ? अच्छा यह बताओ तुम उनके सम्बन्धीको क्यों ढूंढ़ते हो ?

आदमी—वह अस्पतालमें पड़े हैं। उन्होंने कहा है कि जो कोई मेरा सम्बन्धी मिले उसे यह पत्र और सामान दे देना।

हास्य—(पत्र लेकर पढ़ता है)

"मेरे सम्बन्धी, मैं सम्मेलनका मन्त्री हूँ, परन्तु बीमारी-के कारण सम्मेलनमें आनेसे मजबूर हूँ। इसलिये आप मेहरबानी करके मेरी एवजीपर वहाँ जाइयेगा और मेरा व्याख्यान जिसमें सभापति साहित्यजीके गुणोंका बखान है, सम्मेलनमें पढ़कर साहित्यका परिचय करा दीजियेगा। उसके बाद दूसरा व्याख्यान, जिसे मैंने सभापतिजीके लिये लिख दिया है, साहित्यको पढ़नेके लिये दे दीजियेगा। साथमें उपाधियाँ जाती हैं, उन्हें पत्र-पत्रिकाओंको बांट दीजियेगा"—भई वाह! आग लेनेका गये और पैगम्बरी मिल गई। (आदमीसे) क्यों भई, चचा सचमुच बीमार हैं ?

आदमी—जी हाँ, कहीं मारे गये हैं, मुँह सुज गया है।

हास्य—भला मरनेकी भी आशा है ?

आदमी—वाह जनाब, मरनेकी आशा या कुशंका ?

हास्य—अजी, हमारी भाषा समझनेके लिये अक्ल चाहिये।

आदमी—अच्छा तो लीजिये व्याख्यान और उपाधियोंका यह गट्ठर !

हास्य—रख दे उधर (आदमी गट्ठर रखकर जाता है।) मैं अब सम्मेलनका मन्त्री हूँ या बोझ लादनेका खच्चर ? धत् तेरे सामानकी ऐसी तैसी।

(गट्ठरको ठोकर मारकर चल देता है।)

तीसरा दृश्य

सम्मेलन

(पत्र—पत्रिकाओंका जमघट। साहित्यका सभापतिके आसनपर ऊंघते हुए दिखाई देना। हास्यका प्लेटफार्मपर खड़ा होना)

हास्य—(दिलमें) सम्मेलनमें मन्त्रीगिरीकी बदौलत शानकी जगह तो मिल गई। मगर अब करूँ क्या ? मन्त्रीगिरीका हथियार तो सड़कहीपर फेंक आया और यहाँ मन्त्रीगिरी क्या करूँ ? अपना सर ! हाय सोचनेका भी वक्त नहीं। और पहिला व्याख्यान मेरा ही है। ईश्वर ! आबरू तेरे हाथमें है। (प्रकट) देखिये आपलोग बहुत शोर कर रहे हैं। यह कबड़ियाखाना नहीं है, जनाब सम्मेलन है, और पत्र-पत्रिका सम्मेलन। (खांसता है) अच्छा अब चुप हो जाइये। कार्रवाई शुरू होती है (खांसता है) (अलग) इतना वक्त तो टाल मटूलमें लगाया फिर भी दिमागमें बोलनेके लिये एक शब्द भी नहीं आया। (प्रकट)

पत्र-पत्रिका-सम्मेलन

"यारो ख़ताको माफ करो मैं नशेमें हूँ।
शीशेमें मय है, मयमें नशा, मैं नशेमें हूँ॥"

स्त्रीलिङ्ग और पुलिङ्ग महाशयगण!

यह तो मेरी स्तुति, वेदमन्त्र, वन्दना, श्रीगणेशायनमः या बिस्मल्लाह जो समझिये वह है। आगे प्रोग्राममें यह है कि मैं सभापतिजीके गुणोंका बखान करके आपलोगोंसे इनका परिचय कराऊँ। आपही सभापतिजी हैं जो कुर्सीपर ऊँघ रहे हैं और बड़े बेढब हैं। आप हैं हिन्दी-साहित्य, एकदम बी० ए० पास हैं। मगर ज़रा मिडिल फेल। कुम्भ-करणसे बाज़ी लगाकर सोये थे। वह तो अपने मुल्कके काम आ गये मगर आप खर्राटे ही भरते रहे! बड़ी मुश्किलों-से कुछ कुनमुनाये तो लुढ़ककर गिर पड़े सीधे तिलिस्ममें। ख़ैरियत इतनी थी कि हमारी ऐयारीका बटुआ साथ था, इसलिये लखलखा सूँघते ही उसमेंसे दुम झाड़कर निकले और सीधे पूरबकी ओर भागे और सारे बङ्गालको चर गये! मगर पागुर किया नहीं और इधर पाचन-शक्तिने भी जवाब दे दिया, इसलिये तोंद बेईमानकी कब्रकी तरह फूल गई। इस मोटाईपर आप भी अपनेको पाँचों सवारोंमें समझते हैं। परन्तु अपने भारीपनके कारण अपने पैरोंके बल चल नहीं पाते और चलते भी हैं तो यह पता नहीं चलता कि

आप सीधे चलते हैं या उल्टा, क्योंकि आपकी खोपड़ी बहुत ही पतली है, इसलिये यह जानना कि दुम किधर है और सर किधर जरा टेढ़ी खीर है।

आपकी बुद्धिका क्या पूछना है—आजकल आपको 'कला' और 'शिक्षा' में तमीज ही नहीं हुई कि कौन मेरी स्त्री है और कौन नौकरानी। तभी तो शिक्षा आपकी बगलमें बैठी हुई मजे उड़ा रही है और कला बेचारी नाक कटाये गलियोंमें खाक उड़ा रही है। आपको अपनी सेवा करानेका भी शौक है मगर सब बेगारमें। इसलिये आपकी सेवा भी खूब होती है। ऐसे जीव आपकी सभाके सभापति हैं? यह इनका नहीं आपलोगोंका सौभाग्य है। कहिये जनाब, कोई गल्ती तो नहीं हुई, अच्छा अब आपलोग सभापतिजीका बढ़िया रटा हुआ व्याख्यान सुनिये। (साहित्यको जगाकर) अब आपके भूँकनेकी बारी आ गई।

साहित्य—(चौंककर) हाँ! अच्छा लाओ मेरा व्याख्यान दो, पढ़ूँ।

हास्य—(अलग) अररररर। उसे भी तो सड़कपर ही फेंक आया। अब कौनसा बहाना करूँ? (प्रकट) आपका व्याख्यान तो सचित्र छपनेके लिये भेजा गया था, मगर

अभी तक छपकर नहीं आया। आप जानते ही हैं कि चित्र छापनेवाले वक्तपर हमेशा दगा देते हैं।

साहित्य—ठीक है इसकी ताईद आजकल पत्र और पत्रिकाएँ दोनों करती हैं। अच्छा तो प्रोग्राममें क्या है?

हास्य—मेरी 'स्पीच' के बाद आपकी और उसके बाद उपाधियोंका बाँटना।

साहित्य—उसके बाद?

हास्य—टाँय टाँय फ़िस।

साहित्य—अच्छा तो मेरी स्पीच 'टाँय-टाँय फ़िस' के बाद रखो। मुमकिन है उस वक्त तक मेरा व्याख्यान छप-कर आ जाये।

हास्य—सही है। और इधर मिस्टर नाटकमल और बाबू उपन्यासरामकी स्पीचें कराये देता हूँ, ताकि सारा वक्त ख़तम हो जाये और आपको व्याख्यान देनेकी नौबत ही न आये। कहो कैसी कही?

साहित्य—वाह! वाह! यह सबसे उत्तम है। यही करो।

हास्य—(खड़ा होकर) महाशयगण और महाशयत्री गणिका! सभापतिजीकी तबियत ज़रा सफ़रमें ख़राब हो गई है। इसलिये आप इस वक्त अलाप नहीं सकते। इनका

व्याख्यान अन्तमें होगा। तब तक और लोगोंके लेक्चर सुनिये। आइये मिस्टर नाटकमल!

नाटक०—(प्लेटफार्मपर आकर) मैं अपनी दुर्दशा भला किस मुँहसे बयान करूँ ? आखिर मेरी सूरत भी हो तब तो। नाटककारोंने उसे ऐसी बिगाड़ी है कि वह देखने काबिल ही नहीं रही। बस, मेरा हाल केवल सुनही कर मेरे भाग्यपर आँसू बहा लीजिये। हाँ, नाटक मण्डलियोंके यहाँ मेरी मुह-दिखाई होती है। मगर हाय! वहाँ सीन-सीनरीकी चका-चौंधमें पोशाककी जगमगाहटमें, पाउडरकी लीप-पोतमें, संगीतकी झनकारमें दर्शक मेरी असलियतकी थाह नहीं पाते। अगर कोई इन टट्टियोंकी आड़ हटाकर जरा मुझे गौरसे देखे तो मेरी व्यथा कुछ कुछ अनुमान की जा सकती है। क्योंकि मेरे अंग-अंगमें जोड़ लगाकर मेरा ढाँचा बना है। सर विलायती है तो धड़ मुल्तानी। हाथ बंगालके हैं तो पैर गुजरातके। इसीलिये मुझमें स्वाभाविक बल, भाव, सुन्दरता और सुडौलपन कुछ भी नहीं है। ढाँचा बेडौल, चाल बेतुकी, बातें लचर, रंग बदरंग और उसपर न मैं Tragedy में हूँ न Comedy में, बल्कि एक अजीब गड़बड़घोटाला! फिर मैं किस बीरतेपर स्टेजसे बाहर क़दम रखनेकी हिम्मत करूँ ? साहित्यके अखाड़ेमें तिल भर भी बैठनेका ठौर नहीं।

मिलता। पर्देहीके भीतर मैं पैदा होता हूँ और वहीं मेरा घुट-घुटकर दम निकल जाता है! जब मैं रोने लगता हूँ। भण्डैती मेरी छातीपर कोदो दलने लगती है। जब मैं हँसना चाहता हूँ, तो बेहूदेपन और भद्देपनके मारे आँसू निकल पड़ते हैं। कोई भी पत्र-पत्रिका मेरी हालतपर तरस नहीं खाती और बनते हैं यह लोग देश और साहित्यके रक्षक। अफसोस!

हास्य—मिस्टर नाटकमल! आप घबड़ायें मत, यह सम्मेलन आपकी दुर्दशापर शोक प्रकट करता है। अच्छा बाबू उपन्यासराम! अब आप भी अपना रोना शुरू कीजिये!

उपन्यास—(प्लेटफार्मपर जाकर खड़ा होता है) सभी देशोंमें उपन्यासको पत्र और पत्रिकायें सर आखोंपर चढ़ाये घूमती हैं। और यहाँ यही लोग मेरी गर्दनपर छुरी चलाते हैं। गल्पोंके आगे मुझे पनपने ही नहीं देते। मेरे सेवकोंको हर वक्त छोटे-मोटे लेखोंमें उलझाये रखते हैं। हाय! फिर मेरी सेवा कौन और किस तरह करे? अगर चोरी-छिपे किसीने मेरा हाथ भी पकड़ा, तो समाजके डरके मारे लेखक सच्चाईपर मुख मुझे देखने नहीं देते। मुझे हमेशा बनावटी और झूठी बातें कहनी पड़ती हैं। यह झुठाई और बनावट मेरी अपनी है और बाक़ी सब सामान मेरे भण्डारमें चोरी

या मंगनीके हैं। इसलिये हरदम डरता रहता हूँ कि जबतक कुछ अपना माल न हो जाय। तबतक यह पराये माल कैसे हजम होंगे ?

हास्य—अच्छा सब्र कीजिये। इस सम्मेलनको आपके साथ पूरी सहानुभूति है। ओफ़। ओ! सारा वक़्त ख़तम हो गया और अभी उपाधियाँ भी बाँटनी है। माफ़ कीजियेगा आपलोगोंको उपाधियाँ जर्मनीसे बनकर नहीं आ सकीं। इसलिये मैं खास स्वदेशी पैरकी बिनी, बिल्कुल खद्दरकी उपाधियाँ इस सम्मेलनकी तरफसे सेवामें भेंट करता हूँ। मगर सबसे पहिले और सबसे अच्छी उपाधि 'साहित्य-क़लन्दर' मैं अपने लिये और 'साहित्य-कलङ्किनी' अपनी स्त्री प्रकृतिके लिये चुने लेता हूँ। मन्त्री होकर भला इतना भी फायदा न उठाऊं ? इससे जरा घटिया उपाधि, 'निपोड़शंख'की सभापतिजीको दी जाती है। यह लीजिये हजरत ! 'घरफूंक-बहादुर' की उपाधि समाजको बैरंग भेजी जायगी। मिस्टर नाटक ! लीजिये 'साहित्य चौपट' की उपाधि। बाबू उपन्यासको 'साहित्य-ढच्चर' गल्पको 'साहित्य-बेडौल' 'काव्यको 'साहित्य-गड़बड़', कलाको 'साहित्य-दुर्दशा', शिक्षाको 'साहित्य-दुमदराज, भावको 'साहित्य-कच्मूमड़', स्वाभाविकताको 'साहित्य-कुकड़ढुम'। अच्छा अब पत्र-पत्रिकाएं

आगे बढ़ें। माफ़ कीजिये आप लोगोंकी लिस्ट कहीं खो गई है, इसलिये आप लोगोंके नाम सिलसिलेवार याद नहीं हैं। यह क्या है ? 'साहित्य-कुड़ुमधुम' की उपाधि। यह 'माधुरी' के लिये है। आइये, आइये ?

साहित्य-डम्पलाट' प्रभाको, 'साहित्य-नानी' सरस्वतीको।

अच्छा ! मिस 'मनोरमा' आप उधर कहाँ छिपी हैं। ज़रा सामने आइये। लीजिये 'साहित्य-धमधूसड़'। बड़ी मोटी उपाधि है संभालिये।

मतवाला—क्यों जनाब ! आप हमारे जमादार होकर भी अबतक हम लोगोंपर निगाह न की !

हास्य—ख़फ़ा न होइये ! आप भी लीजिये 'साहित्य-चपत'। ('ग्रामगज़ट' का खड़े होकर गड़बड़ करना)

ग्रामगज़ट—क्यों जनाब ! आपको मालूम है कि मैं चापलूस नगरका 'ग्रामगज़ट' हूँ। इतनी देर हो गई। आप इधर देखते ही नहीं।

हास्य—तभी आप अमन फैलाना चाहते हैं। घबड़ाइये नहीं, यहाँ ढेरों उपाधियाँ हैं। बिना नाक रगड़े मिलेंगी।

ग्रामगज़ट—मगर अच्छी-अच्छी तो सब बँट गईं।

हास्य—नहीं, देखिये 'साहित्य-चुकन्दर' की कितनी बढ़िया उपाधि आपके लिये बचा रखी है।

दुमदार आदमी

ग्रामगज़ट—आप अपनी उपाधियाँ अपने घर रखिये। मित्रो! फेंक दो इसकी उपाधियाँ इसीके मुँहपर।

सब पत्र-पत्रिकायें—ठीक है, ठीक, बड़ी ख़राब उपाधियाँ हैं। फेंक दो और मारो भी इसे।

हास्य—हाय! हाय! इसने तो सचमुच अमन फैला ही दिया। (सबका हास्यपर झपटना)

हास्य—दोहाई व्यंग देवताकी, दोहाई मिस्टर कारटूनकी। मेरी जान बचाइये।

पटाक्षेप

न घरका न घाटका

१६२५ में 'चांद' ने अपने शिशु-अंकमें एक लेख गर्भ सम्बन्धी प्रकाशित किया था। उसपर बहुतसे लोग 'चांद' से बिगड़ खड़े हुए थे। इसलिये उनके आक्षेपोंके उत्तरमें यह प्रहसन लिखा गया और उसी साल यह 'चाँद' में प्रकाशित हुआ।

इस प्रहसन के पात्र और पात्री

पात्र—

समाजराय।

जनताराय।

पाठकमल।

चाँद।

द्वारपाल—चाँदका नौकर।

पं० अधिकारीनाथ—म्युनिसिपल मेम्बर।

सफ़ाईराय—सफ़ाईका दारोगा।

अरदली—म्युनिसिपल्टीका चपरासी।

चार भंगी।

पात्री—

भारती—समाजरायकी स्त्री।

शिक्षा—भारतीकी सहेली।
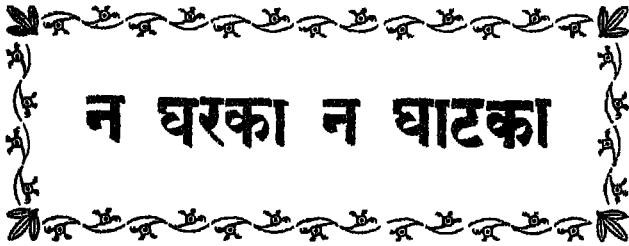
पहला दृश्य

सड़क

[समाजरायका नाकपर पट्टी बांधे घबड़ाते हुए आना]

समाज०—धत् तेरे सम्पादकों और ग्रन्थकारोंकी दुममें धागा। कम्बख्तोंने आजकल अश्लीलताके नाबदानके नाबदान बहा दिये हैं। क्या बताऊँ, कोई भी पुस्तक, पत्र या पत्रिका पढ़ने योग्य नहीं, इसलिये मैं कभी इनकी तरफ आँख उठाकर

भी नहीं देखता हूँ और आज लाइब्रेरी जाना भी पड़ा तो नाकमें पट्टी बाँधकर गया। मगर 'चाँद' का शिशु-अङ्क उठाते ही न जाने गन्दगी किस तरहसे घुस गई कि मेरा दिमाग एकदम सड़ गया। मारे बदबूके मुझसे वहाँ ठहरा न गया। साढ़े तीन सौ छींकें छींक चुका हूँ। फिर भी खोपड़ी साफ नहीं हुई, बल्कि अब तो जी और भी मचला रहा है। यह लीजिये कै भी आने लगी। ओ! औ!

[जनताराय और पाठकमलका प्रवेश]

जनता०—पाठक—अरे! यह क्या बाबू समाजराय? खैरियत तो है?

समाज०—वाह! जनाब जनताराय और पाठकमल! अब चले हैं खैरियत पूछने? देखते नहीं कि हमारी तबियत बिगड़ रही है।

पाठक०—अरे आपकी तबियत बिगड़ रही है?

जनता०—बेशक यह ताज्जुबकी बात है!

समाज०—क्यों?

पाठक०—शादीमें आप इतनी गालियाँ खाते हैं तब तो आपकी तबियत नहीं बिगड़ती।

जनता०—बेचुटकीवालोंने आपकी झोटइया तक उखाड़ ली, तब भी आप कुछ न समझे।

न घरका न घाटका

पाठक०—गुण्डे रोज़ ही आपके घरसे बहू-बेटियाँ निकाल ले जाते हैं और आपके मुँहसे एक भी शब्द नहीं निकलता!

जनता०—शब्द निकले कैसे? आप तो अपने जाति वहिष्कार करनेवाले काममें उन्नति करनेके लिये खुद ही ऐसे मौका ढूँढ़ा करते हैं।

समाज०—अजी यह बात नहीं है। यहाँ मारे दुर्गन्ध-के हाल बेहाल है।

पाठक०—यह कहिये। मगर आपको दुर्गन्धका पता कैसे चला? नाक तो अपनी आप पहिले ही कटा चुके हैं। देखिये किसी देशमें भला आपकी आदमियोंमें गिनती है?

समाज०—इससे क्या हुआ, अपने मुल्कमें तो हम मियाँ मिट्ठू हैं।

जनता०—मगर नकटा होकर रहनेसे तो चुल्लू भर पानीमें डूब मरना अच्छा है।

समाज०—नकटा कैसे?

जनता०—नाकपर पट्टी फिर क्यों बाँध रखी है?

समाज—इसकी वजह यह है कि आजकल साहित्य और पत्र-पत्रिकाओंमें गन्दगीकी ऐसी भरमार है कि बिना नाक दाबे उनका पढ़ना कठिन है।

पाठक०—फिर यों तो गन्दगी आपके पेटहीमें भरी

पड़ी है जिसके कारण रोज ही सुबह-शाम आपको टट्टी घरका द्वार खटखटाना पड़ता है। भला वहाँ भी आपकी तबियत बिगड़ती है और आप नाक बन्द करके मुँहसे साँस लेते हैं ?

जनता०—और 'मिरोड़' 'ऐंठन' 'सुद्दे' 'पेचिश' 'क़ब्ज' 'दस्त' 'बवासीर' इत्यादिके वर्णन तो चार भले-मानुसोंके बीचमें आप खूब खुलकर करते हैं। क्या यह गन्दे विषय नहीं हैं ?

समाज०—हाँ, है तो मगर हम इन बातोंको गन्दा ख्याल नहीं करते।

पाठक०—क्यों ?

समाज०—यह हमारी समझकी बलिहारी है।

जनता०—तो यह कहिये कि गन्दगी अपने विषयसे सरोकार नहीं रखती बल्कि आपकी समझमें विराजती है।

पाठक०—अगर यह बात है तो अश्लील विषयपर लेख पढ़ते वक्त आप अपनी अक्लपर पर्दा डाल दिया कीजिये। क्योंकि वही सारी आफतोंकी जड़ है। बस इसकी परछाईं न पड़े तो फिर कोई चीज पढ़नेमें आपको कोई अड़चन न हो और आपकी नाक भी बची रहे।

समाज०—वाह जनाब ! आपने खूब कहा। ऐसा होने

लगे तो हमारा नाम समाजराय क्यों होता ? हम भला कहीं अपनी नाककी परवाह करते हैं हम तो सिर्फ अपनी टेक रखना जानते हैं और बाबू पाठकमल और बाबू जनताराय, आपलोग स्वयं किसी बातको अच्छा या बुरा कहनेके लिये अधिकार नहीं रखते हैं। इसलिये आपकी भलाई इसीमें है कि आप हर मामलेमें हमारी बातको ईश्वर-वाक्यकी तरह सत्य मान लिया कीजिये।

जनता०—हाँ, साहब, आपका कहना अवश्य मानना चाहिये। आप बड़े प्रतापी महापुरुष हैं।

पाठक०—बेशक। जैसे रानियों में मेहतरानी ?

जनता०—अच्छा तो आप हम लोगोंसे क्या चाहते हैं ?

समाज०—यही कहिये कि 'चाँद' का 'शिशु-अङ्क' अश्लील है।

पाठक०—जब आप उसे अश्लील कहते हैं तो ऐसा ही होगा।

समाज०—होगा नहीं, बल्कि है।

जनता०—अच्छा तो 'है' सही। मगर इतना तो बता दीजिये कि क्यों 'है'। शायद कोई पूछ पड़े तो क्या जवाब देंगे ?

समाज०—वाह ! वाह ! सारी रामायण पढ़ गये मगर

यह पता न चला कि लङ्का कहांपर है। अजी साहब, उसमें रबड़के कन्टोपका वर्णन है, जिसे सुनकर स्त्रियां एकदम खराब हो जायेंगी।

जनता०—हां, तब तो "चांद" की खबर लेनी चाहिये।

समाज०—और अच्छी तरह। चलिये हमलोग उसे अभी राहुकी तरह ग्रस लें। पहिले हमारी तरह नाकमें पट्टी बाँध लीजिये और रास्ते भर खूब कै करते चलिये ताकि उसे अपनी अश्लीलताका अनर्थ तो दिखाई पड़े।

पाठक०—मगर मुझको तो माफ कीजिये। मुझे ताजी हवाकी बड़ी जरूरत है। नाक दबा देनेसे मेरा दम घुटने लगेगा। इसीलिये न मैं इधर हूँ और न उधर हूँ। इस कान-से सुनता हूँ और उस कानसे सब बातें निकाल देता हूँ। और फिर मैं ज्योंका त्यों। अच्छा तो राम! राम!

(जाता है)

जनता०—खैर, कोई हर्ज नहीं, उन्हें जाने दीजिये। हम तो हैं।

समाज०—अच्छा तो चटपट नाक बाँध लीजिये और जल्दी करते हुए चलिये।

(जनताराय रूमालसे अपनी नाक बाँधकर समाजके साथ औ! औ! करता हुआ जाता है।)

दूसरा दृश्य

चाँदका दफ्तर

चाँद—(अकेला) इस सत्यानाशी समाजरायने हिन्दुओंके हिन्दुस्तानको सब तरहसे चौपटकर देनेमें कोई कसर उठा नहीं रक्खी। देशकी आबरू ली, दौलत फूंकी, व्यापार छीना, विद्या, हुनर और कला-कौशल सब खाकमें मिला दिये। इतनेपर भी इसका मन नहीं भरा तो धर्म, मर्दानियत और स्त्री-अधिकारपर इसने उलटी झाड़ू फेरी। आखिर जब मुझसे इसके अत्याचार न देखे गये तो मैं इस देशके सबसे मुख्य परन्तु सबसे दुर्बल और अत्यन्त ही पीड़ित अंग अर्थात् अबलाओंकी रक्षाके लिये उदय हुआ। मगर जब मेरी ज्योति फैली तो देखता क्या हूं कि मर्द बेचारे कोल्हूके बैल हो रहे हैं। स्त्रियाँ कूएँकी मेढ़की बनी सड़ रही हैं। साहित्य लड़कोंका खिलौना हो रहा है। धर्मका चौपटाध्याय आरम्भ है और रस्म-रिवाज, देशकी उन्नति तो अलग रही, उसकी स्थितिहीका खून चूस रहे हैं। हम हर तरहसे इन अत्याचारोंको रोकनेकी

कोशिश कर रहे हैं, मगर यह समाजराय हमारे पग-पगपर कांटे बो रहा है। धर्मका सुधार बताता हूँ तो यह मुझे बेधर्मी कहता है, रस्मरिवाजोंके बन्धन ढीले करता हूँ तो भ्रष्टाचारी कहलाता हूँ, साहित्यमें मीठी बून्दोंका छिड़काव करता हूं तो मुझपर अश्लीलताका कलङ्क लगता है, स्त्रियोंको प्रसव रोगोंसे बचाता हूँ तो कुकर्मी कहा जाता हूँ। महिला अङ्क निकालकर स्त्रियोंके कर्तव्य बताये, विधवा-अङ्कमें विधवाओंका रोना सुनाया। इसी तरह शिशुअङ्कमें प्रसव सम्बन्धी बातें कहीं। मगर हमारे समाजराय जच्चे खानेमें बेधड़क घुस आये। वह भी अकेले नहीं बल्कि नासमझ बच्चोंका झुण्ड लेकर और लगे ऊधम मचाने। अब क्या करूँ? पीठ ठोकनेवाला कोई नहीं मगर थूकनेवाले हजारों? खैर, इस कलङ्कको भी सर चढ़ाता हूँ, क्योंकि चांद बिना कलङ्कके कब रह सकता है?

(द्वारपालका घबराए हुए आना)

द्वारपाल—सरकार! मुहारेपर बेदुम अउर बेसींगके दुई जनावर ठाढ़ हैं।

चांद—जानवर?

द्वारपाल—हाँ, जनवरे हो ही हैं। देखेमां तो आदमी अस है! मुल मूहेंसे अव अव करत हैं और चिथड़ा खात

है। थूथन मां अब्बो चिथड़ा लाग है। हो लेयो। ई दूनो तो हिया घुस आएं।

(समाजराय और जनतारायका अपनी-अपनी नाकोंपर पट्टी बांधे और 'ओं' 'ओं' करते हुए आना)

द्वारपाल—धुत ! धुत ! निकर ! हीयाँ नाहीं। देखत नाहीं कि फर्श बिछा है। सब खराब हो जाई।

चाँद—अल्लाह, बाबू समाजराय और बाबू जनताराय आप हैं ! आइये बिराजिये !

द्वारपाल—नाहीं सरकार ! इनका न परकाओ कमरा गन्दा होइ जाहिए। बाहर अस छीछालेदर करिन हैं कि का कही।

चाँद—अच्छा द्वारपाल, तुम बाहर जाओ।

द्वारपाल—जस मालिककी मर्जी। हम का करी !

(जाता है)

चाँद—अहो भाग्य ! आपके दर्शन हुए। मगर आप-लोगोंकी नाकने ऐसा कौनसा अपराध किया है जो ऐसे दण्डकी भागी हुई ?

समाज०—आपका 'शिशु-अङ्क' ओं—ओं—

जनता०—हाँ ठीक है, ओं—ओं—

समाज०—बहुत अश्लील है।

जनता०—ज़रूर अश्लील।

समाज०—स्त्रियोंके पढ़ने योग्य नहीं।

जनता०—नहीं है! हरगिज़ नहीं है!!

चांद—बाबू समाजराय, यह रोग तो आपका बहुत पुराना हो गया। ख़ैर फिर भी आइये, हमारा आपका इस मामलेमें समझौता हो जाय।

समाज०—अच्छा पञ्च हम होंगे।

चांद—न हम और न आप, बल्कि कोई तीसरा आदमी हो।

समाज०—मगर पाठकमल न होने पावें, उसपर अब मेरा भरोसा नहीं रहा।

जनता०—घबराये नहीं। हम पंच बनेंगे।

चांद—कोई हर्ज नहीं। आप ही फ़ैसला कीजिये। मगर नाकपरसे पट्टी खोलकर।

समाज०—अच्छा खोल डालिये। मगर हाँ औ-औ-

जनता०—(पट्टी खोलकर) अब तो मेरी पट्टी खुल गई। अकेले आप औ औ कीजिये।

चांद—अच्छा, आप अपनी शिकायतें कहिये।

समाज०—आप सुधारका प्रचार करते हैं या देशमें व्यभिचार फैलानेका उद्योग करते हैं?

चांद—दुनियामें या कहीं भी भला ऐसी कोई चीज है जिसमें गुणके साथ दोष न हों ? जहाँ स्वर्ग है वहीं नर्क भी, जहाँ दिन है वहाँ रात भी। इधर रोशनी है तो उधर साया। कहाँ तक देखियेगा। आगसे सैकड़ों ही जलकर मर गये। लाखों ही घर भस्म हो गये। फिर भी आगको बुरा कहकर कोई त्याग नहीं देता। बन्दूकसे नित्य ही दुर्घटना होती है तो भी इसे उपद्रवी जानकर हमारा देश उनकी लालसाको अपने हृदयसे नहीं निकालता। उसी तरह आप हमारे प्रचारके रुखड़े ही हिस्सेपर नजर न डालिये बल्कि उसका दूसरा अंग भी देखिये और हमारे भावको देखिये।

जनता०—भावसे क्या मतलब ?

चांद—इसको मास्टरकी छड़ीसे पूछिये या उस पितासे पूछिये जो अपने पुत्रको कनैठी दे रहा है। जिस तरह मास्टर और पिताकी नीयत बालकको दुःख पहुँचानेकी नहीं होती, बल्कि उसका आगामी जीवन सुखमय बनानेकी होती है उसी तरह हमारे प्रचारका भाव सुधारकी तरफ है। अगर इससे किसीपर बुरा प्रभाव पड़ भी सकता है तो उसीपर जिसकी पहिलेहीसे नीयत बुरी होगी। उसके कामोंके हम जिम्मेदार नहीं हो सकते।

समाज०—मगर प्रसव सम्बन्धी बातें अथवा प्रेमका

मीठा राग नवजवान लड़कियोंके लिये हानिकारक है।

चांद—मगर उसीके साथ इन बातोंकी अज्ञानता विवाहिता स्त्रियोंके जीवनकी जड़को दुर्बल कर रही है जो नासमझकी अवस्थामें हैं उनके लिये यह बेकार है और जो समझदार हैं उनके लिये इनका ज्ञान कभी-न-कभी अवश्य लाभकारी होगा।

समाज०—जब होगा तब होगा, मगर पढ़ते समय तो चित्त चंचल कर देगा।

चांद—जिन डालियोंको समयने मजबूत कर दिया है वह हवाके—झोंकेमें लाख हिलें डोलें मगर वह अपनी जड़को छोड़ नहीं सकतीं। उसी तरह जो पुरुष अथवा स्त्री समझदारीकी अवस्थापर पहुँच चुके हैं वे किताबें पढ़कर अच्छी बातें ग्रहण करनेके बदले नासमझोसे काम लें और भ्रष्ट होने लगें तो उनके पुरुषत्व और स्त्रीत्वपर धिक्कार है!

समाज०—बाबू जनताराय! याद रहे औ-औ—

जनता०—बोलिये मत। यहां तो ईमानकी हालत बड़ी गड़बड़ है?

समाज०—खैर! मगर यह गर्भ रोकनेका आपने उपाय क्यों बताया? इसीके डरके मारे तो विधवाओंकी आबरू बची हुई है और अविवाहित नवजवान लड़कियां अनुचित

लगावसे भागती हैं। अब आपके प्रचारसे तो देशमें दिन-दहाड़े कुकर्मी फैलेगी।

चांद—अब आये आप ठिकानेपर! हज़रत, बकरीकी मां कबतक खैर मनायेगी। ऊपरी रोक-टोक डर और धमकी से कहीं नेकचलनी बनी रहती है? असली नेकचलनी तो तभी स्थिर रह सकती है जब नीयतको भी साफ कीजिये। वरना, यह हृदयका छिपा हुआ मैल बनावटी धोखेकी टट्टीको मौका पाते ही हटा देता है। तभी महाशयजी, आप अपनी स्त्रीको एक मामूली प्रेम-पुस्तक भी पढ़नेके लिये देनेसे घबड़ाते हैं। आपका एतबार तो उसपर है नहीं, फिर भी उसके सतीत्वपर आप डींग मारते हैं। यदि आपको यह विश्वास होता कि हमारे यहाँकी स्त्रियों-का सतीत्व केवल ऊपरी पर्दा, डर या पहरेपर निर्भर नहीं है, बल्कि उनकी भीतरी नीयत और उनके कर्त्तव्योंपर अटल है तो आज आप मुझसे ऐसा भोंडा सवाल न करते। आप स्त्रियोंके आँख कानपर पर्दा डालकर जबतक उन्हें मूर्खा बनाये रहेंगे, तबतक आपको ऐसे ही उनकी रखवारी करते दिन कटेगा।

जनता०—तो क्या स्त्रियोंको पर्देमें न रखना चाहिये?

चांद—जब पुरुषोंका एतबार स्त्रियोंपर जम जायगा,
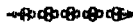
तो पर्देका फिर सवाल ही नहीं होगा। फिर चाहे वह पर्देमें रहें तो वाह! वाह! न रहें तो वाह! वाह! तब लन्दन दरबार रहस्य पढ़ें तो क्या, कोकशास्त्र पढ़े' तो क्या! बाबू समाजरायको इतनी बेचैनी न होगी।

जनता०—अच्छा तो वह एतबार करने योग्य कब होंगी?

चांद—जब वह अपने कर्त्तव्यको भलीभाँति समझने लगेंगी।

जनता०—आखिर कर्त्तव्योंको वे किस तरह समझ सकती हैं?

चांद—ज्ञान द्वारा!

जनता०—ज्ञान कैसे पैदा हो?

चांद—हर बातोंका पूरा ब्योरा बतलानेसे, अच्छाई और बुराई दोनों साफ़-साफ़ दिखलानेसे, जिस तरह मैं कर रहा हूँ।

समाज०—बस, बस, जनाब ठहरिये। अब आप भी आ गये मेरे पंजेमें। अनुचित मेलहीमें गर्भ रोके जाते हैं, उचित सम्बन्धसे नहीं।

चांद—इस बातको मालीसे जाकर समझिये जो आपके क़लमी दरख़्त लगाता है और उसके प्रथम बौरको तोड़कर फेंक देता है। उस होशियार किसानसे पूछिये जो खेत

ढोनेके बाद उसके घनेपनको हलका करता है। उस आदमीसे पूछिये जो लड़कपनमें पिता बन जाता है और चार पैसे कमाने लायक़ होनेके पहिले ही अपनी लड़कीकी शादीके लिये कर्मोंपर हाथ धरके रोता है। उस मातासे पूछिये, जो जवानीके पहिले ही माता होकर अपनी जवानीमें बुढ़ापा बुला लेती है। भला वह फिर कभी हृष्ट-पुष्ट सन्तान पैदा कर सकती है ?

जनता०—यह सब गड़बड़-सड़बड़ हमारी समझमें नहीं आता।

समाज०—बहुत ठीक! यह सब गड़बड़-सड़बड़ है। औ—औ—

चांद—अच्छा तो एक मेरी बातका भी उत्तर दीजिये।

समाज०—कहिये।

चांद—चांद 'पुरुष-पत्र' है या 'स्त्री-पत्र'

जनता०—स्त्री-पत्र।

चांद—अच्छा, स्त्रियोंमें इसका 'शिशु-अङ्क किस तरह की पाठिकाओंको निमन्त्रण देता है ?

जनता०—उस बच्चे देनेवालियोंको।

चांद—शिशुकी उत्पत्ति कहांसे होती है ?

जनता०—गर्भसे। यही तो इस वृक्षकी जड़ है।

चाँद—वृक्षकी भली बुरी बातें जाननेके लिये हम उसकी जड़का ख्याल छोड़ सकते हैं कि नहीं ?

जनता०—नहीं।

चाँद—अच्छा, गर्भ-सम्बन्धी बातें शिशु-अङ्कमें न होंगी तो क्या हिसाब, अलजब्रा और रामायणमें होंगी ?

जनता०—नहीं 'शिशु-अङ्क' में होंगी ?

चाँद—अब बताइये गर्भ किसके पेटमें रहता है ?

जनता०—स्त्रियोंके।

चाँद—अच्छा तो गर्भ-सम्बन्धी बातें बच्चे देनेवाली स्त्रियोंसे कहनेमें बुराई है ?

जनता०—बिलकुल नहीं।

चाँद—तो अब आपही देखिये कि यह हजरत न तो स्त्री हैं और न बच्चे देते है और न गर्भ धारण करते हैं तो फिर इनको हमारे शिशु-अङ्कको बुरा-भला कहनेका क्या अधिकार है ?

जनता०—कुछ भी नहीं। यह बात मेरी समझमें आ गई।

समाज०—अरे ! यह क्या ? जनताराय तुम्हारी अक्ल-पर पत्थर पड़ गये।

जनता०—घबड़ाइये मत। मैं आपहीकी तरफ हूँ।

मगर पहिले गर्भ धारण करना सीख लीजिये और तब लहँगा-ओढ़नी पहनकर आइये।

चाँद—अच्छा, आइये, चलकर आप-लोग कुछ जल-पान कर लीजिये।

समाज०—जी नहीं, मैं जलपान करके भी यह फैसला नहीं माननेका, मेरी बात पक्की। औं—औं—

(जाता है)

चाँद—(जनता से) अच्छा तो आप ही मुझपर कृपा कीजिये।

(दोनोंका दूसरी तरफ प्रस्थान)

तीसरा दृश्य

सड़क

(पण्डित अधिकारीनाथ म्यूनिसिपल मेम्बर और सफाईराय सफाईके दारोगाका आना ।)

अधिकारी०—क्यों बाबू सफाईराय ! ऐसी ही आप सफाईकी दरोगागिरी करते हैं ? देखते हैं आप ! सड़कपर कितनी गन्दगी है ! अगर हम म्यूनिसिपैलिटीके मेम्बरान-घरसे न निकला करें, तो शहर एक ही दिनमें बम्पुलिस हो जाय ।

सफाई०—हुजूर ! भंगियोंके मारे नाकमें दम है । वह बड़े सुस्त हो गये हैं । हमारी बात सुनते ही नहीं !

अधिकारी०—बुलाओ, भंगियोंके चौधरीको ।

सफाई०—अरदली ! ओ अरदली ! अबे तू पीछे क्यों अटक गया ?

(अरदलीका आना)

अरदली—हुजूर, हाकिम लोगसे तनी दूरे रहेके चाही ।

सफाई०—जाओ, भगुआ मेहतरको बुला लाओ ।

(अरदलीका प्रस्थान)

अधिकारी०—देखिये। काम-काजमें कभी मुरौवत न किया कीजिये। इन भंगियोंपर ५)-५) रुपये जुरमाना ठोंक दीजिये। अभी सबकी अक्ल ठिकाने हो जाय।

(अरदलीका आना)

अरदली—हुजूर, भगुआ पूजा करत हौ।

अधिकारी०—अयं! भंगी होकर पूजा करत हौ! मारा नहीं?

अरदली—कसस मारित? हम छुई जाइत की नाहीं?

सफ़ाई०—हुजूर, मैं चलकर अभी उसे ढेलेसे मारता हूँ।

अरदली—अउर हम त ढेलेसे ओकर सिर तोड़ डालब, अउर पूजा करे क सब सेखी भुला देब।

(सबका प्रस्थान)

चौथा दृश्य

समाजरायका घर

(समाजरायकी स्त्री भारती और उनकी सहेली शिक्षा ।)

भारती—बहिन शिक्षा, तुमने मुझे चांदका यह शिशु-अङ्क देकर मुझपर बड़ी कृपा की। क्या कहूँ बहिन, एक तो हम लोग अबला थी ही उसपर हमारे हत्यारे और स्वार्थी मर्दोंने हमारे आँख-कानपर पर्दा डालकर एकदम निकम्मी बना दिया। न तो वह स्वयं हमें कोई बात सिखाते और न हमें कुछ सीखने ही देते हैं। अगर मैं सन्तान उत्पत्तिके सम्बन्धमें कुछ भी जानती होती तो आज मैं एक बच्चेका मुख देखनेके लिये इतनी न तरसती और न इस तरह साधु-फकीरोंके आशीर्वादके लिये मारी मारी फिरती। उन मक्कारोंके यहाँ जैसा आशीर्वाद मिलता है वह उन औरतोंहीके दिल जानते होंगे जिनका उनसे पाला पड़ चुका है।

शिक्षा—खैर बहिन भारती! 'चांद' हम लोगोंकी सहायता कर रहा है। हर तरहके ज्ञान देकर हमको आदमी बना रहा है। देखो इस 'शिशु-अंक' में गर्भ-सम्बन्धी भी बातें दे रखी हैं।

भारती—यह बहुत अच्छा किया, क्योंकि मैं इसकी अज्ञानताका अनर्थ भोग रही हूं। क्योंकि १२ बरसकी उमर में पतिकी संगत हुई। मैं दुनियाकी बातें कुछ भी नहीं जानती थी, पुरुपके पास मैं केवल मिट्टीका खिलौना थी। जैसा चाहते थे मुझसे व्यवहार करते थे। यहाँतक कि हमारी स्वाभाविक लज्जा भी उनके सामने चुल्लूभर पानीमें डूब मरती थी। वह शुरू नवजवानीकी तूफानमें अन्धे हो रहे थे। वह ब्रह्मचर्य्य इत्यादिके ग्रन्थ और व्याख्यान बहुत पढ़ चुके थे। मगर स्त्रीके कमरेमें आते ही अपना ज्ञान बाहर ही रख देते थे। यह भी नहीं समझते थे कि रजस्वला और गर्भावस्था किस चिड़ियाका नाम है। नतीजा यह हुआ १३ वर्षकी उमरमें गर्भपात हुआ और सदैवके लिये मैं स्वास्थ्यसे हाथ धो बैठी। प्रकृतिने अपनी दुर्दशाका उनसे बदला लिया और वे रोगी हुए। उन्होंने उस रोगको मुझे भी समर्पण कर दिया। वे तो मर खपकर किसी तरह अच्छे हो गये, मगर मेरा रोग दिनोंदिन जड़ पकड़ता गया। मैं शर्मके मारे किसीसे कह भी न सकी और अब गर्भवती होनेको भी तरसती हूँ। बधाई है 'चांद' को जो इन बातोंका ज्ञान देकर हमें अकाल मृत्युसे तो बचा रहा है। खैर, मैं तो हो चाती, मगर मेरी छोटी बहिनें हमारी तरह इतना अनर्थ न सहेंगी।

शिक्षा—हाँ, जब हमारे आँख-कान दोनों खुल जायंगे तो ज्ञानको हमतक पहुँचनेमें कोई बाधा न होगी। और अगर हम अच्छी हैं तो ज्ञान भी हमारे साथ अच्छाई करेगा। अच्छा बहिन, फिर मिलूँगी। अब आज्ञा दो।

भारती—देखो बहिन शिक्षा, हमें भूल न जाना। तुम्हारी डोली तो हमारी फुलवारीमें कहार लिये खड़े हैं। फुलवारीका रास्ता किधर है।

(शिशु-अङ्क मेजपर रखकर भारती शिक्षाके साथ जाती है।)

(दूसरी तरफसे समाजरायका आना।)

समाज०—अजब अन्धेर है! "चांद" ने जनतारायको भी मूड़ लिया। खैर, बाहर हमारा कुछ बस न चला तो न सही, मगर भीतर तो हमारा रङ्ग जमा हुआ है। (शिशु-अङ्क देखकर) अरे! यह शिशु-अङ्क यहाँ भी पहुंच गया? अरे गजब!

(पत्रिका उठाकर उसमेंसे पृष्ठ फाड़ता है)

(भारतीका आना)

भारती—हाय! हाय! यह क्या करते हो?

समाज०—जो करना चाहिये वही करता हूँ।

भारती—आखिर मेरे शिशु-अङ्कको क्यों फाड़ दिया?

समाज०—क्योंकि यह अश्लील है।

भारती—अश्लील तो घरमें टट्टी घर भी है, उसे क्यों नहीं तोड़वा देते ? ईश्वरने तुममें भी अश्लील अङ्ग बनाये है, उनमें क्यों नहीं आग लगा देते ?

समाज०—अजीब मूर्खा हो ! यह तुम्हारे पढ़ने योग्य नहीं है।

भारती—हमारे पढ़ने योग्य है या नहीं; यह जानने-वाली मैं हूँ या तुम हो ?

समाज०—अगर इसके पढ़नेसे तुम बिगड़ जाओगी।

भारती—वाह रे कच्चे दिलवाले हिन्दुस्तानके मर्द ! जैसे तुम हो वैसे ही तुम हम औरतोंको भी समझते हो। अगर हमें बिगड़ना ही है तो मर्दोंकी लाख होशियारीपर भी हम बिगड़ सकती हैं। तुम्हारी सारी चालाकी हमारे आगे धरी रह जायगी। और अगर हम नेक हैं तो किताबें पढ़कर नहीं बिगड़ सकतीं। हम लोग मर्दोंकी तरह जगह-जगह फिसलनेवाली छिछोरी तबियत नहीं रखती। तुम्हें हमारी तरफ ऐसा ख्याल रखनेमें शर्म नहीं मालूम होती ? छिः ! इसीलिये तो औरतें मर्दोंको उल्लू बनाती हैं। क्योंकि वह हमें चोर समझते ही हैं तो हम फिर क्यों न चोरी करें ? यह तुम्हारी शक्की निगाह हमें बिगाड़ती है, पुस्तककी बात नहीं।

समाज०—मगर इसकी बातें तुम्हारे हृदयमें कुवासना उत्पन्न करके तुम्हारा चित्त डगमगा देंगी।

भारती—जानते हो मैं भारती हूँ। मेरा चित्त डगमाने-वाला मुआ कौन हो सकता है? मेरे हृदयमें कुवासना भड़कती है और चित्त डाँवाडोल होता है तो बस, तुम्हींको देखकर। इसलिये तुम मेरी निगाहके सामने मत आया करो।

समाज०—अररर! यह नतीजा किस मन्तक़से निकल आया।

भारती—जिस ख्यालसे तुमने मेरी किताब फाड़ी है उसी ख्यालसे मैं कहती हूँ कि तुम हट जाओ और अभी हट जाओ।

(जाता है)

पांचवां दृश्य

सड़क

(चार भंगियोंका आकर झाड़ू देना ।)

पहिला भंगी—जान पड़ता है हमारा राम आंधर हैं ।

दूसरा—फूरे हैं जो आँधर न होते तो हमार अस गत होते । न पूजा करे पाई, न कुआँमें पानी भर सकी, जौन काम ससुर कौनो न करे तौन तो हम करी और ओपरसे हर जगह दुतकारा जाई !

तीसरा—का कहीं कुछ कहत नाहीं बनत है । जेकरे पेटमें हर घड़ी मैला सड़े ऊ तो पाक साफ और हम जो उनकेर मैला साफ करी तौन जहाँ जाओ तहां घुत ! घुत ।

चौथा—हां हो हमार राम दोषी हैं । जब हमका ऊहे बनाइन हैं तो हम काहे न उनकेर पूजा करे पाई । का हम आदमी न होई ? हमरे लिये लोक-परलोक नाहीं है ?

पहिला—होत तो हम गाय-भैंससे भी खराब माना जाइत ?

दूसरा—आओ, गाय-भैंस तो बहुत बड़ी चीज आय। अरे कूकुर तो हिन्दू छूवत हैं और हमका नाहीं छूवत हैं!

तीसरा—हमरे मनमें तो ई बसत है कि जहाँ तनिको कदर नाहीं हुवाँ रहेब ठीक नाहीं है।

चौथा—राम दे! यू पाँच पसेरीके बात नीक कहेयो।

पहिला—हमका तो पादरी साहबकेर राम बहुत भला-मानुस जान पड़त हैं।

सब—हाँ भाई हाँ।

पहिला—तो उन्हींके पास चलीं। पसुसे आदमी तो गिना जाब।

सब—आव चली।

पहिला—अच्छा एका बोहार लेई।

दूसरा—अब झाड़ू पझाका मारो गोली। हम सभे जब न रहब तो सभे आपन-आपन मैला उठइहें। तब्बै इनकेर सेखी भुलाई।

तीसरा—मुला भाई, सरकारी नौकर हन। बिन एवजी-दारके सड़केपर झाड़ू छोड़के कसस चला जाई?

(समाजरायका चुपके-चुपके आना)

चौथा—ईहू ठीक है। मुला कौन ससुर सरकिया भर

न घरका न घाटका

झाड़ू वाला—अच्छा, तो ला ई झाड़ू और पंखा, अब हमार काम तू करो। हम जाइत हैं गिरजा पर। हुआँसे जब कोट पतलून पहनके आइब तो हमका गुडमानी करके हाथ मिलायो। (पृष्ठ १७५)